प्रसंग

सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो' आन्दोलनके दिनोंमें जब हम सबके सब जेलमें भेजे गये तो वहां भी हमें अेक जगह नहीं रखा गया। मैंने अुन दिनों कुछ मिलाकर छह जेलें देखीं। विलायती सरकारने सोचा कि प्रतिष्ठित लोगोंको अुन्हींके प्रान्तमें रखना खतरनाक है। अिसलिअे मध्यप्रान्तके प्रमुख व्यक्तियोंको अुसने सुदूर मद्रास प्रान्तकी वेल्लोर जेलमें रख दिया। वहीं मेरा मध्यप्रान्तके कांग्रेसी नेताओंसे परिचय हुआ।

सरकारको जब कुछ होश आया और परिस्थिति काबूमें आ गयी तब हम लोगोंको वेल्लोरसे हटाकर मध्यप्रान्तके सिवनी जेलमें भेजा गया। वहां केवल वाचन और चर्चामें हमारे दिन अच्छी तरह कटते थे। भोजनके बाद जबलपुरवाले ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी चौहान अमरावतीके डॉ. शिवाजीराव पटवर्धन मैं और दूसरे कुछ सज्जन अेक बड़े कमरेमें साथ बैठकर अिधर-अुधरकी बातें करते रहते थे। बरामदेकी अपेक्षा वहां गरमी कुछ कम रहती थी।

यह स्वाभाविक ही था कि लोग मुझसे पूज्य गांधीजीके बारेमें पूछते। मैं भी अपनी फुरसतमें आश्रम-जीवनका कोअी न कोअी किस्सा कह सुनाता। अेक दिन ठाकुर लक्ष्मणसिंहजीने कहा — आपके पास बापूजीके बारेम जब अितने किस्से हैं, तो अुन्हें लिखकर क्यों नहीं रखते? विनोद करते हुअे मैंने जवाब दिया — मेरी हालत भी व्यासजीके जैसी है। अुनके दिमागमें महाभारतका सारा अितिहास भरा पड़ा था लेकिन अुसे लिपिबद्ध कैसे किया जाय यही सवाल अुनके सामने था। अुसे लिखनेवाला अिस दुनियामें कोअी था ही नहीं ('पर न लेखकः कश्चित् अेतस्य भुवि विद्यते')। जब गणेशजी जैसे चार हाथवाले बुद्धिमान लेखक अुन्हें मिले तब कहीं महाभारत

दुनियामें प्रगट हुआ। सत्यमूर्तिजी हँसकर बोले — ठीक है। मैं आपका गणेश बननेके लिये तैयार हूँ। मैंने कहा — दिनरात लिखनेकी बात नहीं है। भोजनके बादका आरामका समय ही लिखने देना है। अेक-दो संस्मरण लिखे कि अुस दिनका काम पूरा हुआ। अैसा करनेसे दूसरे कार्यक्रमोंमें बाधा नहीं आयेगी और रोज कुछ न कुछ लिखा भी जायगा। अगर रोज किसी कामके लिये सारा समय दिया जाय तो बाकीके सब काम रह जायेंगे और मुझे पश्चात्तापमें अिस कामको भी छोड़ना पड़ेगा। अिस पर रोज थोड़ा-थोड़ा लिखनेकी बात तय हुअी और धीरे धीरे किस्सोंकी संख्या बढ़ने लगी। लिखी हुअी चीज अन्य साथियोंने भी पढ़ी। अुन्होंने प्रोत्साहन दिया कि लिखवाते जाअिये।

ये किस्से किसी खास अुद्देश्यको ध्यानमें रखकर नहीं लिखाये गये हैं। कोअी चर्चा छिड़ने पर जो प्रसंग याद आया अुसीको तुरन्त अुस दिन दोपहरमें लिखवा दिया।

अब राजबन्दियोंके छूटनेके दिन आ गये। सरकारके बड़े अफसर कभी-कभी जेल देखने आते रहते थे। अेक दिन अेकने खानगी तौर पर कहा — और सब तो छूट जायेंगे लेकिन काका और विनोबा जल्दी छूटनेवाले नहीं हैं। अिनमें से विनोबा तो शायद छूट भी जाय; अुनके खिलाफ हमारे पास कोअी सबूत नहीं है। लेकिन काकासाहबके व्याख्यानोंने बड़ा तूफान मचा दिया था। अुनके छूटनेकी आशा तनिक भी नहीं है।

मैंने आरामसे अपने किस्से लिखवाना जारी रखा। जब अुनकी संख्या काफी हो गयी तो विचार आया कि कम-से-कम अेक सौ आठ किस्से तो होने ही चाहिये। जब यह संख्या सौके नजदीक पहुँचने लगी तो फिरसे दो बार लिखवाना शुरू किया। अिस तरह सौके बाद अेक किस्सा और बचा था कि विनोबाजी और मैं दोनों अेक साथ छूट गये। अिसके बाद तो सत्यमूर्तिजी आदि सब लोग क्रमशः छूटने लगे।

श्री लक्ष्मणसिंहजी बाहर आनेके बाद मेरी भाषा सुधारकर ये किस्से प्रकाशित करनेवाले थे। लेकिन जेलमें किये हुअे संकल्प बाहर आने पर टिकते नहीं। बाहर आते ही बाहरी दुनियाके अनेकानेक काम सिर पर सवार हो जाते हैं। न लक्ष्मणसिंहजी अिनकी भाषा सुधार सके न मैं। मेरी अिच्छा थी कि ये सारे संस्मरण जहां तक हो सके कालक्रमके अनुसार रख दूं। लेकिन यह भी मुझसे नहीं हो सका। बहुत दिन तक ये हस्तलिखित रूपमें जैसेके तैसे पड़े रहे। आखिर मैंने सोचा कि जैसे हैं वैसे अेक दफा छपवा दूं। समय मिलने पर दूसरी आवृत्तिमें सब तरहके सुधार हो सकेंगे।

जब ये संस्मरण लिखे गये तब पू० बापू जीवित थे। अुनका संकल्प और राष्ट्रकी प्रार्थना थी कि वे दीर्घकाल तक जियें। मैं जानता था कि मुझे ये किस्से संयमके साथ लिखने चाहिये। अगर पू० बापूजीके देखनेमें आ जायें और कहीं अन्धभक्तिकी बू अिनमें विशेष दीख पड़े तो अुन्हें अच्छा नहीं लगेगा। अिधर तो यह हस्तलिखित प्रति मैंने 'नवजीवन' को सौंपी और अुधर पू० बापूजी चल बसे। अेक बार सोचा भी कि अब अिनमें कुछ परिवर्तन कर दूं लेकिन फिर मनमें यही निश्चय किया कि जैसे लिखे गये थे वैसे ही रखना अच्छा है।

अिन झांकियोंमें पूज्य गांधीजीके संपूर्ण व्यक्तित्वका दर्शन पानेकी अपेक्षा पाठक न रखें। किन्तु अुनके समृद्ध और तेजस्वी जीवनके अनेक पहलुओंका दर्शन अुन्हें यहां अवश्य मिलेगा। गांधीजीकी विभूतिकी पूरी-पूरी भव्यता अिनमें प्रतिबिंबित नहीं हुअी है। देखनेवाला अपनी शक्तिके अनुसार ही देख सकता है। तिस पर भी प्रसंगवश जो याद आया वही यहां लिखा दिया गया है। यदि गांधीजीके चरित्रकी पूरी छवि खींचने बैठता तो दूसरे ढंगसे लिखवाता। यहां वैसा संकल्प था ही नहीं। तो भी बापूका संपूर्ण चरित्र लिखनेवालों या समझनेकी अिच्छा रखनेवालोंको अिन झांकियोंमें कुछ न कुछ अुपयोगी मसाला जरूर मिलेगा। अिन झांकियोंका महत्त्व पू० बापूकी महत्ताके कारण

है। कुछ सामिग्री औरोंसे सुनी हुआी बातों पर आधार रखती है। लेकिन मेरा विश्वास है कि वे भी सब प्रामाणिक हैं।

नजदीकके या दूरके जिन जिन लोगोंके पास असे संस्मरण हों, अुन्हें चाहिये कि वे अपनी यह दौलत दुनियाके सामने धर दें। गांधी-युगकी यह अनमोल विरासत मानव-जातिको मिलनी ही चाहिये।

नअी दिल्ली काका कालेलकर
गांधी जयन्ती १९४८

अिन आख्यिकाओंके अनुवाद मराठी गुजराती बंगला अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओंमें हुअे हैं यह खुशीकी बात है।

पुनर्मुद्रणके बाद दूसरी आवृत्ति छपते समय संकल्पके अनुसार सब सम्मरण जहां तक हो सका कालक्रमके अनुसार रख दिये गये हैं।

अिसमें मेरे मित्र श्री जेठालाल गांधीने काफी मेहनत अुठाअी है। मेरे अनेक गुजराती प्रकाशनोंमें अुनकी स्नेहपूर्ण मदद होती ही है। अन्हें धन्यवाद क्या दूं?

नअी दिल्ली काका कालेलकर
गांधी जयन्ती २–१०–५५

अनुक्रमणिका

बापूकी झांकियां

१

भगवानका भरोसा

दक्षिण अफ्रीकामें पठानोंने बापू पर हमला किया और यह समझकर कि बापू मर गये अुन्हें छोड़कर चले गये। होशमें आते ही बापूने पहली बात यह कही कि जिन्होंने मुझ पर घातक हमला किया अुन्हें सजा नहीं होनी चाहिये। मैं अपनी ओरसे अुन्हें क्षमा करता हूं।

अुस दिनसे बापूके परम मित्र मि. कैलनबैक बापूको कहीं अकेले नहीं जाने देते थे। कैलनबैक अूंचे-पूरे और गठे हुअे शरीरके थे। कुश्ती बॉक्सिंग वगैरा सब कुछ अच्छी तरह जानते थे। जहां बापू जाते वहां वे अंगरक्षककी तरह साथ ही रहते थे।

अेक दिन बापू किसी सभामें गये। कैलनबैकको पता चला कि बापू पर वहां गोरोंका हमला होनेवाला है। अुन्होंने अपने पेंटकी जेबमें रिवाल्वर रख लिया। जब बापूको पता चला कि वे रिवाल्वर लेकर चल रहे हैं, तो वे बहुत ही गुस्सा हुअे और कहने लगे — फेंक दो रिवाल्वर। तुम्हारा विश्वास भगवान पर है कि रिवाल्वर पर? मेरी रक्षाके लिअे मेरे साथ आनेकी जरूरत ही क्या है? क्या मैं भगवानके हाथमें सुरक्षित नहीं हूं? जब तक अुसे मुझसे काम लेना है, वह अवश्य मेरी रक्षा करेगा।

अिसके बादकी अेक दूसरी घटना है। गोरोंकी सभा थी। कैलनबैक वहां गये थे। सभाके किनारे पर खड़े थे। वहां किसी वक्ता या श्रोताके साथ चर्चामें अुनका झगड़ा हो गया। अंग्रेज तो होते ही हैं। ताकत हो या न हो बहादुरी जरूर दिखानेंगे। अुस अंग्रेजने कैलनबैकको ललकारा — Come along, let us

---

यह सारा किस्सा बापूकी आत्मकथा में आ गया है।

fight it out. कैलनबॅकने ठण्डी आवाजसे जवाब दिया — But I am not going to fight you. सारा समाज स्तम्भित होकर देखता ही रहा। कैलनबॅकका शरीर और अुनका कुश्तीका कौशल सब जानते थे। कोअी अुन्हें कायर नहीं कह सकता था। और ललकारे जाने पर तो कोअी कायर भी अिस तरहसे अिनकार नहीं कर सकता! सब अचम्भेमें पड़ गये।

परन्तु कैलनबॅक अब बहादुरकी अहिंसाका विकास अपने भीतर कर चुके थे।

यह किस्सा मैंने श्री मगनलालभाअी गांधीसे शान्तिनिकेतनमें सुना था।

२

मातृभाषाका आग्रह

सन् १९१५ की बात है। जब दक्षिण अफ्रीकाका कार्य पूरा करके महात्माजी विलायत गये और वहांसे हिन्दुस्तान लौटे तब दक्षिण अफ्रीकाके अिस विजयी बैरिस्टरकी मुलाकात लेनेके लिअे अेक पारसी पत्र-प्रतिनिधि बम्बअीके बन्दर पर ही जाकर अुन्हें मिला। मुलाकात लेनेवालोंमें सबसे प्रथम रहनेकी अुसकी ख्वाहिश थी।

अुसने जो सवाल पूछा अुसका जवाब देनेके पहले बापूने कहा भाअी तुम हिन्दुस्तानी हो मैं भी हिन्दुस्तानी हूं। तुम्हारी मातृभाषा गुजराती है मेरी भी वही है। तब फिर मुझे अंग्रेजीमें सवाल क्यों पूछते हो। क्या तुम यह मानते हो कि मैं दक्षिण अफ्रीकामें रह आया हूं अिसलिअे अपनी मातृभाषा भूल गया हूं या कि मेरे जैसे बैरिस्टरके साथ अंग्रेजीमें ही बोलनेमें शान है?

मैं नहीं जानता पत्र-प्रतिनिधि शर्मिन्दा हुआ या नहीं किन्तु आश्चर्यचकित तो जरूर हुआ। अुसने अपनी मुलाकातके वर्णनमें बापूके अिस जवाबको ही प्रधान स्थान दिया था।

अुसने क्या क्या सवाल पूछे और बापूने अुनके क्या जवाब दिये सो तो मैं भूल गया। किन्तु सब लोगोंको यह जानकर संतोष हुआ कि हमारे देशके नेताओंमें कम-से-कम अेक नेता तो अैसा है, जो मातृभाषामें बोलनेकी स्वाभाविकताका महत्त्व जानता है।

२

माताका-सा स्नेह

बापू जब विलायतसे हिन्दुस्तान लौटे तब मैं शान्तिनिकेतनमें था। अिस संस्थाका अच्छा परिचय पानेके लिये अुसमें कुछ महीने रहकर और शिक्षकका काम करके अुसके अन्दरकी वायुमण्डलको मुझे समझना था। रविबाबूने बड़ी अुदारतासे मुझे यह मौका दिया था।

वहीं पर बापूके फिनिक्स आश्रमके लोग भी मेहमानके तौर पर रहते थे। बापू जब दक्षिण अफ्रीकासे विलायत गये तब अुन्होंने अपने आश्रमवासियोंको मि॰ अेण्ड्रूज़के पास भेज दिया था। मि॰ अेण्ड्रूज़ने अुन्हें कुछ दिन हरिद्वारमें महात्मा मुंशीरामके गुरुकुलमें रखा और बादमें शान्तिनिकेतनमें।

अखबार पढ़नेके कारण मैं दक्षिण अफ्रीकाके अपने लोगोंका ताजा अितिहास कुछ जानता ही था। अुसमें अेक स्वदेशी भाओ श्री कोतवालके द्वारा गांधीजीके अफ्रीकाके फिनिक्स आश्रमके बारेमें भी मैंने सुना था। सम्भव है अुन्हींके द्वारा आश्रमवासियोंने भी मेरा नाम सुना हो। शान्तिनिकेतनमें आते ही मैं अिस फिनिक्स पार्टीका करीब-करीब अेक अंग ही बन गया। सुबह और शामकी प्रार्थना अुन्हींके साथ करने लगा। शामका खाना भी वहीं पर खाने लगा। ये आश्रमवासी सुबह अुठकर अेक घण्टा मेहनत-मजदूरी करते थे। शान्तिनिकेतनवालोंने अिन्हें अेक काम और दिया था। शान्तिनिकेतनकी भूमिमें काम अेक तलैया थी और पास ही अेक टीला था। अिस टीलेको खोदकर तलैयाका पाटना [illegible] यह काम था। हम दस-बीस आदमी यदि रोज अेक

अच्छा काम करते तो अुसे पूरा करनेमें न जाने कितना समय लग जाता। लेकिन हम तो निष्काम कर्म करना था। रोज बड़े अुत्साहसे हम अपना काम करते थे। मि. पियर्सन भी हमारे साथ आते थे।

जब बापू शान्तिनिकेतन आये तो रातको देर तक हम अुनसे बात करते रहे। सुबह अुठकर प्रार्थनाके बाद हम मजदूरी करने चले गये। वहांसे लौटकर आये तो क्या देखा! हम लोगोंका नाश्ता — फल आदि सब काटकर — अलग-अलग थालियोंमें तैयार रखा है। हम सब तो काम पर गये थे फिर माता-जैसी यह सब मेहनत किसने की? मैंने बापूसे पूछा (अुन दिनों मैं अुनसे अंग्रेजीमें ही बोलता था।) — यह सब किसने किया? वे बोले — मैंने किया है। मैंने संकोचसे कहा — आपने क्यों किया? मुझे यह अच्छा नहीं लगता कि आप सब तैयारी करें और हम आरामसे खायें। अुसमें हर्ज क्या है? वे बोले। मैंने कहा — आप जैसोंकी सेवा लेनेकी हममें योग्यता तो होनी चाहिये।

अिस पर बापूने जो जवाब दिया अुसके लिये मैं तैयार नहीं था। मेरा वाक्य we must deserve it. (हमारी योग्यता तो होनी चाहिये।) सुनते ही बिलकुल स्वाभाविकतासे अुन्होंने कहा which is a fact. (बात बिलकुल सही है।) मैं अुनकी ओर देखता ही रहा। फिर हंसते-हंसते अुन्होंने कहा — तुम लोग यहां काम पर गये थे और नाश्ता करके फिर वहीं काम करने जाओगे। मेरे पास खाली समय था। अिसलिये मैंने तुम्हारा समय बचाया। अेक अच्छा काम करके अैसा नाश्ता पानेकी योग्यता तो तुमने हासिल कर ही ली है न?

जब मैंने we must deserve it. कहा था तब मेरा मतलब यह था कि अितने बड़े नेता और सत्पुरुषकी सेवा लेनेकी योग्यता ना हममें हो। लेकिन मेरी यह भावना अुनके दिमाग तक पहुंची ही नहीं। अुनके मनमें तो सब लोग अेकसे थे। मैंने अेक ओर सेवा की अिसलिये मैं अुनकी सेवा लेनेका हकदार बन गया!

४

स्वावलम्बनके तत्त्व पर जोर

सन् १९१४ के अुत्तरार्धकी बात है। महायुद्ध छिड़ गया था। और गांधीजी हिन्दुस्तान नहीं लौटे थे।

राष्ट्रीय शिक्षाको मैंने अपना जीवनकार्य बनाया था। अिसलिअे कवीन्द्र रविबाबूके शान्तिनिकेतनका कार्य देखनेकी अिच्छा थी। वहां कुछ दिन रहनेकी अिजाजत मैंने हासिल की थी। जब मैं शान्तिनिकेतन पहुंचा तब वहांके आम रसोअीघरमें गेहूंकी रोटी नहीं बनती थी। सब लोग भात ही खाते थे। वहां दो-अेक पंजाबी लड़के थे जो अजमेरकी तरफ रह चुके थे। अपवादके तौर पर अुनके लिअे थोड़ी रोटियां बनती थीं। अितनी थोड़ी कि जब पहले दिन मैंने रोटी मांगी तो सबकी रोटियां मैं अकेला ही चट कर गया। रोटी अैसी बनी थी मानो चमड़ा हो। अुसका नाम मैंने मोरक्को लैदर (Morocco Leather) रखा।

अुन दिनों मैं स्वभावसे ही बड़ा प्रचारक था। मेरा आग्रह था कि सबके आहारमें भात कम और रोटी ज्यादा हो। मेरे प्रचारके फलस्वरूप चार अध्यापक और ग्यारह विद्यार्थी मेरे साथ अलग रसोअी करनेके लिअे तैयार हो गये। मैंने अुस दलका नाम रखा था — Self helpers Food Reform League (स्वावलंबियोंका आहार सुधारक मण्डल)। हम सब मिलकर रसोअी अपने हाथसे पकाते थे बरतन भी मांजते थे मसाले वगैरा व्यवहार नहीं करते थे। रोटी तो मुझे ही बनानी पड़ती थी। वह अैसी अच्छी बनती थी कि लोगोंके बाहरसे आदमी भी खानेके लिअे आने लगे। हमारे अध्यक्ष सन्तोषबाबू मजूमदार भी थे। वे अमेरिकासे अध्ययन करके आये थे। मैंने अेक दिन कहा कि अपने हाथों बरतन मांजनेसे और पाखाना स्वयं साफ करनेसे हमारी आत्मा भी साफ होती है। वे हंस पड़े और कहने लगे — हृदयको साफ करना अितना आसान नहीं है।

कुछ भी हो हम लोगोंका बंधुभाव खूब बढ़ा। शांतिनिकेतनने हमारे प्रयोगके लिये पूरा सुभीता कर दिया था।

*   *   *

जब गांधीजी १९१५ में शांतिनिकेतन आये तो अुन्होंने हमारा यह कार्य देखा। बड़े खुश हुअे किन्तु अुनका स्वभाव ठहरा बड़ा लोभी। कहने लगे — यह प्रयोग अितने छोटे पैमाने पर क्यों किया जाता है? शान्तिनिकेतनका सारा रसोअी-घर ही अिस स्वावलम्बनके तत्त्व पर क्यों नहीं चलाया जाता?

बस दक्षिण अफ्रीकाके विजयी वीरने वहांके अध्यापकों और व्यवस्थापकोंको बुलवाया और अुनके सामने अपना प्रस्ताव रखा। वे बड़े सकोचमें पड़े। अितने बड़े मेहमानको क्या जवाब दिया जाय? गांधीजीकी यह जल्दबाजी मुझे कुछ अनुचित-सी लगी। मैंने कहा — मेरा छोटासा प्रयोग चल रहा है। अगर अुन्हें पसन्द आयेगा तो धीरे-धीरे अैसे रसम और भी बन जायगे। मैंने यह भी कहा कि दो सौ आदमियोंका आम रसोअी-घर नये ढंगसे चले या न भी चले। अिससे बेहतर यह होगा कि यहां पच्चीस-पच्चीस या तीस-तीस आदमियोंके छोटे-छोटे रसम बन जाय।

कर्मवीर मेरा प्रस्ताव थोड़े ही कबूल करनेवाले थे! कहने लगे — अगर आठ रसम बनाओगे तो तुम्हें कमसे कम सोलह expert (विशेषज्ञ) चाहिये। कितने हैं तुम्हारे पास? बड़ी-बड़ी फौजें जैसे काम करती हैं वैसे ही हमें भी करना होगा और साथ मिलकर काम करने और साथ खानेकी आदत डालनी होगी। अगर छोटे-छोटे रसम ही बनाते हैं तो लोगोंके तैयार होने पर कुछ महीनोंके बाद बना सकते हो। आज तो आम रसोअी ही चलनी होगी।

अुनकी दलील ठीक थी। मैं चुप हो गया। लेकिन मैंने मनमें कहा — सत्ता न आपकी है न मेरी और गुरुदेव भी (शान्तिनिकेतनमें रविबाबूको सब लोग गुरुदेव कहते थे।) अिस समय यहां नहीं हैं। अितना बड़ा अुत्पात आप क्यों करने जा रहे हैं?

बापूने श्री जगदानन्दबाबू और घरवबाबूको बुलवाया और पूछा — यहां रसोअियमें और नौकर मिलकर कुल कितने आदमी हैं? जब अुन्हें पता चला कि करीब पैंतीस हैं तो बोले — जितने नौकर क्यों रखे जाते हैं? जिन सबको छुट्टी दे देनी चाहिये। व्यवस्थापक बेचारे विमूढ़ हो गये। अुन्हें सीधे कहना चाहिये था कि हम अैसा अेक अैसा नहीं कर सकते। किन्तु अुन्होंने देखा कि मि॰ अेंड्रूज और पियर्सन बापूके प्रस्तावके पक्षमें हैं गुरुदेवके दामाद नगीनदास गांगुली भी खुशी प्रभावमें आ गये हैं और विद्यार्थी तो ठहरे बन्दर। किसी भी नयी बातका खब्त अुन पर आसानीसे सवार हो जाता है। सारा वायुमंडल अुत्तेजित हो अुठा। मैंने देखा कि मि॰ अेंड्रूजको स्वावलम्बनका जितना अुत्साह नहीं था जितना कि ब्राह्मण जातिके रसोअियोंको निकाल देनेका। विश्व-कुटुम्बमें विश्वास करनेवाली जितनी बड़ी संस्थामें ये ब्राह्मण रसोअिये अपनी सनातनी वृत्ति चलाते थे और किसीको अपने रसोअी-घरमें पैठने नहीं देते थे।

लेकिन हम लोग सामाजिक या धार्मिक सुधारके खयालसे प्रेरित नहीं हुअे थे हमें तो जीवन-सुधारकी ही लगन थी।

तय हुआ कि बापू विद्यार्थियोंको किकट्ठा करके पूछें कि अैसा परिवर्तन अुन्हें पसन्द है या नहीं। क्योंकि नौकरोंके चले जाने पर काम तो अुन्हींको करना था। मि॰ अेंड्रूज बापूके पास आकर कहने लगे — मोहन आज तो तुम्हें अपनी सारी वक्तृत्व काममें लानी पड़ेगी। लड़कोंसे अैसी जोशीली अपील करो कि व मंत्रमग्न हो जायं। क्योंकि तुम्हारी अिस अपील पर ही सब कुछ निर्भर है। बापूने कुछ जवाब नहीं दिया।

विद्यार्थी अिकट्ठे हुअे। हम लोग तो गांधीजीकी जोशीली अपील सुननकी अुत्कंठासे अपना अपना हृदय हाथमें लेकर बैठ गये।

और हमने सुना क्या? ठंडी मामूली आवाज और बिलकुल व्यवहारकी बातें। न अुसमें कहीं वक्तृत्व थी न कहीं जोश। न भावुकता (sentiment) से अपील थी न बहुत सूची या संजी-वीनी फलश्रुति।

तो भी अुनके बगैर काम चल गये। जिन विद्यार्थियोंके बारेमें मैं अच्छी तरह जानता था कि वे शौकीन और आरामतलब हैं, वे भी अुत्साहमें आ गये और अुन्होंने अपनी राय अिस प्रयोगके पक्षमें दी।

अब व्यवस्थापकोंने अपनी अेक आखिरी किन्तु बड़ी कठिनाई पेश की। कहने लगे — नौकरोंको आजके आज नौकरीसे मुक्त करना हो तो अुनको तनख्वाह देनी पड़ेगी। अिस वक्त खजानचीके पास पूरे पैसे नहीं हैं कुछ पैसे लाने पड़ेंगे। गांधीजीके पास होते तो वे तुरन्त दे देते। लेकिन वे यहां मेहमान थे किससे मांग सकते थे? अुनके आश्रमवासी भी आश्रमके मेहमान थे। अुनके पास भी कुछ नहीं था। मि॰ अेन्ड्रूजके पास भी अुस वक्त कुछ नहीं था। मैं था अेक घूमनेवाला परिव्राजक। तो भी पता नहीं कैसे गांधीजीने मुझसे पूछा — तुम्हारे पास कुछ रुपये हैं? मैंने कहा — हैं। मेरे पास करीब दो सौ रुपये निकले जो मैंने अुन्हें दे दिये। फिर क्या था? नौकरोंको तनख्वाह दे दी गयी और वे आश्चर्यचकित होकर चले गये।

अब सवाल अुठा कि रसोअी-घरका चार्ज कौन ले। मेरी तो पत्र रिफार्म स्कीम चल ही रही थी। गांधीजीने मुझसे पूछा — तुम चार्ज लोगे? मैंने अिनकार किया। आत्मविश्वासके अभावके कारण नहीं। अिस प्रयोग पर मेरी श्रद्धा थी अिस कारण भी नहीं। किन्तु मैं जानता था कि यह सारी अनधिकार चेष्टा है। मैंने कहा — मेरा छोटासा प्रयोग चल रहा है। मुझे अुससे संतोष है। अितना बड़ा व्यापक परिवर्तन अेकाअेक करना मुझे ठीक नहीं लगता। लेकिन अिस तरह गांधीजी रुकनेवाले थोड़े ही थे। अुनका भाग्य भी कुछ अैसा है कि अगर अेक आदमी अिनकार करता है तो अुनका काम करनेके लिअे दूसरा कोअी न कोअी अुन्हें मिल ही जाता है। मेरे मित्र नारायणम् अथवा हरिहर शर्मा शान्तिनिकेतनमें ही काम करते थे। अुनको हम अच्छा जानते थे। वे तैयार हो गये। कहने लगे — मैं चार्ज लूंगा। अब सवाल अुठा कि मदद कौन करेगा। तब मैंने कहा — जब सब मिल कोअी काम अुठाते हैं तब मदद करना

मेरा मन हो जाता है। मैं यथाशक्ति मदद करूंगा। गांधीजीने कहा — तुम्हारा जो प्रयोग छोटे पैमाने पर चल रहा है, अुसका जिस बड़े प्रयोगमें विसर्जन करो और सारी शक्ति जिसीमें लगा दो।

वैसा ही किया गया। और फिर तो मैं राक्षस जैसा काम करने लगा। बारह-अेक बजे यह सब तय हुआ होगा। तीन बजे हमने कार्य किया और शामको लड़कोंको खिलाया। गांधीजी स्वयं आकर काम करने लगे। शाक काटनेका काम अुन्होंने किया। रोटियां तैयार करनेका काम मेरा था। मेरी रोटियां जितनी लोकप्रिय हुअी कि वहां जो रोटियां बनती थीं वहां वो भी बनने लगीं। पत्थरके कोयलेके चूल्हे और अुन पर लोहेकी गरम चद्दरें, जिन पर मैं दो दो रोटियां अेक पर अेक रखकर और घुमा-फिराकर सेंकता था। जिस तरह चार चूल्हे साथी अेक साथ आठ रोटियोंकी ओर मैं ध्यान देता था। विद्यार्थी रोटियां बेल-बेलकर मुझे देते थे। पूछनेका काम चिंतामणि शास्त्री कर देते थे। सुबहका नाश्ता दूध-केलेका होता था। बरतन मांजनेके लिअे भी बड़े विद्यार्थियोंकी अेक टुकड़ी तैयार हो गयी थी। अुसका सरदार मैं ही था। बरतन मांजनेवालोंका अुत्साह कायम रहे जिसलिअे कभी कोअी विद्यार्थी अुन्हें रोचक अुपन्यास पढ़कर सुनाता था कभी कोअी सितार बजाता था। मेरी यह योजना शान्तिनिकेतनके रसिक अध्यापकोंको बहुत अच्छी लगी।

जिस तरह दो-चार दिन ही बीते थे कि गांधीजी अपने मित्र डॉक्टर प्राणजीवनदास मेहतासे मिलनेके लिअे बर्मा (ब्रह्मदेश) जानेको तैयार हो गये। हरिहर शर्माने कहा — मैं भी अुनके साथ जाअूंगा। (शर्माजी पहले डॉ. प्राणजीवनदास मेहताके यहां लड़कोंके ट्यूटर रह चुके थे।) अुन्‍ अपने सिर काम लेकर जिस तरह अुन्हें छटकते देखकर मुझे बड़ा गुस्सा आया। मैं शिकायत करने गांधीजीके पास गया। गांधीजीने मेरा काम तो देखा ही था। अुन्होंने शांतिसे मुझे कहा — तुम सब कुछ कर सकोगे। लेकिन अगर तुम चाहो तो अण्णाको चार-छः दिनके लिअे यहां रख जाअूं। वे बादमें आ जायेंगे। मैं और भी झल्लाया। मैंने कहा — जिम्मेदारी तो अुन्होंने ली थी।

अब अिसे छोड़कर कैसे जा सकते हैं? और अगर अुन्हें जाना ही है तो चार-छ दिनकी मेहरबानी भी मुझे नहीं चाहिये। कल जाना हो तो आज ही चले जायं।

गांधीजीने देख लिया था कि मैं नये प्रयोगमें रंगा हुआ हूं। कुछ भी दया किये बगैर अुन्होंने कहा — अच्छा तब तो ये मेरे ही साथ जायंगे। और सचमुच दूसरे ही दिन अप्पा गांधीजीके साथ चले गये।

अिस प्रयोगका आगे क्या हुआ सो यहां बतानेकी जरूरत नहीं। रवीन्द्रबाबू कलकत्तेसे आये। अुन्होंने अिस प्रयोगको आशीर्वाद दिया और कहा कि अिस प्रयोगसे संस्थाको और बंगालियोंको बड़ा लाभ होगा।

लेकिन धीरे-धीरे अिसका गाम्भीर्य कम होता गया। लड़के थकने लगे। मि० पियर्सनने भी मेरे पास आकर कहा — काम तो अच्छा है लेकिन अिसके बाद पढ़ने-लिखनेका अुत्साह नहीं रहता। तो भी बड़ी बहादुरीसे हमने चालीस दिन तक अिसे चलाया। फिर छुट्टियां आ गयीं। मैं भी शान्तिनिकेतन छोड़कर चला गया। छुट्टियोंके बाद किसीने अिस प्रयोगका नाम भी नहीं लिया।

५

मोहन और चार्ली

मि० अेन्ड्रूज अद्वितीय व्यक्ति थे। अुनकी विद्वत्ता असाधारण थी। वे मिशनरी बनकर अिस देशमें आये जिससे अुनके त्याग और सेवाभावका पूरा परिचय मिलता है। यहां आकर जब अुन्होंने देखा कि भारतमें यहांका अपना मिशनरीपन अस्वाभाविक है और मिशनरी संस्थाका अिसमें भी स्थान अस्वाभाविक है तब अुन्होंने अपना [illegible] छोड़ दिया और केवल मिस्टर अेन्ड्रूज रह गये। अुनमें हृदयकी असाधारण नम्रता थी। अेक दिन [illegible] बीचमें अचानक कहा — मैं हिन्दुस्तानकी सेवा [illegible]

नुसार करना चाहता हूं। अंग्रेज आये और यहांके लोगोंके गुरु बन जायं अैसी भूमिका मुझे नहीं लेनी है। (शायद अुनका अिशारा मिसेज अेनी बेसटकी तरफ था।) और हिन्दू बनकर हिन्दुओंको अुनका धर्म सिखाने बैठू अैसा भी मुझे नहीं करना है। (अिसमें अुनकी दृष्टिके सामने शायद सिस्टर निवेदिता थीं।) मैं तो भारतवासियोंका सेवक बनकर ही रहना चाहता हूं। और सचमुच वे सेवक बनकर ही रहे।

जब दक्षिण अफ्रीकामें बापूके सत्याग्रहने अुग्र स्वरूप ले लिया तब गोखलेने आखिरमें अुनकी मददके लिअे यहांसे मिस्टर अेंड्रूजको भेजनेका निर्णय किया। अपनी-अपनी शुभ कामनाके साथ मि अेंड्रूजको बिदा करनेके लिअे मित्र लोग अिकट्ठे हुअे। हरअेकने अेंड्रूजको यादगारके तौर पर कुछ न कुछ सौगात दी। अुनके मित्र पियर्सन भी अेक सौगात ले आये। हंसते-हंसते कहने लगे — मैं तुम्हारे लिअे अेक अजीब भेंट लाया हूं। मिस्टर अेंड्रूज समझ नहीं पाये कि क्या चीज होगी। मिस्टर पियर्सनने कहा — मैं अपनेको ही तुम्हें दिये देता हूं। मैं तुम्हारे साथ चलूंगा और जितनी हो सकेगी तुम्हारी मदद करूंगा।

दोनों दक्षिण अफ्रीका गये। अंग्रेजोंके बीच रहनेके कारण बापू अंग्रेजोंको झट पहचान लेते हैं। वहां जाते ही ये दोनों मित्र गांधीजीके भी मित्र बन गये। मिस्टर अेंड्रूजने गांधीजीसे कहा — आजिन्दा मैं तुम्हें मोहन कहूंगा तुम मुझे चार्ली कहना। तबसे अिन दोनोंका संबंध मा-जाये भाअियों-जैसा रहा। जब कभी मिस्टर अेंड्रूज विदेशसे हिन्दुस्तान आते तो कुछ दिन पहले नजदीकके बन्दरसे To Mohan, Love from Charlie. यह केबल (समुद्री तार) भेजे बिना अुनसे नहीं रहा जाता। अिस तरह अुनका पैसे खर्च करना बापूको अखरता तो बहुत था लेकिन अेंड्रूजको मना करनेकी हिम्मत अुन्होंने कभी नहीं की।

मिस्टर अेंड्रूज कुछ भुलक्कड़ थे। नहाने जाते तो कहीं घड़ी भूल आते। किसीसे कुछ लेने अथवा देने यह भी अक्सर भूल जाते

थे। अिसलिअे बापू जब मुझे कहीं भेजते तो ज्यादा पैसे देकर भेजते और हंसकर कहते — घूमकर लौटनेके लिअे भी तो कुछ पैसा चाहिये न? वे कभी पैसेका हिसाब नहीं रखते थे। लौटने पर जेबमें कुछ पैसा बचता तो अपने मोहनको वापिस कर देते थे।

मैंने देखा कि आगे जाकर मिस्टर अेंड्रूज बापूको मोहन नहीं कह सके। हम लोगोंकी देखादेखी वे भी बापूको बापू ही कहने लगे।

६

दो बड़ोंका प्रथम मिलन

जब बापू वापिस लौटे तब रविबाबू शान्तिनिकेतनमें थे। भारतके दो बड़े पुरुष किस तरह मिलते हैं यह देखनेके लिअे हम सब अध्यापकगण अत्यन्त अुत्सुक थे। मि॰ अेंड्रूज हमारी यह अुत्कण्ठा क्या जानें! अुन्होंने तो मानो अपने गुरुदेव और अपने मोहनका ठेका ही ले लिया था। वे हममें से किसीको कमरेके अन्दर जाने ही नहीं देते थे। पुराने अध्यापक अिस पर बिगड़ गये और अन्दर घुस ही गये। क्षितिबाबूने मि॰ अेंड्रूजको समझाया कि अिन बड़ोंका प्रथम मिलन हमारे लिअे अेक पुण्यप्रसंग-सा (sacrament) है। हम अुनकी खानगी बातें सुननेके लिअे अुत्सुक नहीं हैं। थोड़े समय बैठकर चले जायेंगे। तब कहीं मोहनके साथीको तसल्ली हुअी।

बापूके साथ दीवानखानेमें मैं गया। रविबाबू अेक बड़े कोच पर बैठे थे, खड़े हो गये। रविबाबूकी अूंची भव्य मूर्ति, अुनके सफेद बाल, लम्बी दाढ़ी और भव्यता बढ़ानेवाला अुनका चोगा सब कुछ प्रौढ़ और सुन्दर था। अुनके सामने गांधीजी छोटीसी धोती, कुरता और काश्मीरी टोपी (कुपल्ली) पहने जब खड़े हुअे तब अैसा मालूम हुआ मानो सिंहके सामने चूहा खड़ा हो।

दोनोंके मनमें अेक-दूसरेके प्रति हार्दिक आदर था। रविबाबूने गांधीजीको अपने साथ कोच पर बैठनेका अिशारा किया। गांधीजीने देखा कि जमीन पर गलीचा है ही, फिर कोच पर क्यों बैठें। जमीन

पर ही बैठ गये। रविबाबूको भी फर्श पर बैठना पड़ा। हम सब लोग कुछ देर तक अिर्दगिर्द बैठे रहे। मामूली कुशल-प्रश्न हो जानेके बाद हम चले गये।

अिसके बाद तो वे दोनों अनेक बार मिले। सन्तोषबाबूने अेक दिन मुझसे कहा — अिन दोनोंके बीच अेक दिन आहारकी भी चर्चा छिड़ी थी। लूची (पूरी) की बात थी। गांधीजी तो केवल फलाहारी ठहरे। अुन्होंने कहा — घी या तेलमें रोटी तलकर पूरी बनाते हैं यह तो अुसका विष बनाते हैं। यह सुनकर रविबाबूने गंभीरतासे जवाब दिया — It must be a very slow poison. I have been eating *pooris* the whole of my life and it has not done any harm so far (यह तो बिलकुल सौम्य विष होगा। मैं सारी जिन्दगी पूरी ही खाता आया हूं। लेकिन अभी तक तो कुछ नुकसान नहीं हुआ है।)

७

जूते न पहननेका व्रत

शान्तिनिकेतनसे गांधीजी बर्मा अपने मित्र डॉ० मेहतासे मिलने गये। कुछ दिन बाद वहांसे शान्तिनिकेतन लौटे। हमारा रसोईका प्रयोग चल ही रहा था। अितनेमें (फरवरी १९१५) पूनासे तार आया — गोखलेजीका देहान्त हो गया। गांधीजीने तुरन्त पूना जानेका निश्चय किया। अिसके पहले गोखलेजी अुनसे कहते थे — सर्वन्ट्स ऑफ अिंडिया सोसायटीके सदस्य बन जाओ। लेकिन गांधीजीने निश्चय नहीं किया था। अपने राजनीतिक गुरुकी मृत्युके पश्चात् अुनकी यह अंतिम अिच्छा गांधीजीके लिअे आज्ञाके समान हो गयी। वे पूना गये और सर्वेन्ट्स ऑफ अिंडिया सोसायटीमें प्रवेश पानेके लिअे अर्जी दे दी।

अर्जी पाकर गोखलेजीके अन्य शिष्य बहुत रूठे। वह सारा किस्सा माननीय शास्त्रीजीने दो तीन जगह अपनी अप्रतिम भाषामें वर्णन किया है। मुझे यहां देनेकी जरूरत नहीं। सार यह कि वे जानते थे कि गांधीजीको वे हजम नहीं कर सकेंगे। किन्तु गोखलेजीके ही creed (राजनीतिक सिद्धान्तों) को गांधीजी मानते थे। ऐसी हालतमें अुनकी अर्जी अस्वीकार कैसे की जाय अिसी असमंजसमें वे पड़े थे। लेकिन परिस्थितिको समझकर गांधीजीने ही अपनी अर्जी वापस ले ली। और अपने गुरु-भाअियोंको संकटसे मुक्त कर दिया। फिर भी अनौपचारिक रूपसे सोसायटीके जलसोंमें वे अुपस्थित रहते और संस्थाको अुन्होंने समय-समय पर मदद भी काफी दी।

गोखलेजीके देहान्तके समाचार सुनते ही गांधीजीने अेक सालके लिअे जूते न पहननेका व्रत लिया। जिस कारण अुन्हें काफी तकलीफ हुअी। किन्तु अुन्होंने यह व्रत अच्छी तरहसे निबाहा।

८

विश्वजित् यज्ञ

जब बापू दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तान लौटने लगे तब अुन्होंने साथियोंसे कहा कि मुझे जिस देशसे अेक कौड़ी भी साथ नहीं ले जानी चाहिये। अंग्रेज जब कमाया हुआ सब अपना धन हिन्दुस्तानसे विलायत ले जाते हैं तब हम वैसा बुरा मानते हैं? हम अुसे अन्याय और ... कहते हैं। तब दक्षिण अफ्रीकाका धन हमें हिन्दुस्तान ले जानेका क्या अधिकार है?

बस अिसी विचारसे अुन्होंने दक्षिण अफ्रीकामें जो कुछ भी कमाया था सबका सब वहीं पर ट्रस्ट बना दिया और यह प्रबन्ध किया कि अुसका सार्वजनिक कामोंमें अुपयोग हो। वहांसे चलते समय अुनके साथ सिर्फ थोड़े कपड़े, सामान और थोड़ी किताबें।

... जब सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना हुअी तब सारी आश्रम ... और जब आश्रमका विसर्जन हुआ तब अहमदाबादकी

म्युनिसिपैलिटीको दे दीं। कोअी बीस हजार किताबें होंगी। मानपत्र बेचारे अिधर-अुधर पड़े-पड़े नष्ट हो गये।

हिन्दुस्तान लौटने पर बापूके सामने अपनी पैतृक सम्पत्तिका सवाल आया। पोरबन्दर और राजकोटमें अुनके घर थे। वहां गांधी खानदानके लोग रहते थे। बापूने अुन सब रिश्तेदारोंको बुलाकर कहा कि पैतृक सम्पत्तिमें मेरा जो भी हिस्सा है, वह मैं आपके नाम पर कर देता हूं। अितना ही नहीं अुन्होंने जो त्यागपत्र लिखा अुस पर अपने चारों पुत्रोंके भी हस्ताक्षर करवा दिये कि हम सब अपना अधिकार भी छोड़ देते हैं।

अिस तरह बापूने अपनेको और अपने पुत्रोंको पैतृक सम्पत्तिके मोहसे मुक्त किया।

९

हिन्दुस्तानको संदेश

हिन्दुस्तान भरके लोग जानते थे कि बापू केवल फल ही खाते हैं। हिन्दुओंके विचारसे फलाहारमें दूध भी शामिल है। बापू जोरोंसे अिसका विरोध किया करते थे। अुनका कहना था कि दूधका आहार फलाहार नहीं है, वह तो महज मांसाहार है। रक्त मांस व मज्जाके तत्त्वसे ही दूध बनता है। वह फलाहारमें नहीं आ सकता। अुसमें हिंसा भले न हो लेकिन वह मांसाहार तो है ही।

अेक समय बापू कलकत्ता गये। वहां भूपेन्द्रनाथ वसुके मेहमान बने। बंगालियोंकी खातिरदारी मशहूर है। अितने सूखे मेवे और ताजे फल अिकट्ठे किये जा सकते थे किये गये और अुनसे जितनी भी चीजें बन सकती थीं सब बनवाकर बापूके सामने रखी गयीं। देखकर बापू हैरान हो गये। कहने लगे — यह क्या मैं सादगी-पसन्द आदमी हूं। कितनी झंझट अुठायी मेरे लिये! बापूने तुरन्त व्रत ले लिया

— मैं अब हर दिन कुदरती पांच चीजोंके अलावा अेक भी चीज अधिक नहीं खाअूंगा।

अिसके बाद हम लोगोंमें शास्त्रार्थ छिड़ा। नीबू, संतरा और मोसम्बी अेक ही चीज मानी जाय या अलग अलग? गुड़, मिश्री और शक्कर (चीनी) अेक ही चीज मानी जाय या नहीं? अैसे सवाल सामने आये। बापू अैसे सवालोंकी चर्चा करनेमें किसी स्मृतिकारके जैसी दिलचस्पी लेते हैं और बालकी खाल निकालने तक चर्चा चलाते भी नहीं अूबते।

अब तो सुबह अुन्होंने क्या खाया है, अिसका स्मरण रखकर शामकी तैयारी करनी पड़ती थी। वे अक्सर सुबह तीन ही चीजें खाकर शामके लिये दो नयी चीजोंकी गुंजाअिश रखते थे। सूर्यास्तके पहले शामका भोजन कर लेनेका अुनका नियम था ही। शामकी प्रार्थनाका समय सम्हालना और साथ-साथ अुनके भोजनका समय संभालना अुनके साथ रहनेवालोंके लिये योगसिद्धि-सा कठिन हो जाता था।

कुछ दिन बाद बापूने अनुभव किया कि हिन्दुस्तान कोअी दक्षिण अफ्रीका नहीं है। यहां फल आसानीसे नहीं मिलते। दक्षिण अफ्रीकामें केले अननास जैसे सस्ते मानो सब कुछ आसानीसे मिल जाते थे और वे पेटभर खाते थे। चिलगोजोंकी भी वहां भरमार थी। अैसे वे खानेमें कमजोर तो थे ही नहीं। अिसलिये जब देखा कि हिन्दुस्तानमें फलाहार नहीं चल सकता तो वहां आते ही मूंगफली सेंककर साथ ले खाने लगे। नारियल मिलता तो अुसका दूध या रस भी ले लेते। लेकिन आखिर बहुत सोचने पर यह तय किया कि हिन्दुस्तानमें अनाजके बिना काम नहीं चल सकता। तबसे बाजरेकी रोटी या खिचड़ी खाने लगे। फिर यह अनुभव हुआ कि जब अनाज लेने लगे तो नमक भी लेना ही पड़ेगा। और वह भी शुरू हो गया।

खेड़ा जिलेमें रंगरूट भरती करानेका काम शुरू किया तब अुन्हें खूब पैदल घूमना पड़ा। आहारमें बहुत हेरफेर हुआ। वह माफिक नहीं आया। फिर बीमार पड़े। अब आश्रममें आ रहे। अेक रातको

पेटमें अैसा भयंकर दर्द हुआ कि अुन्होंने मान लिया कि अब शरीर नहीं रहेगा। अुसी दिन बापूका छोटा लड़का देवदास मद्राससे वापस नहीं आ रहा था। सारी रात बापूने —

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिम् अधिगच्छति ।।

रटते-रटते पूरी की। दूसरे दिन सुबह अुठकर रातका अनुभव कहने लगे। बोले — अिस हालतमें अेक कामना मनमें रह जाती। देवदास मद्राससे आ ही रहा है अुसके पहुंचनेके पहले अगर शरीर छूट जाय तो मुझे कितना दुःख होगा। अुसके आने तक यह शरीर रह जाय तो मुझे अुतना आघात नहीं लगेगा।

गीताके श्लोकने मुझे शांति दी और रात टल गयी।

सुबह हम शिक्षकोंको बुलाया। मेरे साथियोंने सोचा कि हमसे अलग-अलग बातें करना चाहते हैं। सबने पहले मुझे भेजा। मैं जाकर चुपचाप बैठ गया। बापूने कहा — सबको बुलाओ। सबके अिकट्ठा होने पर अपनी रातका अनुभव सुनाया और कहने लगे — मुझे विश्वास नहीं कि मेरा शरीर टिकेगा। मेरी ओरसे हिन्दुस्तानको मेरा यह आखिरी सन्देश कह देना

हिन्दुस्तानका अुद्धार अहिंसासे ही होगा और हिन्दुस्तान अहिंसाके द्वारा जगतका अुद्धार कर सकेगा।

बस अितना कहकर चुप हो गये। हमारी अपेक्षा थी कि आश्रमके बारेमें कुछ कहेंगे हममें से हरअेकको कुछ न कुछ कहेंगे। लेकिन कुछ नहीं कहा। फिर अुसी गीताके श्लोकमें मग्न हो गये। बड़ी देर तक हम लोग बैठे रहे। फिर अुठकर चले गये।

अुनकी बीमारी बढ़ती ही गयी। हम सब लोग चिन्तित हो गये। अितनेमें सरकारने रौलेट अेक्टका मसविदा प्रकाशित किया और गांधीजीके अन्दर जिजीविषा (जीनेकी अिच्छा) ने प्रवेश किया। कहने लगे — मैं अिस वक्त तगड़ा होता तो सारे देशमें घूमकर अुसे जाग्रत करता। युद्धमें हमने सरकारको मदद दी तथा अुसके बदलेमें हमें यह रौलेट अेक्ट मिल रहा है!!

बम्बअी और महाराष्ट्रसे चन्द राष्ट्रसेवक बापूसे मिलने आये। रौलैट अेक्टका विरोध करते हुअे अंतिम हद तक जानेके लिअे कौन-कौन तैयार हैं जिसकी अेक फेहरिस्त बापूने तैयार करवाअी। अुनका खयाल था कि अैसे लोगोंको वे बिस्तर पर पड़े-पड़े सलाह सूचना देते रहेंगे।

लेकिन कार्यके महत्त्वने दवाका काम किया। वे खूब चंगे हो गये और अुन्होंने स्वयं ही आन्दोलन शुरू किया।

१०

परस्पर निष्ठा

शान्तिनिकेतनमें मैं बापूके काफी परिचयमें आया था। वहां अुनके आश्रमवासी ठहरे थे। अुनके बीच रहकर मानो मैं अुन्हींका हो गया था। अुन दिनों बापूके बड़े लड़के हरिलाल अुनसे मिलने आये थे। अुनके साथ भी मेरा परिचय हो गया था।

*   *   *

सन् १९१८ की बम्बअी कांग्रेसके समय बापू मारवाड़ी विद्यालयमें ठहरे थे। शामकी प्रार्थनाके बाद वे कुछ लिखने बैठे थे। मैं भी पास ही बैठकर कुछ पढ़ रहा था। अितनेमें हरिलाल मेरे पास आकर पूछने लगा — काका आप तो शान्तिनिकेतनमें बापूके अितने परिचयमें आये थे और फिनिक्स पार्टीके लोगोंके साथ अितने हिलमिल गये थे कि हम मानते थे कि गांधीजीके आश्रममें आप कभीके शरीक हो गये होंगे। आश्चर्य है कि अभी तक आप दूर ही रहे!

मैंने जवाब दिया — बापूके प्रति मेरा जो आकर्षण है, सो

शुरू करें, तो मुझे चाहिये कि अपनी सेवा अुन्हींको दूं। नहीं तो व नये-नये आदमी ढूंढते फिरें और मैं जहां आकर्षण बढ़े वहां नये नया पसन्द करता फिरूं यह क्या अच्छा होगा?

बापू अपने लेखनकार्यमें तल्लीन थे। हम धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। अितनेमें बापूने हमारे प्रश्नोत्तर सुन लिये। अुनसे रहा न गया। कहने लगे — काका तुम्हारा विचार सोना मुहर जैसा है। फिर हरिलालकी ओर मुंह करके कहने लगे — अगर हिन्दुस्तानमें सब कार्यकर्ता अैसी ही परस्पर निष्ठासे काम करें, तो हमारा बेड़ा पार होनेमें देर न लगे।

मैंने सिर नीचा कर लिया। मन कितना प्रसन्न हुआ! थोड़ा अभिमान भी हुआ कि मुझमें भी कुछ है। अुसी क्षण मैं पूरी तरह बापूका हो गया।

*   *   *

लखनअूकी कांग्रेस खतम होनेके बाद मैं बड़ोदा गया और वहांसे चार-पांच मील पर सयाजीपुरा नामके अेक देहातमें ग्राम सेवाका कार्य करने लगा। जब बापूको मालूम हुआ कि मैं बैरिस्टर केशवराव देशपांडेके मातहत काम तो कर रहा हूं लेकिन मेरे लिये वहां काफी विशेष काम नहीं है तो अुन्होंने स्वयं देशपांडेजीको पत्र लिखा — काकाका आप कुछ विशेष अुपयोग नहीं कर रहे हैं। हम आश्रममें अेक राष्ट्रीय शाला खोलना चाहते हैं। अिसलिये काकाको हमें दे दीजिये।

देशपांडे साहब मुझे अहमदाबाद ले गये और कहा — हम जो गंगनाथ राष्ट्रीय शाला चलाते थे अुसीका यह व्यापक स्वरूप समझो और यहां रह जाओ। जिस तरह कन्याका माता-पिता ससुराल भेजते हैं अुसी तरह वे मुझे गांधीजीके आश्रममें पहुंचा गये।

मैं आया और अेकाअेक गांधीजी चम्पारनकी ओर चले गये। बड़ोदाका काम जिसके नहीं छिन्नभिन्न अन्तिम व्यवस्था करनेके लिये मैं फिरसे चार दिनके लिये बड़ोदा चला गया। आश्रमके व्यवस्थापकोंने

गांधीजीको लिखा होगा कि काका बड़ौदा गये हैं। बस वहांसे फौरन दो खत आये अेक मेरे पास और अेक केपराअे साहबके पास। केपराअे साहबको लिखा कि आपने काकाको मुझे दे दिया है अब आपका अुन पर कोअी अधिकार नहीं रहा। अुन्हें आप अिस तरह नहीं बुला सकते। मुझे लिखा कि मनुष्य दो जिम्मेदारियां साथ-साथ नहीं चला सकता।

मुझे बुरा लगा। मैंने कैफियत तो भेजी। लेकिन सोचा कि अितना बस नहीं है। तबसे करीब अेक साल तक मैं आश्रम-भूमि छोड़ कर कहीं बाहर नहीं गया। ग्रामको घूमनेके लिअे जो मौका बाहर जाना था अुतना ही। अिस पर गांधीजीको विश्वास हो गया कि अिसकी निष्ठामें अेकाग्रता है। फिर तो वे स्वयं मुझे अपने साथ मुसाफिरीमें अेक-दो जगह ले गये।

* * *

गांधीजीने जब चंपारनमें सत्याग्रह शुरू किया तब मुझसे रहा न गया। मैंने अुन्हें लिखा कि मुझे आने दीजिये मैं वहांके आन्दोलनमें और सत्याग्रहमें शरीक होअूंगा। जवाब आया — तुम तो राजनीतिक क्षेत्रमें काफी अनुभव ले चुके हो। राष्ट्रशिक्षाका काम तुम्हारे लिअे कोअी नयी चीज नहीं है। वहांका काम छोड़ यहां आकर जंगलमें आ बैठो तो तुम्हारे लिअे वह तपस्या नहीं होगी बल्कि स्वच्छन्दता होगी। नये लोगोंको मैं यह मौका देना चाहता हूं। तुम अपना काम वहां अेकाग्रतासे करते रहो।

११

सेवाके लिअे ही पढ़ो

शायद १९१५ के आखिरी दिनोंकी बात होगी। बापू कुछ लिख रहे थे। मैं पास बैठकर अुमर खय्यामकी रुबाअियातका अनुवाद पढ़ रहा था। फिट्ज जेरल्डके अनुवादकी तारीफ मैंने बहुत सुनी थी किन्तु अुसे पढ़ा नहीं था। अपना अितना अज्ञान कम करनेकी दृष्टिसे मैंने वह किताब ली और बापूके पास पढ़ने लगा। किताब करीब-करीब पूरी होनेको थी कि अितनेमें बापूका ध्यान मेरी ओर गया। पूछा — क्या पढ़ रहे हो? मैंने किताब बताअी।

नया ही परिचय था। बापू सख्त अुपदेश देना नहीं चाहते थे। अेक गहरी साँस लेकर अुन्होंने कहा — मुझे भी अंग्रेजी कविताका बड़ा शौक था। लेकिन मैंने सोचा कि मुझे अंग्रेजी कविता पढ़नेका क्या अधिकार है? मुझे मजहबका जितना ज्ञान होना चाहिये अुतना कहाँ है? अगर मेरे पास फालतू समय है, तो मैं अपनी गुजराती लिखनेकी योग्यता क्यों न बढ़ाऊँ? मुझे आज देशकी सेवा करनी है तो अपना सारा समय सेवाशक्ति बढ़ानेमें ही लगाना चाहिये। कुछ ठहरकर फिर बोले — अगर देशसेवाके लिअे मैंने कुछ त्याग किया है तो वह अंग्रेजी साहित्यके शौकका। पैसे और career के त्यागको तो मैं त्याग ही नहीं समझता। अुनकी ओर मेरी रुचि कभी थी ही नहीं। लेकिन अंग्रेजी साहित्यका तो पूरा-पूरा शौक था। पर मैंने ठान लिया कि यह भी मुझे छोड़ना ही चाहिये।

मैं समझ गया। मैंने फिट्ज जेरल्ड अुसी समय अेक तरफ रख दिया।

*　　　　*　　　　*

बापूके अिस अुपदेशका मैं पूरा पालन नहीं कर सका किन्तु फिट्ज जेरल्ड तो फिर कभी पूरा हुआ ही नहीं। सामान्य तौर पर कह सकता हूँ कि जब तक गुजराती बोलने-लिखनेकी शक्ति नहीं आयी तब तक मैंने काफी अंग्रेजी किताबें नहीं पढ़ीं। गुजराती

सीखनेके लिअे मुझे कोशिश नहीं करनी पड़ी। यह तो गुजराती वातावरणमें रहनेसे और गांधीजीके पेश पड़नेसे ही मुझे आने लगी। मैं गुजराती लिखने लगा अुस समय अगर कोअी गुजराती शब्द नहीं मिलता तो अुस जगह आसान संस्कृत शब्द बिठा देता। फलतः मेरी गुजराती शैली आसान होते हुअे भी संस्कृत-मधुर मीठी बन गयी। मैंने अुसीको लेकर गुजरातके विद्वानों और आम जनताके बीच प्रवेश किया।

बापूकी सुहबतका मुख्य लाभ यह हुआ कि जिस प्रेम और लगनसे पहले मैं अंग्रेजी शब्द ढूंढ़ता था और हरअेक शब्दकी प्रकृति और खूबी समझनेकी कोशिश करता था वह सब मैंने गुजरातीकी ओर मोड़ दिया।

१२

शरारती पेन्सिल

सन् १९१५ का दिसम्बर होगा। बम्बअीमें कांग्रेसका अधिवेशन था। बापू अपने आश्रमवासियोंके साथ स्थानीय मारवाड़ी विद्यालयमें ठहरे थे। मैं दूसरी जगह ठहरा था लेकिन बहुतसा समय बापूके पास ही गुजारता था। अेक दिन अुन्हें कहीं जाना था। डेस्क परकी सब चीजें वे संभालकर रखने लगे। देखा तो कोअी चीज वे ढूंढ़ रहे हैं बड़े परेशान हैं। मैंने पूछा — बापूजी क्या ढूंढ़ रहे हैं?

मेरी पेन्सिल। छोटीसी है।

अुनका कष्ट और समय बचानेके लिअे मैं अपनी जेबसे अेक पेन्सिल निकालकर अुन्हें देने लगा। बापू बोले — नहीं नहीं मेरी वही छोटी पेन्सिल मुझे चाहिये। मैंने कहा — आप अिसे लीजिये मैं आपकी पेन्सिल ढूंढ़कर रखूंगा। आपका वक्त नाहक जाता ही रहा है। अिस बात पर बापूने कहा — वह छोटी पेन्सिल मैं खो नहीं सकता। तुम्हें मालूम है वह पेन्सिल मुझे मद्रासमें नटेसनके

छोटे लड़केने दी थी? कितने प्यारसे लाया था वह! अुसे मैं कैसे खो सकता हूँ?

फिर हम दोनोंने अुस सफरकी पेन्सिलकी तलाश की। कहीं छिप गयी थी। मिली तभी बापूको शान्ति हुआी। मैंने देखा तो अिंचसे कुछ कम ही होगी। अितनी छोटीसी पेन्सिल प्यारसे बापूको देनेवाले अुस लड़केका चित्र मैं अपने मनमें खींचने लगा।

१३

पैदल ही रास्ता पकड़ा

अेक समय बापू महाराष्ट्रका दौरा कर रहे थे। मीरजमें अुनका अेक छोटासा कार्यक्रम था। वह तो पूरा हो गया। लेकिन लोगोंकी अिच्छा थी कि वे कुछ अधिक रहें। जब देखा कि बापू मानते नहीं तो अुन्होंने भारतमें प्रचलित मशहूर ढंगसे आग्रह करना चाहा। समय हो गया तो भी मोटर नहीं आयी।

बापू बेचैन हो गये। लोगोंसे पूछा तो कहने लगे — मोटर बिगड़ गयी है। बापूका धीरज टूट गया बोले — मुझे तो अिसी वक्त अगले मुकामके लिअे रवाना होना चाहिये। मैं यहां नहीं रह सकता। अितना कहकर अुन्होंने पैदल ही रास्ता पकड़ा। कुछ स्वयं सेवक अुनके साथ हो लिये। बापूने अुनसे पूछा अगले मुकामका रास्ता किधरसे जाता है?

अभी भी अुन लोगोंकी परीक्षा पूरी नहीं हुआी थी। अुन्होंने गलत दिशा बतला दी।

अुन दिनों बापू जूते नहीं पहनते थे। [illegible] देहान्तके बाद बापूने जो अेक साल जूते न पहननेका व्रत लिया था शायद अुसी वक्तके दिन थे।

बापूने जब देखा कि रास्ता आगे नहीं है, तो अुसी दिशामें खेतमें होकर जाने लगे। पैरोंमें कांटे चुभ गये पर रुके नहीं। तब तो स्वयंसेवक शरमाये। अुन्हें दुःख हुआ। अुन्होंने क्षमा मांगी और

रास्ता बताया और अेक दो आदमियोंको दौड़ाकर मोटरका प्रबन्ध करनेके लिये तैयार हो गये।

यह बात मैंने मीरतवाले श्री पुरुषीक कानगड़ेसे सुनी थी।

१४

लोकमान्यका शानदार स्वागत

लोकमान्यका अेक छोटासा जीवन-चरित्र राष्ट्रीय शिक्षणके आचार्य श्री आपटे गुरुजीने मराठीमें प्रकाशित किया है। अुसकी प्रस्तावनामें श्री दादासाहब मावलंकरने नीचेकी बात लिखी है:

१९१५ में अहमदाबादमें कांग्रेसकी प्रान्तीय परिषद् थी। अुन दिनों यह परिषद् नरम दलके हाथमें थी; हालांकि परिषद्की कार्रवाई चलानेका काम नवयुवक ही करते थे। मि० जिन्ना अध्यक्ष थे। अुनका जलूस निकलनेवाला था। स्वागत-समितिने लोकमान्य तिलकको भी निमंत्रण भेजा था। अुन्होंने आना स्वीकार भी किया था। युवकवर्ग चाहता था कि लोकमान्यका भी अेक जुलूस निकले। लेकिन परिषद्के सर्वेसर्वा जिसके लिये तैयार नहीं थे। लोकमान्य गरम दलके जो ठहरे। अुन्होंने दलील की: फिर तो सब नेताओंका जुलूस निकालना होगा।

गरज यह कि परिषद्की ओरसे लोकमान्यका स्वागत नहीं हो सका। नवयुवक हतोत्साह हो गये।

अुन दिनों गांधीजीका राजनीतिक आन्दोलनमें कुछ स्थान नहीं था। वे नये नये महात्मा बने थे। यहां तक कि परिषद्के सभ्य भी नहीं थे। जब अुन्होंने सुना कि लोकमान्यका सार्वजनिक स्वागत नहीं हो रहा है तो अुन्होंने अपने दस्तखतसे अेक पत्रिका छपवाकर अुसकी हजारों प्रतियां अहमदाबादमें बंटवा दीं। अुसमें लिखा था: 'यह कि लोकमान्य जैसे अलौकिक राष्ट्रपुरुष हमारे शहरमें पधार रहे हैं। अनका स्वागत करनेके लिये मैं स्टेशन जा रहा हूं। नगरवासियोंका धर्म है कि वे भी वहां उपस्थित रहें।'

असत्य निकल ही जाता है। मैं जिनको जानता हूं अुनमें तीन आदमी पूरे-पूरे सत्यवादी हैं अेक प्रोफेसर कर्वे दूसरे शंकरराव लवाटे (ये मद्य-निषेधका कार्य करते थे।) और तीसरे   । बापू आगे बोले — सत्यनिष्ठ लोग हमारे लिये तीर्थ-जैसे हैं। सत्याग्रह आश्रमकी स्थापना सत्यकी अुपासनाके लिये ही हुआी है। अैसे आश्रममें कोआी सत्यनिष्ठ मूर्ति पधारे, तो हमारे लिये वह मंगल दिन है।

बेचारे कर्वे तो घबरा ही गये। कुछ जवाब ही नहीं दे सके। कहने लगे— गांधीजी आपने मुझे अच्छा झेंपाया। आपके सामने मैं कौन चीज हूं?

१७

सत्याग्रही जो ठहरे!

आश्रमके प्रारम्भकी बात है। हम कोचरबमें रहते थे। हमारे बंगलेके सामने रास्तेके अुस पार अेक कुआं था अुससे पानी लाते थे। आश्रममें कोआी नौकर नहीं थे। सारा काम हम सब हाथसे ही करते थे।

बापूको बीच-बीचमें बाहर जाना पड़ता था। तीसरे दर्जेकी मुसाफिरी सारी रातका जागरण फिर दिन भर काम। रातको ही आराम था। पहले मैं मानता था कि बापू बिस्तर पर जाते ही सो जाते होंगे लेकिन वैसा नहीं था। वहां भी पूज्य बाके साथ अस्पृश्यता निवारण पर चर्चा चलती। आश्रममें अेक हरिजन-कुटुम्ब दाखिल हुआ था। बाको अनका हाथका खाना मंजूर नहीं था। जिसलिये बाकी [illegible] पर [illegible] थी लेकिन बापूको यह भी कैसे सहन हो [illegible] आश्रममें छुआछूत नहीं चल सकती। अगर तुम्हें [illegible] है तो [illegible] रहा। मेरे साथ नहीं [illegible] जिस तरह [illegible] चलती [illegible] मगर [illegible] समझाते — क्यों [illegible] था। फिर

यहां क्यों नहीं चलता? वा कहतीं — वह परदेश था। वहांकी बात दूसरी थी। यहां हम अपने देशमें हैं। अपने समाजकी मर्यादा कैसे तोड़ी जा सकती है!

बिधर कुओंसे पानी भरनेका हमारा कार्यक्रम शुरू होता। बापू भी अेक घड़ा लेकर आते। अेक दिन मैंने बापूसे कहा — बापूजी रात आपको नींद नहीं मिली। आपके सिरमें दर्द भी है। सुबह मेरे साथ चक्की भी आपने देर तक पीसी है। आप जाकर थोड़ा आराम करें। पानीकी कोओ चिन्ता नहीं। लेकिन बापू कब माननेवाले थे। अुनके साथ बलीब करना व्यर्थ समझ मैं और रामदास पानी खींचने लगे और दूसरे आश्रमवासी बरतन भुठा भुठाकर आश्रममें पानी भरने लगे।

बितनेमें मौका पाकर मैं चुपचाप वहांसे आश्रममें गया और वहां जितने छोटे-मोटे बरतन थे सब भुठा लाया और साथमें आश्रम वासी सब बच्चोंको भी बुला लाया। अब मैं पानी खींचता और वहां बरतन भरा कि बापूको टालकर दूसरेको दे देता। बच्चे भी मेरी शरारतको समझ गये। दौड़ते हुअे नजदीक आकर खड़े होने लगे। बेचारे बापू अपनी बारीकी राह ही देखते रहे।

फिर स्वयं आश्रममें बरतन ढूढ़ने गये। वहां अेक भी बरतन न मिला। लेकिन सत्याग्रही या हठ्ठरे! हार कैसे मान सकते थे? वहां छोटे बच्चोंके नहानेका अेक टब मिल गया। वही भुठा लाये और कहने लगे — बिसे भर दो। मैंने कहा — बिस भार कैसे भुठायेंगे? कहने लगे — देखो तो सही कैसे भुठाता हूं। बिसे भर दो।

मैं हार गया और अेक मनके आकारका घड़ा भरकर अुनके सिर पर रख दिया।

गेरुअे कपड़े छोड़ने पड़ेंगे

आश्रमके प्रारंभके दिनोंकी बात है। अुन दिनों हमारा सत्याग्रह आश्रम अहमदाबादके पास कोचरब गांवमें था। वहां स्वामी सत्यदेव आये। मैं अुन्हें सन् १९११–१२ में अल्मोड़ामें मिल चुका था। तब वे अमेरिकासे नये-नये आये थे। अुसके बाद ही अुन्होंने देशकी आज़ादीके लिये संन्यास ग्रहण किया।

वे आश्रममें आये अुसके पहले अनेक छोटे-छोटे रोचक ग्रंथ लिख चुके थे। अुनका मशहूर नाम था सत्यदेव परिव्राजक। अुनके आश्रममें आते ही शामकी प्रार्थनाके बाद हम अुनसे तुलसीकृत रामायण सुनने लगे। हिन्दीके प्रति अुनका अनुराग देखकर बापूने अुन्हें हिन्दी प्रचारके लिये मद्रास भेजा। मद्रासमें हिन्दी प्रचारकी पहली किताब सत्यदेवजीने ही लिखी थी।

हमारा आश्रम कोचरबके किरायेके बंगलेको छोड़कर साबरमतीके किनारे अपनी निजी ज़मीन पर आ गया। वहां भी अेक समय सत्यदेवजी आये। देशकी आज़ादीके लिये बापू जो काम कर रहे थे अुसे देखकर सत्यदेवजी बहुत ही प्रसन्न हुअे। वे आश्रमके मेहमान थे। हम अपनी शक्तिभर अुनकी सेवा करते थे। अुनके खाने-पीनेका कुछ विशेष प्रबंध करना पड़ता था। अुनको संतुष्ट रखनेमें ही हमारा परम संतोष था।

अेक दिन सत्यदेवजी बापूके पास आकर कहने लगे — हम आपके आश्रममें शामिल होना चाहते हैं। आश्रमवासी बनकर रहेंगे।

बापूने कहा — अच्छी बात है। आश्रम तो आप जैसोंके लिये है। किन्तु आश्रमवासी बनने पर आपको ये गेरुवे कपड़े अुतारने पड़ेंगे।

[illegible] हमारा बड़ा [illegible]। [illegible] बिगड़े। लेकिन [illegible] नहीं कर सकते थे। कहने

लगे — यह कैसे हो सकता है? मैं संन्यासी जो हूं। बापूने कहा — मैं संन्यास छोड़नेके लिये नहीं कहता। मेरी बात समझिये।

फिर बापूने शान्तिसे अुन्हें समझाया — हमारे देशमें गेरुवे कपड़ेको देखते ही लोग भक्ति और सेवा करने लगते हैं। अब हमारा काम सेवा लेनेका नहीं सेवा करनेका है। लोगोंकी जैसी सेवा हम करना चाहते हैं वैसी सेवा अिन कपड़ोंके कारण वे आपसे नहीं लेंगे। अुलटे आपकी ही सेवा करने दौड़ेंगे। तो जो चीज हमारे सेवाके संकल्पमें अन्तरायरूप होती है, अुसे हम क्यों रखें? संन्यास तो मानसिक चीज है, संकल्पकी वस्तु है। बाह्य पोशाकसे अुसका क्या संबंध? वेशका छोड़नेसे संन्यास थोड़े ही छूटता है। कल अुठकर अगर हम देहातमें गये और वहांकी टट्टियां साफ करने लगे तो गेरुवे कपड़ेके साथ कोअी आपको यह काम नहीं करने देगा।

सत्यदेवजीको बात समझमें तो आ गअी लेकिन जंची नहीं। मेरे पास आकर कहने लगे — यह तो मुमकिन नहीं होगा। संकल्पपूर्वक जिन कपड़ोंको मैंने ग्रहण किया अुन्हें नहीं छोड़ सकता ।

१९

आश्रमका भात

बापूके सब विचार मूलग्राही होते थे। मानव-जीवनका अेक भी अंग या पहलू अैसा नहीं जिस पर अुन्होंने विचार न किया हो। दक्षिण अफ्रीकाके अुनके मित्र कैलनबैक जो कि जर्मन यहूदी थे और आर्किटेक्ट होनेके कारण खूब कमाते थे हमेशा बापूसे कहा करते थे — आपकी कोअी बात किसीको मान्य हो या न हो लेकिन यह तो हर आदमी देख सकता है कि अुसके पीछे आपका गहरा विचार और चिन्तन अवश्य होता है।

अिस बातका अनुभव मुझे भी आश्रममें आते ही हुआ था। आश्रमका भात मुझे बिलकुल ही पसन्द नहीं था। अेक दिन मैंने बापूसे कहा — यह भात है या भात? हम अैसा भात कभी नहीं खाते।

बापूने हंसकर कहा — सो तो मैं भी जानता हूं। लेकिन अिसका स्वाद तो लेकर देखो।

अिसीके साथ फिर प्रवचन शुरू हुआ

लोगोंको भात चाहिये मोगरेकी कली जैसा। पहले ही मिलमें पालिश किया हुआ चावल लेते हैं जिस परसे सारा पौष्टिक तत्त्व अुतार लिया जाता है। जहांसे अंकुर निकलता है, वहीं चावलका सबसे अधिक पौष्टिक भाग होता है। वह भाग भी चला जाता है। फिर भात सफेद हो अिसलिये पानीसे चावलको जितनी बार धोते हैं कि धोते बहुत बचे हुये तत्त्व भी निकल जाते हैं। फिर अुबालने पर जो मांड रहता है अुसे भी निकाल देते हैं। अिस तरहसे चावलको बिलकुल निःसत्त्व करके खाते हैं। वह भी अगर पूरा पका हुआ न हो तो बराबर चबाया नहीं जा सकता और आवश्यकतासे अधिक खाया जाता है। खाते ही नींद आने लगती है और फिर मरोड़ जैसी ताव निकल आती है। आश्रममें अिस तरहका चावल नहीं पकाते। पहले तो हमारा चावल होता है हाथका कूटा हुआ। अुसे हम धोते भी थोड़ा ही हैं। फिर पानीमें रख छोड़ते हैं। बादमें अिस तरह पकाते हैं कि अुसका सारा मांड और पानी अुसीमें समा जाये। पकनेके बाद अुसे अैसा बाटते हैं कि बिलकुल खोवा बन जाता है। वह स्वादमें अच्छा होता है। चीनी न डालने पर भी मीठा लगता है। कम खाया जाता है, अधिक पौष्टिक होता है, और तोंद नहीं निकलती।

अितनी सब दलील सुननेके बाद मुझमें भी श्रद्धा जागी और मैं भी अुस भातमें रस लेने लगा। बादमें अुसी भातमें मुझे भी सब गुण मालूम होने लगे और मैं अुसका बड़ा हामी बन गया!

२०

दो आत्माओंका मिलन

गोधरा-परिषद्के कुछ ही दिन पहले महादेवभाओी देसाओी गांधीजीके पास आये। अुनके अेक घनिष्ठ मित्र श्री नरहरि परीख आश्रमकी शालामें आ चुके थे। अिन दोनोंने मिलकर रविबाबूकी अेक दो बंगाली कृतियोंका गुजरातीमें अनुवाद किया था।

महादेवभाओीने अेल-अेल बी पास करनेके बाद वकालत नहीं की। कुछ दिन बम्बओीकी ओरियण्टल ट्रान्सलेटर्स ऑफिसमें काम करते रहे। अुसके बाद सर लल्लुभाओी शामळदासकी सिफारिशसे कोऑपरेटिव सोसायटीके अिन्स्पेक्टर बने। फिर किसीके प्राअिवेट सेक्रेटरी रहे। अब अुन्हें बापूकी ओर आकर्षण हुआ। वे अुनसे मिलने गोधरा आये। कहने लगे — अगर आप मुझे अपने साथ रखें तो मैं आपके सेक्रेटरीका काम कर सकूंगा। अुन्होंने अपने पुराने बॉसके लिये तैयार किया हुआ अेक अंग्रेजी व्याख्यान भी बताया। अुनके अक्षर तो मोतीके दानों-जैसे थे। अुनके चेहरेसे जवानी और निर्मलता टपक रही थी। अुन्होंने कोओी दस-पन्द्रह मिनट बातें की होंगी।

पता नहीं बापू किन बातोंसे प्रभावित हुओ या फिर अुन्होंने महादेवभाओीकी चिरकी आत्माको यूं ही सीधी पहचान ली अुन्होंने अुसी समय कह दिया — तुम मेरे साथ आ सकते हो। महादेवभाओीने बीस बरसके लिये अपनी सेवा देनेका वादा किया। बस अितनेमें ही दो आत्माओंकी शादी हो गयी। महादेवभाओीने पूछा — मैं कबसे काम शुरू करूं? बापूने कहा — तुम्हारा काम शुरू हो चुका। यहींसे मेरे साथ मुसाफिरीमें चलो। महादेवभाओी बोले — घर होकर आअूं तो अच्छा हो। बापूने कहा — नहीं कोओी जरूरत नहीं यह सब बादमें हो सकेगा।

कुछ दिन बाद महादेवभाओीसे मेरी बातें हो रही थीं। वे कहने लगे — अेक वक्त बापूजी किसीसे मिलने गये। वे तो कुर्सी पर बैठ गये मैं फर्श पर बैठा। बापू बोले — यह ठीक नहीं

मेरे साथ दूसरी कुर्सी पर बैठो। मेरी हिम्मत न हुअी। तब अुन्होंने डाँटकर कहा — जमानेका ढंग भी तुम्हें सीखना चाहिये। अुठो, बैठो अिस कुर्सी पर। मैं शरमाता-शरमाता अुठकर कुर्सी पर बैठ गया।

मैंने हँसते हुअे कहा — मगनभूकी तरह ही न?

२१

भयग्रस्त मनुष्य अहिंसक हो ही नहीं सकता

कोचरबसे हटकर आश्रमकी स्थापना साबरमतीके किनारे नये वाडज गाँवके पास हुअी। प्रारंभमें हम दो-चार तंबुओंमें ही रहते थे। झोंपड़ियाँ अुसके बाद बनीं।

आश्रम-भूमि पर हम लोग आ पहुँचे हैं अिसका समाचार सबसे पहले आसपासके चोरोंको मिला। वे रातको हमारे स्वागतके लिअे आने लगे। शरीफ लोग जब मिलने आते हैं तो भेंट-सौगात दे जाते हैं। लेकिन चोरोंका कानून अुलटा है। वे कुछ न कुछ स्वेच्छासे भेंटमें ले जाते हैं। फलतः हमने रातको पहरा देना शुरू किया। मैं अकसर रातको अेक बजेसे तीन बजे तक पहरा देता था। पहली रातकी कुछ नींद लेनेके बाद शरीर प्रसन्न रहता था। और पिछली रातकी गंभीर शांति ध्यानके लिअे अनुकूल रहती थी। अुपनिषद्के मंत्र बोलते-बोलते मैं आश्रमकी सारी जमीनका चक्कर लगाया करता था।

कुछ दिनके बाद बापू अपने दौरेसे लौटे। शामकी प्रार्थनाके बाद चर्चाके लिअे अुन्होंने चोरोंका सवाल लिया। काफी चर्चा हुअी। फिर बापू बोले — अगर मगनलाल (गांधीजीके भतीजे और आश्रमके व्यवस्थापक) चाहें तो मैं अुनके लिअे सरकारसे लाअिसेन्स लेकर बन्दूक खरीद दूँ। लोग टीका-टिप्पणी करें कि ये अहिंसक लोग बन्दूक क्यों रखते हैं तो अुनको जवाब देनेके लिअे मैं यहाँ बैठा ही हूँ।

अिस पर भी कुछ चर्चा हुअी। बापूने कहा — हम सब लोग — स्त्री पुरुष बच्चे — यहां भयभीत दशामें रहें, अिससे यह डर है कि हम बन्दूकसे अपनी रक्षा करें। भयग्रस्त मनुष्य अहिंसक हो ही नहीं सकता। डरके मारे मनसे निर्वीर्य हिंसा करते रहनेके बजाय हम चोरोंको डर दिखायें यही बेहतर है।

अिस पर राय ली गयी। मैंने अिसका विरोध किया। सबको ताज्जुब हुआ। मैं महाराष्ट्रीय बापूसे भी बढ़कर अहिंसक कबसे हो गया यही भाव सबके चेहरों पर था। मैंने कहा — अहिंसाके जमानेमें मैं अिसका विरोध नहीं कर रहा हूं। मेरी दलील यह है कि आज सरकारके दरबारमें बापूजीकी अिज्जत व कीमत है। वह बापूजीको अपना खैरख्वाह समझती है। अिसलिये हमें अेककी जगह चार रायफलें मिल जायगी। किन्तु देशके करोड़ों किसानोंको ये हथियार कहांसे मिलेंगे? हमारे किसानोंको जब बन्दूकके बिना आत्मरक्षा करनी पड़ती है, तो अुसी मर्यादामें रहकर हमें भी अपनी रक्षा करनी चाहिये।

बापूको मेरी दलील जंची होगी। बन्दूकका प्रस्ताव वैसा ही रह गया।

अुसके बाद जब सरकारने बापूसे युद्धकार्यमें मदद देनेके लिये प्रार्थना की और बापूने खेड़ा जिलेमें रंगरूट भरती करनेका काम शुरू किया तब अुन्होंने सरकारसे लिखा-पढ़ी करके खेड़ा जिलेके किसानोंको बन्दूकके लाअिसेन्स भी काफी संख्यामें दिलवाये।

अिस दिन मैंने यह बात सुनी मुझे बड़ा संतोष हुआ।

२२

सिर्फ श्रद्धाकी कमी

आश्रममें तंबुओंमें रहनेके हमारे दिन थे। अहमदाबादके विनीत पक्षके नेता सर रमणभाई नीलकंठ बापूसे मिलने आये। बातचीतमें अुन्होंने बापूसे पूछा — महाराष्ट्रके बारेमें और तिलकके बारेमें आपके क्या खयाल हैं? बापू बोले — तिलक महाराज तो बड़े ही कुशल राजनीतिज्ञ हैं। जिस होमरूल लीगके कामको ही देखिये। तिलकके पासे कितने ठीक पड़े हैं! और महाराष्ट्र! अुसके बारेमें क्या कहूं? जहां तिलक जैसे लोग हैं जहां राष्ट्रसेवाके लिये जीवन अर्पण करनेकी सुन्दर परंपरा चली आ रही है, वहांका क्या कहना? ये लोग जो काम हाथमें लेते हैं, अुसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।

किसी औरसे बातचीत करते हुअे बापूने कहा था — अगर मेरी अहिंसाकी बात मैं महाराष्ट्रको समझा सका तो फिर आगेकी कुछ भी चिन्ता करनेकी जरूरत न रहेगी। जितनी कार्यशक्ति अुस प्रान्तमें है। किन्तु क्या किया जाय महाराष्ट्रमें श्रद्धाकी कमी है।

२३

बछड़ेको मरण-दान

आश्रमके प्रारम्भके दिनोंमें आसपास हमें अच्छा दूध नहीं मिलता था। अिसलिये हमने अपना प्रबन्ध कर लिया। अच्छी-अच्छी गायें और भैंस रख ली।

कुछ दिनों बाद बापूने हमें समझाया कि हमें गोरक्षा करनी है। भैंसोंको रखकर हम गायको नहीं बचा सकते। दोनोंको आश्रय देकर हम दोनोंका नाश कर रहे हैं। गायकी सबसे बड़ी प्रतिस्पर्धी है भैंस। बैल अपनी सेवाके बल पर बच जाता है और भैंस अपने दूधकी चिकनाईके बल पर। बाकी रही गाय और भैंसके पाड़े।

तो गाय कत्ल की जाती है और भैंसके पाड़े बचपनमें ही मार डाले जाते हैं।

नतीजा यह हुआ कि आश्रमसे सब भैंसें हटा दी गयीं। केवल गोशाला ही रही।

* * *

अेक दिन गायका अेक बछड़ा बीमार हुआ। हम लोगोंने अुसकी दवाके लिअे जितनी कोशिशें हो सकती थीं की। देहातसे पशुओंके जानकार आये। वेटरनरी डॉक्टर आये। जितना हो सकता था सब कुछ किया। किन्तु बछड़ा ठीक नहीं हुआ।

बछड़ेके अन्तिम कष्टको देखकर बापूने हम लोगोंके सामने प्रस्ताव रखा कि अिस मूक जानवरको अिस तरह पीड़ा सहन करने देना पातकरूप है। अुसे मृत्युका विश्राम ही देना चाहिये।

अिस पर बड़ी चर्चा चली। श्री वल्लभभाअी अहमदाबादसे आये। कहने लगे — बछड़ा तो दो-तीन दिनमें आप ही मर जायगा किन्तु यदि आप अुसे मार डालेंगे तो नाहक अपयश मोल लेंगे। देश भरके हिन्दू समाजमें खलबली मचेगी। अभी फंड अिकट्ठा करने हम बम्बअी जा रहे हैं। वहां हमें कोअी कौड़ी भी नहीं देगा। हमारा बहुतसा काम रुक जायगा।

बापूने सब कुछ ध्यानसे सुना और अपनी कठिनाअी पेश करते हुअे कहा — आपकी बात सब सही है। लेकिन बछड़ेका दुःख देखते हम कैसे बैठ सकते हैं? हम अुसकी जो अंतिम सेवा कर सकते हैं वह न करें तो धर्मच्युत होंगे।

असी बातोंमें वल्लभभाअी बापूसे कभी वादविवाद नहीं करते थे। वे चुपचाप चले गये। फिर बापूने हम सब आश्रमवासियोंको बुलाया। हमारी राय ली। मैंने कहा — आप जो करते हैं सो तो ठीक ही है। किन्तु अगर मुझे अपनी राय देनी है, तो मैं गोशालामें जाकर बछड़ेको प्रत्यक्ष देख लूं तभी राय दे सकता हूं। मैं गो-शालामें गया। बछड़ा बेहोश पड़ा था। मैं कुछ तय नहीं कर पाया। अिसलिअे वहां थोड़ा ठहरा। बादमें जब देखा कि बछड़ा और

जोरसे टांगे झटक रहा है, तो मैं बापूके पास गया और कहा — मैं आपके साथ पूर्णतया सहमत हूं। बापूने किसीको चिट्ठी लिख कर गोली चलानेवाले आदमियोंको बुलाया। आगंतुकने कहा — गोलीसे मारनेकी जरूरत नहीं। डॉक्टरोंके पास अैसा अिन्जेक्शन रहता है, जिसे लगाते ही अेक क्षणमें प्राणी शांत हो जाता है। अिस पर अेक पारसी डॉक्टर बुलवाया गया। अुसने अुस पीड़ित बछड़ेको 'मरण-दान' दिया।

अिस पर देशभरमें खूब हो-हल्ला मचा। बापूको कभी लेख लिखने पड़े। सारा हिन्दू समाज जड़-मूलसे हिल गया। अपनी अनन्य धर्मनिष्ठा और गोभक्तिके कारण ही बापू अिस आन्दोलनमें बच सके।

२४

किसीकी अिज्जतको खतरा नहीं

आत्मकथा के बारेमें अेक बार चर्चा करते हुअे मैंने कहा — बापूजी आपने अपनी आत्मकथा मे बहुत ही कंजूसी की है। कितनी ही अच्छी बातें छोड़ दी हैं। जहां आपने आत्मकथा पूरी की है अुसके आगेकी बातें आप शायद ही लिखेंगे। अुसकी बात मैं नहीं करता। लेकिन अगर छूटी हुअी बातें ही लिख दें तो आत्मकथा जैसा अेक और बड़ा समान्तर ग्रन्थ तैयार हो जाय। बापू कहने लगे — अैसा चाहते हो कि सब बातें मैं स्वयं ही लिखूं। जो तुम जानते हो तुम लिखना।

मैंने कहा — कहीं-कहीं तो अैसा मालूम होता है कि आपने जान-बूझकर काट छांट की है। अपने विरुद्धकी बातें तो आपने काफी तादाद लिखी है। लेकिन औरोंके बारेमें अैसा नहीं किया है। जैसे दक्षिण अफ्रीकामें आपके घर पर रहते हुअे आपकी अनुपस्थितिमें आपका मित्र अेक वेश्याको ले आया था अुसका वर्णन तो ठीक है। लेकिन आपने यह नहीं लिखा कि वह व्यक्ति वही मुसलमान था

जिसने हाथीस्कूलके दिनोंमें आपको मांस खानेकी ओर प्रवृत्त किया था और जिसके कारण आपने घरमें चोरी भी की थी।

बापूने कहा — तुम्हारी बात ठीक है। जान-बूझकर ही यह मैंने छोड़ दिया है। मुझे तो आत्मकथा लिखनी थी। अुसमें अिस बातका जिक्र जरूरी नहीं था। दूसरी बात यह है कि वह आदमी अभी जीवित है। कुछ लोग अुसका-मेरा संबंध जानते भी हैं। दोनों प्रसंग अेक होनेसे अुसके प्रति अुन लोगोंके मनमें घृणा बढ़ सकती थी।

हर मनुष्यके लिअे बापूके मनमें कितना कारुण्य है, यह देखकर मुझे अेक पुरानी बातका स्मरण हो आया।

•

बनारस हिन्दू युनिवर्सिटीवाले बापूके भाषणके बाद अखबारोंमें बापू और श्रीमती बेसेंटके बारेमें लंबी-चौड़ी और तीखी चर्चा चल पड़ी थी। अुसी सिलसिलेमें बंबअीके अिण्डियन सोशल रिफ़ॉर्मर में श्री नटराजन्ने बापूके बारेमें लिखा था Everyone's honour is safe in his hands. — बापूके हाथोंमें किसीकी भी अिज्जतको खतरा नहीं है।

बापूके चरित्रका यह पहलू नटराजन्ने ही कैसे सुन्दर शब्दोंमें व्यक्त किया है।

किसी प्रसंगके साथ अेक और प्रसंग याद आता है।

अेक प्रमुख मुस्लिम कार्यकर्ताके बारेमें बातें हो रही थी। मैंने अुसके किसी अनुचित सार्वजनिक व्यवहारका जिक्र किया। बापूने दुःखके साथ कहा — तबसे मेरे मनमें अुसकी पहले जैसी कीमत नहीं रही। लेकिन अुससे क्या? अुसका कुछ नुकसान नहीं होता। मेरे मनमें किसीकी कीमत बढ़ी तो क्या और घटी तो क्या? मेरा प्रेम थोड़े ही कम होनेवाला है?

२५

आश्रमकी शालाका प्रारंभ

मुझे बापूने आश्रममें आश्रमवासीके तौर पर नहीं किन्तु राष्ट्रीय शाला चलानेवाले अेक शिक्षकके तौर पर बुलाया था। श्री किशोरलाल मशरूवाला और श्री नरहरि परीख भी अिसी तरह आये थे। पर मामासाहब फड़के और श्री विनोबा भावे आश्रमवासी बननेके लिये आश्रममें आये थे। हम राष्ट्रीय शिक्षकों पर आश्रमका कोअी बंधन नहीं था। आश्रमके व्रत भी हमारे लिये अनिवार्य नहीं थे। फिर भी आहिस्ता-आहिस्ता पता नहीं कब और कैसे हम आश्रमवासी बन गये।

बापू अहमदाबादसे चम्पारन जा रहे थे। मैं अुन्हें बड़ोदा स्टेशन पर मिला। अुन्होंने मुझसे पूछा — चम्पारन कहां है, जानते हो?

भारतवर्षमें बहुत ही कम लोग अैसे होंगे जो अुन दिनों अिस प्रश्नका जवाब दे सकते। लेकिन मैं तो राष्ट्रीय शिक्षक था। यदि मैं जवाब नहीं दे पाता तो मेरे लिये बड़ी शरमकी बात होती। खुशकिस्मतीसे मैं जब मुजफ्फरपुर होकर नेपालकी यात्राके लिये गया था तब वहां मैंने चम्पारनका नाम सुन लिया था। मैंने कहा — मैं ठीक ठीक तो नहीं कह सकता लेकिन अुत्तर बिहारमें कहीं है। चम्पारन कोअी शहर है या जिला यह मैं नहीं कह सकता। जितना जानता हूं कि नैमिषारण्य या दण्डकारण्यके जैसा कोअी जंगल नहीं है। (चम्पारण्यका नाम अुस दिन मैंने नहीं सुना था।)

बापू खुश हो गये। फिर मैंने कहा — आप तो आश्रममें राष्ट्रीय शाला चलाना चाहते हैं और स्वयं चम्पारन जा रहे हैं। अुसकी नींव तो आपको ही डालनी है। [illegible] आश्रम हम आपकी सलाहकी जरूरत [illegible] बापूने जवाब दिया — अभी तो प्रारम्भ ही करना है। मुझे [illegible] नहीं लगता है। कुछ बिगड़ जायेगा तो हम सुधारेंगे [illegible] जवाबसे मन समाधान नहीं हुआ। फिर बापू बोले

— अभी तो आश्रमके मुश्किल ही दिन हैं। मैं बहुत दिन दूर नहीं रह सकता। हर पखवाड़े अेक बार आश्रममें जरूर आ जाञूँगा। यह सुनकर मुझे जितना सन्तोष हुआ अुतना ही आश्चर्य भी। कहाँ अहमदाबाद और कहाँ चम्पारन! मेरे खयालमें भी नहीं था कि ये राजनीतिक नेता अपने छोटे आश्रमके लिअे और हमारी छोटीसी शालाके लिअे हर पखवाड़े जितना कष्ट अुठाकर और जितना खर्च करके चम्पारनसे आश्रम आयेंगे। मैं बहुत ही खुश हुआ। मैंने मन ही मन कहा कि जब आश्रम-जीवन और शालाकी व्यवस्थाका आपके मनमें जितना महत्त्व है, तो मुझे कोअी चिन्ता नहीं। हम तन तोड़ काम करेंगे।

बापूने जो कहा था सो कर भी दिखाया। वे हर पखवाड़े आश्रम आते थे।

२६
गोकीबहनको जवाब

बापूकी अेक अपनी बहन हैं। बापूने जब दक्षिण अफ्रीकामें आश्रम खोला तो अपना सर्वस्व वहाँके आश्रमको यानी सेवाको दे दिया। जब हिन्दुस्तान आये तो यहाँके अपने घरका हक भी छोड़ दिया। रिश्तेदारोंको बुलाकर अुसकी लिखा-पढ़ी कर दी और अपने चारों लड़कोंके हस्ताक्षर भी अुस पर करवा दिये। अिस तरह वे पूर्ण अकिंचन बन गये।

अब गोकीबहन (बापूकी बहन — अुनका असली नाम रलियात बहन था।) के खर्चका क्या हो? अपनी बहनके लिअे बापू कभी किसीसे पैसे नहीं मांगते। फिर भी अुन्होंने अपने पुराने मित्र डॉ॰ प्राणजीवनदास मेहतासे कहा कि गोकीबहनको मासिक १ रुपया भेजा करें।

कुछ दिनोंके बाद गोकीबहनकी लड़की विधवा हो गअी और माँके साथ रहने लगी। गोकीबहनने बापूको लिखा कि अब खर्च

बढ़ गया है। अुसे पूरा करनेके लिये हमें पड़ोसियोंका अनाज पीसनेका काम करना पड़ता है। बापूने जवाबमें लिखा — आटा पीसना बहुत अच्छा है। अिससे दोनोंका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। हम भी आश्रममें आटा पीसते हैं। और लिखा — जब भी चाहो तुम दोनोंको आश्रममें आकर रहने और बने सो जनसेवा करनेका पूरा अधिकार है। जैसे हम रहते हैं वैसे ही तुम भी रहोगी। मैं घर पर कुछ नहीं भेज सकता। न अपने मित्रोंसे ही कह सकता हूँ।

जो बहन आटा पीसनेकी मजदूरी कर सकती है, अुसे आश्रम-जीवन कठिन नहीं मालूम हो सकता। लेकिन आश्रममें तो हरिजन भी हैं न? अुनके साथ रहना खाना पीना पुराने ढंगके लोगोंसे कैसे हो!

बहन नहीं आयी। सिर्फ अेक बार बापूसे मिलने आयी थीं।

२७
गांधीजी — लोकमान्यकी दृष्टिमें

मण्डालेसे लौटनेके बाद लोकमान्य तिलकने कांग्रेसमें फिरसे प्रवेश करनेका निश्चय किया। अुन्होंने बेलगांवकी प्रान्तीय पोलिटिकल कान्फरेन्समें अपने पक्षके लोगोंको समझानेकी कोशिश की। मेरे आग्रह और श्री गंगाधरराव देशपांडेके आमंत्रणके कारण बापू भी अस कान्फरेन्समें आये थे।

हम लोग लोकमान्य तिलकके अनुयायी थे, किन्तु बापूकी तेजस्विता, राष्ट्रभक्ति और चारित्र्य-शुद्धि पर मुग्ध थे। मैं तो तबसे अुनका हो गया था और गंगाधररावको अुनकी ओर खींचनेका प्रयत्न कर रहा था।

हमारा विचार था कि तिलक और गांधी अगर अेक-दूसरेको पहचान सकें तो देशका बहुत बड़ा काम होगा। हमने अैसी व्यवस्था करनी चाही कि लोकमान्य और बापू बिलकुल अेकान्तमें अेक-दूसरेसे

मिल सकें। लेकिन लोकमान्यके मुकाम पर तो यह नहीं हो सकता था। अिसलिअे गंगाधरराव लोकमान्यको ही बापूके निवास-स्थान पर ले गये। अुन्हें वहां छोड़नेके बाद भी गंगाधरराव स्वयं भी वहांसे चले आये। वहां दोनोंमें क्या बातचीत हुआी यह हमें बादमें भी मालूम नहीं हुआ। सिर्फ कमरेके बाहर आकर लोकमान्यने गंगाधररावसे अितना कहा कि यह आदमी हमारा नहीं है। अिसका मार्ग भिन्न है। लेकिन यह पूरा सच्चा है। अिसके हाथों कभी भी हिन्दुस्तानका अकल्याण नहीं होगा। हमें अिस बातकी सावधानी रखनी चाहिये कि कहीं भी अिसके साथ हमारा विरोध न हो। जहां तक हो सके हमें अिसकी मदद ही करनी चाहिये।

बापूने अुस कान्फरेन्समें अपने भाषणमें अितना ही कहा था कि आप लोग कांग्रेसमें फिरसे प्रवेश करते हैं यह अच्छी बात है। किन्तु आपको सिपाहीकी हैसियतसे आना चाहिये न कि वकीलकी।

दूसरे या तीसरे दिन बेलगांवके अेक नेता भी बेळवी वकील किसी कामसे वहांके कलेक्टरके पास गये तो वह पूछने लगा — क्यों आप लोगोंने तो बैरिस्टर गांधीको बुलाया? और सुनते हैं सुनने आपको कड़वी-कड़वी बातें सुनायीं। आपको क्या होगा कि कहां अिस आदमीको बुला बैठे। श्री बेळवीने जवाब दिया — आप लोग हम हिन्दुस्तानियोंके स्वभावको नहीं पहचानते। गांधीजी तो हमारे लिअे पूज्य व्यक्ति हैं। अुन्हें हमें नसीहत देनेका अधिकार है। हमने आदरभावसे अुनका अुपदेश सुना है। आप देखेंगे कि हम लोग अुनकी कितनी कदर करते हैं। कलेक्टर बेचारा चुप हो गया।

सांप कंधे पर चढ़ा

सन् १९१७ की बात होगी। बापू आश्रममें शामकी प्रार्थनाके बाद अपने बिस्तर पर तकियेका सहारा लेकर बैठे बातें कर रहे थे। बापूको ठंड लगेगी अिस खयालसे पूज्य बाने अेक चादर चौहरी करके अुनकी पीठ पर डाल दी थी। आश्रमवासी भी रावजीभाअी पासमें बापू बातें कर रहे थे। रावजीभाअीको चादर पर अेक काली लकीर-सी दिखाअी दी। गौरसे देखा तो मालूम हुआ कि अेक बड़ा काला सांप पीछेसे आकर बापूके कन्धे तक पहुंच गया है और आगेका रास्ता तय करनेके लिअे अिधर-अुधर देख रहा है। रावजीभाअीका ध्यान भंग हुआ देखकर और अुनकी कंधेकी तरफ ताकते देखकर बापूने पूछा — क्या है, रावजीभाअी? बापूको भी भान ना हुआ था कि पीठ पर कुछ भार है। रावजीभाअीमें प्रसंगावधान अच्छा था। अुन्होंने सोचा कि जोरसे कहूंगा तो बा वगैरा सब लोग घबरा जायेंगे और चौकन्ना होनेसे सांप भी घबरा जायगा। अिसलिअे धीरेसे कहा — कुछ नहीं बापू, अेक सांप आपकी पीठ पर है। आप बिलकुल स्थिर रहें। बापूने कहा — मैं बिलकुल

होनेवाले हैं। अेक मित्रने मुझसे कहा — साप अुनके कन्धे तक ही चढ़ा था। अगर सिर तक चढ़ता तो जरूर वे हिन्दुस्तानके चक्रवर्ती सम्राट हो जाते।

अेक दिन जिस घटनाका स्मरण होने पर मैंने बापूसे पूछा कि जब सांप आपके शरीर पर चढ़ा तो आपके मनमें क्या क्या हुआ? वे बोले — अेक क्षणके लिअे तो मैं घबरा गया था लेकिन सिर्फ सुनी अेक क्षणके लिअे। बादमें तुरन्त संभल गया। फिर कुछ नहीं लगा। विचार आने लगे कि अगर जिस सांपने मुझे काटा तो मैं सबसे यही कहूंगा कि कमसे कम जिसे मत मारो। आप लोग किसी भी सांपको देखते ही अुसे मारनेको अुताअ हो जाते हैं और न मैंने वैसा करनेसे आपमें से किसीको अभी तक रोका है। लेकिन जिस सांपने मुझे काटा है अुसे तो अभयदान मिलना ही चाहिये।

२९

सन्त-वचन पर श्रद्धा

हमने आश्रममें शिवाजी-अुत्सव मनाया। श्री नारायणरावजी बारेमें वचन बाले। श्री विनोबाका और मेरा भाषण हुआ। हमारे भाषणोंमें शिवाजीके बारेमें रामदास तुकाराम मोरोपंत आदि संतों और कवियोंने जो कुछ कहा है अुसका जिक्र था। अैतिहासिक विवेचन भी काफी था।

अन्तमें बापूसे दो शब्द बोलनेके लिअे कहा गया। बापूके शब्द थे — अितिहास क्या कहता है, जिसकी ओर मैं ध्यान नहीं देना चाहता। मेरी तो सन्तोंके वचनों पर श्रद्धा है। यदि सन्त लोग शिवाजीको जनक-जैसा कहते हैं अुन्हें धर्मावतार मानते हैं, तो मेरे लिअे बस है। जिससे अधिक प्रमाणकी आवश्यकता नहीं।

३०

गुजरात राजकीय परिषद्

सन् १९१५ में बापूजी गुजरातमें आकर बसे और 'हम भी कुछ हैं' असी अस्मिता गुजरातमें जाग्रत हुअी। अिसके पहले बम्बअी प्रान्तीय कान्फरेन्सके अधिवेशन हुआ करते थे जिनमें सिन्धी गुजराती महाराष्ट्रीय और कर्नाटकी सब प्रदेशके लोग आते थे। देशके सरकारी प्रान्त ही कांग्रेसके प्रान्त थे। यह जानकर कि गांधीजी भाषाके अनुसार प्रान्त बनानेके पक्षमें हैं चन्द गुजराती कार्यकर्ताओंने गुजरात प्रान्तीय पोलिटिकल कान्फरेन्सकी स्थापना करनी चाही। वे गांधीजीके पास आये। गांधीजीने अपनी शर्तें यानी अपनी कार्यपद्धति अुनके सामने रखी। कार्यकर्ताओंने असे स्वीकार किया तब गांधीजीने अुसका अध्यक्ष बनना मंजूर किया।

खूबी यह थी कि किसीको यह खयाल तक नहीं हुआ कि हम जो बम्बअी प्रान्तीय कान्फरेन्सका अिस तरह विकेन्द्रीकरण करने जा रहे हैं अुसके लिअे अुसकी अिजाजत लेनी चाहिये या कांग्रेससे पूछना चाहिये। तब तक कांग्रेस अितनी संगठित नहीं थी।

३१
ओक बेहूदी प्रथाका अन्त

मैं भी बापूके साथ गोहाटी गया था। विषय-निर्धारिणी कमेटीमें जिन प्रस्तावोंकी चर्चा की जानेवाली थी अुनका मसौदा बनाकर वहांके कार्यकर्ताओंने गांधीजीके सामने रख दिया।

अुसमें पहला प्रस्ताव था — हिज़के बादशाहके प्रति हम राजनिष्ठा प्रकट करते हैं, अित्यादि। अुस ज़मानेमें हर राजनीतिक सभाका मंगलाचरण अैसे ही प्रस्तावोंसे हुआ करता था।

गांधीजीने प्रस्ताव पढ़ा और अुसे फाड़ डाला। कहने लगे — अैसा प्रस्ताव पास करना बेहूदापन है। जब तक हम बगावत नहीं करते राजनिष्ठ हैं ही। अुसका अैलान करनेकी ज़रूरत क्या? किसी स्त्रीने कभी अपने पतिके सामने पतिव्रता होनेका अैलान किया है? अुसने शादी की अिसका अर्थ ही यह है कि वह पतिव्रता है।

कार्यकर्ता अवाक हो गये। अुनकी मुद्रा देखकर बापूने कहा — अगर आपसे कोअी पूछे कि राजनिष्ठाके प्रस्तावका क्या हुआ तो बेधड़क मेरा नाम लेकर कहिये कि गांधीने हमें रोक दिया।

३२
देशी शब्दोंका आग्रह

अुस परिषद्में शायद विरमगामके बारेमें ओक प्रस्ताव पास हुआ था जिसे अध्यक्षकी हैसियतसे गांधीजीको वाअिसरायके पास भेजना था। गांधीजीने तुरन्त ओक तार लिखवाया जिसके नीचे अपने नामके बाद अध्यक्ष गुजरात राजकीय परिषद् शब्द रखे। मैंने कहा — बेचारा वाअिसराय ये देशी शब्द क्या जाने? बापूने जवाब दिया — अगर अुन्हें यहां राज करना है तो हमारी भाषा वे सीख लें या किसी दुभाषियेको अपने पास रखें जो अुन्हें समझाया करे। अस्सी बरससे ही तो वे राज कर रहे हैं।

आखिर तार वैसा ही गया और अुसका जवाब भी ठीक-ठीक मिला।

टोकरीमें कागजके टुकड़े ढूंढने लगे। टुकड़े आसानीसे कैसे मिलते? बापूने कहा — जाने दो अुसके बिना काम चल जायगा। लेकिन महादेवभाओी माननेवाले थोड़े ही थे। अुन्होंने टोकरी जमीन पर अुलटायी और अुस कागजका अेक-अेक टुकड़ा बीनने लगे। बापू बहुत नाराज हुओ। बोले — यह क्या कर रहे हो महादेव? सब लोग प्रार्थनाके लिओ अिकट्ठे होकर तुम्हारी राह देख रहे हैं। मैं कहता हूं अुसके बिना चलेगा। महादेवभाओीने सुनी-अनसुनी की। वे अपने बीने हुओ टुकड़े सिलसिलेसे जमाने लगे। अुनका कपाल पसीनेसे तर हो रहा था। जब सारा खत जम गया और अुसकी नकल हो गयी, तब कहीं वे आकर हमारे साथ प्रार्थनामें शामिल हुओ।

बापूजीके काममें अुनकी अैसी और अितनी ही निष्ठा जीवनभर रही।

१६

'तुम्हारा काम यहां नहीं'

श्री किशोरलाल मशरूवाला अकोलामें वकालत करते थे। श्री ठक्करबापाका अुन पर कुछ प्रभाव था। मशरूवालाजीने सोचा कि देशसेवाका अच्छा मौका है। वे चम्पारनमें गांधीजीके पास चले गये क्योंकि गांधीजीने स्वयंसेवकोंके लिअे अपील निकाली थी। गांधीजीने देखा कि अुनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, अुन्हें दमाका रोग है। साथ-साथ यह भी देखा कि आदमी बड़े कामका है। थोड़ी बातचीत होते ही कहा — तुम्हारा काम यहां नहीं है। आश्रममें मैंने अेक शाला खोली है। वहां सांकलचंदभाई हैं, काका हैं, फूलचन्द और पीपटलाल हैं। अुनकी मददके लिअे जाओ। आज ही चल दो यहांसे। यहां रहोगे तो मुझे तुम्हारी चिन्ता करनी पड़ेगी और मुझ पर नाहक बोझ बढ़ेगा।

बेचारे क्या करते? सीधे आ गये आश्रममें और हमेशाके लिअे गांधीजीके हो गये।

१७

छोटी-छोटी बातोंकी चिन्ता

चम्पारनसे अेक दिन बापूका पत्र आया। अुन दिनों हमारा आश्रम कोचरबमें अेक किरायेके बंगलेमें था। पत्रमें लिखा था

अब वहां बारिश शुरू हुई होगी। न हुई हो तो जल्दी होगी। तब हवाकी दिशा बदल जायगी। अिसलिअे आज तक जिस गड्ढेमें पाखानेके डब्बे खाली किये जाते थे वहां आअिन्दा न किये जायं नहीं तो अुधरकी हवासे बदबू आनेकी संभावना है। अिसलिअे पुराने गड्ढे भर दिये जायं और दूसरी जगह नये गड्ढे खोदे जायं।

अिस पत्रको देखकर मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। बापू चम्पारनमें आकाश-पातालका काम भी करते हैं और आश्रमकी अिन छोटी-छोटी

टोकरीमें कागजके टुकड़े ढूंढने लगे। टुकड़े आसानीसे कैसे मिलते? बापूने कहा — जाने दो अुसके बिना काम चल जायगा। लेकिन महादेवभाओी माननेवाले थोड़े ही थे। अुन्होंने टोकरी जमीन पर अुलटा दी और अुस खतका अेक-अेक टुकड़ा बीनने लगे। बापू बहुत नाराज हुअे। बोले — यह क्या कर रहे हो महादेव? सब लोग प्रार्थनाके लिअे अिकट्ठे होकर तुम्हारी राह देख रहे हैं। मैं कहता हूं अुसके बिना चलेगा। महादेवभाओीने सुनी-अनसुनी की। वे अपने बीने हुअे टुकड़े सिलसिलेसे जमाने लगे। अुनका कपाल पसीनेसे तर हो रहा था। जब सारा खत जम गया और अुसकी नकल हो गयी तब कहीं वे आकर हमारे साथ प्रार्थनामें शामिल हुअे।

बापूजीके काममें अुनकी अैसी और अितनी ही निष्ठा जीवनभर रही।

६५

सन्निपात भी कैसा!

दक्षिण अफ्रीकासे हिन्दुस्तान लौटे बापूको बहुत दिन नहीं हुअे थे। किसी कारणसे अुन्हें बम्बअी आना पड़ा। वहां बुखार आ गया। वे श्री रेवाशंकरभाओीके मणिभुवनमें ठहरे थे। वहां महादेवभाओी अुनकी सेवामें थे। अेक दिन बुखार अितना चढ़ा कि सन्निपात हो गया। रातमें महादेवभाओीको जगाकर बापू कहने लगे — महादेव, ये बंगाली लोग कलकत्तेमें कालीके नामसे कालीघाटके मन्दिरमें पशु-हत्या करते हैं। अुन्हें कैसे समझाया जाय कि यह धर्म नहीं अधर्म है चल हम दोनों जाकर सत्याग्रह करें अुन्हें रोकें। फिर चिढ़े हुअे बंगाली ब्राह्मण वहां हम पर टूट पड़ेंगे और हमारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। अिस पशु-हत्याको रोकनेमें यदि हमारे प्राण भी चले जायं तो क्या बुरा है

यह बात मैंने खुद महादेवभाओीके मुंहसे ही सुनी थी।

३६

'तुम्हारा काम यहां नहीं'

श्री किशोरलाल मशरूवाला अकोलामें वकालत करते थे। श्री ठक्करबापाका अुन पर कुछ प्रभाव था। मशरूवालाजीने सोचा कि देशसेवाका अच्छा मौका है। वे चम्पारनमें गांधीजीके पास चले गये क्योंकि गांधीजीने स्वयंसेवकोंके लिये अपील निकाली थी। गांधीजीने देखा कि अुनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है, अुन्हें दमाका रोग है। साथ-साथ यह भी देखा कि आदमी बड़े कामका है। थोड़ी बातचीत होते ही कहा — तुम्हारा काम यहां नहीं है। आश्रममें मैंने अेक शाला खोली है। वहां [illegible] हैं, काका हैं, फूलचन्द और पोपटलाल हैं। अुनकी मददके लिये जाओ। आज ही चल दो यहांसे। यहां रहोगे तो मुझे तुम्हारी चिन्ता करनी पड़ेगी और मुझ पर नाहक बोझ बढ़ेगा।

बेचारे क्या करते? सीधे आ गये आश्रममें और हमेशाके लिये गांधीजीके हो गये।

३७

छोटी-छोटी बातोंकी चिन्ता

चम्पारनसे अेक दिन बापूका पत्र आया। अुन दिनों हमारा आश्रम कोचरबमें अेक किरायेके बंगलेमें था। पत्रमें लिखा था:

अब वहां बारिश शुरू हुई होगी। न हुई हो तो जल्दी होगी। अब हवाकी दिशा बदल जायगी। अिसलिये आज तक जिस गड्ढेमें पाखानेके डब्बे खाली किये जाते थे वहां आअिन्दा न किये जायं, नहीं तो अुधरकी हवासे बदबू आनेकी संभावना है। अिसलिये पुराने गड्ढे भर दिये जायं और दक्खनी जगह नये गड्ढे खोदे जायं।

अिस पत्रको देखकर मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। बापू चम्पारनमें बड़े महत्वका काम भी करते हैं और आश्रमकी अिन छोटी-छोटी

बातोंकी भी फिक्र रखते हैं। मुझे नेपोलियनके वे वचन याद आ गये जिनका आशय है: युद्धमें वही आदमी सदा विजयी होता है, जो छोटी-छोटी तफसीलकी बातोंको सोचकर अुनका अुपाय और अिन्तजाम कर रखता है। साथ-साथ तो मार्टीनोका भी अेक वचन याद आया Trifles make perfection and perfection is not a trifle. — छोटी-छोटी बातें मिलकर पूर्णता बन सकती है, और पूर्णता कोअी छोटी बात नहीं है।

१८

सादगी, स्वावलम्बन और ब्रह्मचर्य

सादगीसे रहना और अपने हाथसे काम करना अिन दोनों बातोंके लिअे बापूको किसी विशेष प्रयाससे अपने मनको तैयार करना पड़ा हो अैसा नहीं लगता। विलायतमें जब वे विद्यार्थी थे तब अन्नाहार (शाकाहार)के होटलोंको ढूंढ़ते-ढूंढ़ते चाहे जितनी दूर पैदल ही चले जाते थे। बादमें तो अपना भोजन वे हाथसे ही पकाने लगे। अिस स्वयंपाक प्रयासकी वजहसे ही श्री केशवराव देशपांडेकी और बापूकी विलायतमें दोस्ती हुअी थी। दोनों मिलकर दलिया (porridge) पकाते थे।

बापू जब बैरिस्टर होकर हिन्दुस्तान आ गये तब भी वे बम्बअीमें घरसे कोर्ट तक पैदल ही जाया करते थे।

दक्षिण अफ्रीकामें जब अुन्होंने देखा कि गोरा हज्जाम अुनके बाल काटनेको तैयार नहीं है तो अुन्होंने अुसकी खुशामद करनेके बजाय खुद ही अपने पास जैसे-तैसे काट लिये और कोर्टमें भी वैसे ही पहुंचे। गोरे बैरिस्टरोंने जब मजाक करते हुअे पूछा कि मि. गांधी क्या चूहोंने तुम्हारे बाल काट डाले हैं? तब अुन्होंने सारा किस्सा सुनाया।

अिसके बाद जब अुन्होंने टॉल्स्टॉय और रस्किनके ग्रंथ पढ़े तब तो सादगी और स्वावलम्बनकी ओर और भी झुके। खुद सुबहके

दिनोंमें बापूने अेम्बुलेन्स कोरका काम लेकर जो कष्ट अुठाया अुसका वर्णन अुन्होंने कहीं नहीं किया है। किन्तु वह सारा अितिहास रोमांचकारी है। मनुष्य-शरीर जितना सहन कर सकता है अुससे अधिक कष्ट अुठाकर अुन्होंने अेम्बुलेन्स कोरका काम किया। अुन्हीं दिनों अुनके मनमें अिस विचारका अंकुर पैदा हुआ कि जो आदमी आदर्श सेवा करना चाहता है अुसे ब्रह्मचर्यका पालन करना ही चाहिये। टॉल्स्टॉयके ग्रंथ पढ़ते हुये ब्रेड लेबर का खयाल भी अुन्हें जंच गया। अुन्हें विश्वास हो गया कि जिसे शरीरको जिन्दा रखनेके लिये अन्न खाना है गरमी-ठंडसे बचनेके लिये वस्त्र पहनना है, अुस अन्न और वस्त्रकी अुत्पत्तिमें कुछ न कुछ हिस्सा लेना ही चाहिये। यदि हरिजनोंके कष्ट दूर करने हैं तो पेशाब और टट्टी साफ करनेका काम भी हमें अपने हाथों करना चाहिये और जिस काममें वैज्ञानिक ढंग दाखिल करके सफाओीके कामको भी अुच्च आदर्श तक पहुंचाना चाहिये। यह सब अुन्होंने समझा ही नहीं अुसे अमलमें लाना भी शुरू कर दिया।

* * *

सन् १९१७में बापू चम्पारन गये। वहां जब अुन्होंने किसानोंकी कैफियतें लिखनेका काम शुरू किया तो बिहारके अनेक वकील अुनकी मददके लिये आ पहुंचे। श्री राजेन्द्रबाबू, ब्रजबाबू आदि सब अुसी समयसे बापूके साथी हैं। बापूने अुन सबको अपने साथ रहनेके लिये कहा। यह निवास अेक किस्मका आश्रम ही बन गया। वे सब वकील अुनका खर्च चलानेके लिये चन्दा देते थे। लेकिन आश्रम तो अेक कंजूस बनियेका ठहरा। हर बातकी जांच होती थी। किसी समय बहुत महंगे आम आ गये तो सबको सुनाया गया कि यहां पर जिस तरहसे खर्च नहीं किया जा सकता, जब आम सस्ते हों तभी मंगाये जायं। फिर बासन कपड़े भी अपने हाथसे धोनेका फरमान निकाला गया। यह सब करनेमें बापूका सिद्धान्त यही था कि खर्च भले ये वकील ही देते हों, लेकिन जब पैसा दे दिया गया तो वह जनताका

आ गया। मुझे हमें अेक गरीब और पीड़ित राष्ट्रके प्रतिनिधि बनकर ही काम करना चाहिये।

पर साधारण हालतमें बापू गरीबोंके रहन-सहनका कितना ही आग्रह क्यों न रखें, किसी बीमारको तो वे चाहे जितने महंगे फल लाकर देते। कभी-कभी तो मरीजको महीनों केवल फलोंके रस पर ही रखते।

२९

सांड़की तरह सींग पर

महादेवभाओ और नरहरिभाओकी घनिष्ठ मित्रता थी। आश्रमके [illegible] अेक बार महादेवभाओीने कहीं लिखा होगा कि बापू [illegible] सींगोंके लिये बांधना चाहते हैं। नरहरि [illegible] लिखा [illegible] बहुत बड़ा चालाक है। अेक बार

तरह सींग पर ही शोभनेके होते हैं। बापूजी लिखो कि हमारा पत्र आपने पढ़ा ही क्यों? अच्छा ही हुआ कि मुसमें जिससे ज्यादा कुछ नहीं लिखा था। हम युवकोंकी अपनी अलग दुनिया होती है। आपको मालूम हो जिसलिअे आपके बारेमें हम और भी जो कहते हैं वह भी यहां लिख देता हूं। मैसे ही विनोद पर तो हम जीते हैं और जिसीसे आपके प्रति हम अपनी निष्ठा बढ़ाते हैं।

जिस पत्रका अच्छा असर हुआ।

४०

जिसलिअे अकेला आया हूं

चम्पारनकी बात है। प्रजा पर होनेवाले अन्याय-अत्याचारोंकी बापूकी ओरसे होनेवाली जांचसे प्रजामें कुछ जान आ रही थी। स्थान-स्थान पर बापूने जो स्कूल खोले अुनका भी लोगों पर अच्छा असर पड़ रहा था। जिससे गोरे बड़े परेशान थे।

किसीने बापूसे कहा — यहांका निलहा सबसे दुष्ट है। वह आपको मार डालना चाहता है। अुसने आपके लिअे हत्यारे तैनात किये हैं।

सुनते ही अेक दिन रातको बापू अकेले अुसके बंगले पर पहुंच गये और कहने लगे — मैंने सुना है कि आपने मुझे मार डालनेके लिअे हत्यारे तैनात किये हैं। जिसलिअे किसीको कहे बिना मैं अकेला आया हूं।

बेचारा निलहा स्तम्भित हो गया।

अनुवादकी शुद्धिका आग्रह

बापू आश्रमकी स्थापना करके जब गुजरातमें बसे तो अुनका अपने राजनीतिक गुरु गोखलेजीके साहित्यका गुजराती अनुवाद कराना स्वाभाविक ही था। अुनके शिक्षा-विषयक लेखों और भाषणोंका अेक स्वतंत्र संग्रह प्रकाशित करना तय हुआ। अेक मशहूर शिक्षा-शास्त्रीको यह काम सौंपा गया। अनुवाद छप गया और छापने प्रस्तावनाके लिअे छपे हुअे फर्मे बापूके पास आये। अुन्होंने वे सब देख जानेके लिअे महादेवभाअीको सौंप दिये। अुन दिनों महादेवभाअी बापूके नये-नये सेक्रेटरी बने थे।

अनुवाद पढ़कर महादेवभाअीको संतोष न हुआ। अुन्होंने बापूसे कहा — न अनुवाद ठीक है न भाषा।

बापू अभिप्राय मात्रसे संतुष्ट नहीं हो जाते, तुरन्त सबूत मांगते हैं। अनके सामने अभियोग लगानेवाला भी स्वयं अभियुक्त ही बन जाता है। महादेवभाअीने कुछ अुदाहरण बतलाये। बापूने कहा — ठीक है। तुम्हारी बात समझ गया। अब यह अनुवाद नरहरिको दे दो। अुनकी स्वतंत्र राय मंगानी चाहिये। बेचारे महादेवभाअी चकित हो हुअे। लेकिन अुन्हें अपनी राय पर विश्वास था अिसलिये विशेष

अेक अेक वाक्य मिलाया। दुर्दैव बेचारे अनुवादकका कि मेरी भी वही राय रही।

जब तीनोंकी अेक ही राय रही तब तो बापू गम्भीर हो गये। कहने लगे — तो अब दूसरा रास्ता ही नहीं है। सारी आवृत्ति जला देनी चाहिये। मैं गुजरातको अैसी भेंट नहीं दे सकता।

ग्रन्थ काफी बड़ा था। न जाने कितनी हजार प्रतियां छपी थीं। बस बापूका फतवा गया कि सब फार्म जला दिये जायं रद्दीमें बेचना भी मना है! पता नहीं बेचारे अनुवादकको अुन्होंने क्या लिखा। बात वहीं खतम हुआी।

अुस अनुवादक पर जिसका जो भी असर हुआ हो लेकिन हम तीनों तो काफी डर गये। हमने तय कर लिया कि आजिन्दा जो कुछ भी लिखना हो समझ-बूझकर लिखना चाहिये। गुजरातीका और अनुवादका आदर्श कहीं भी नीचे न गिरने पाये। जब जब अिण्डिया में आनेवाले बापूके लेखोंके गुजराती अनुवादका काम हमारे जिम्मे आता तो बहुत सावधानीसे करना पड़ता था। हम आपसमें अेक-दूसरेसे सलाह करते हरअेक शब्द और भाषा-प्रयोगकी छानबीन करते अनेक ढंगसे वाक्यरचना करके देखते फिर भी यह डर तो बना ही रहता कि शायद बापूको कोअी शब्द पसन्द न आय!

*   *   *

अेक समय बापूके अेक लेखका शीर्षक था — Death Dance हम लोगोंने अुसका अनुवाद किया था। हमारा अनुवाद बुरा तो नहीं था लेकिन बापूको हमारा शीर्षक पसन्द नहीं आया। जब हमने पूछा कि आप क्या करते तो वे बोले — मरण-नृत्य। बापूका साहित्यिक ज्ञान भले ही हमसे अधिक न हो लेकिन अुनमें मार्मिकता असाधारण थी।

अुन दिनों नवजीवन में स्वामी आनन्द, महादेवभाअी नरहरिभाअी और मैं अनुवाद-कलाके आचार्य माने जाते थे। हमारे साथ श्री जुगतराम दवे चंद्रशंकर शुक्ल और दूसरे युवक भी तैयार हुअे। नवजीवन प्रेसमें यह परम्परा आज तक अखंड चली आ

रही है। अितना ही नहीं, बापूके आग्रहके कारण गुजराती वर्गमें साहित्यके आदर्शका और अनुवादकी शुद्धिका आग्रह बहुत कुछ बढ़ गया है। अिसके पहले गुजरातीमें अैसे सैकड़ों अनूदित ग्रन्थ निकल चुके थे जिनमें अंग्रेजी, बंगला या मराठीके कठिन शब्द जोड़ दिये जाते थे और कुछ वाक्योंका अधूरा या विकृत अर्थ पाया जाता था।

४२

चालीस हज़ार वापिस!

आश्रमके आरम्भके दिनोंकी बात है। बापूके पास अक्सर अेक ज्योतिषीजी आया करते थे। अुनका नाम शायद शिरवाडकर था। अुनसे अेक दिन बापूने कहा — जब आप नियमित ही आते हैं, तो आश्रमके लड़कोंको संस्कृत क्यों नहीं पढ़ाते? अिस पर वे लड़कोंको संस्कृत पढ़ाने लगे।

वे थे फलित ज्योतिषी। अहमदाबादके अनेक धनी लोगोंका अुन पर विश्वास था। सोमालालभाअी नामके किसी धनीको बापूको कुछ दान देनेकी अिच्छा हुअी। जहां तक मुझे स्मरण है, अुन्होंने ज्योतिषीजीके साथ चालीस हजार रुपये राष्ट्रीय शालाका मकान बंधवानेके लिअे भेजे थे। अुन दिनों हम आश्रममें तम्बू और टाटकी झोंपड़ियोंमें रहते थे। मकान बांधनेका सोचें अुसके पहले ही शहरमें अिन्फ्लुअेन्जा आ गया और रोज सौ दो सौ आदमी मरने लगे। बड़ा हाहाकार मच गया।

बापूने ज्योतिषीजीसे कहा — अिस साल तो हम मकान नहीं बनवाने हैं। शालाका मकान भी नहीं बनेगा। अिसलिअे सोमालाल-भाअीके दिये हुअे रुपये वापिस ले जाअिये। ज्योतिषीजीने कहा — मकान तो धन मांगता नहीं है। अिस पर बापू बोले — तो भी क्या हुआ? जिस कामके लिअे अुन्होंने पैसे दिये वह तो अभी हो ही नहीं रहा है, फिर क्या ये पैसे सम्भाले जायं? हम किसीके पैसे

संभालकर रखनेके लिअे थोड़े ही यहां बैठे हैं? ज्योतिषीजी बोले — अभी न सही लेकिन आगे तो किसी समय आत्मकथा छपेगा न? तब रुपयोंकी जरूरत होगी। बापूने कहा — क्यों नहीं? लेकिन जब छापनेका मौका आयेगा तब ये भाओी नहीं तो दूसरे कोओी देनेवाले खड़े हो जायेंगे। ज्योतिषीजीने जाकर भाओीको सारा किस्सा सुनाया। अुसने कहा — जो मैंने अेक बार दे दिया अुसे वापिस नहीं लूंगा।

४३

शाला मेरी नहीं, तुम्हारी है

आश्रमकी हमारी शाला शुरू हुओी। किशोरलाल मशरूवाला और नरहरि परीख आश्रममें आये। बापू जब चम्पारनसे पखवाड़ेमें अेक बार आते तब हमारे बीच बैठकर छोटी-मोटी सब बातोंकी चर्चा करते थे।

अेक दिन बापू कहने लगे — अेक बात स्पष्ट कर दूं। जो शाला तुम लोग चला रहे हो वह मेरी नहीं है, तुम्हारी है। लोग मुझे पहचानते हैं और मुझ पर विश्वास रखते हैं अिसलिअे शालाके खर्चका भार मैंने अुठाया है। लेकिन अिससे शाला मेरी नहीं हो जाती। जो कुछ सलाह मैं यहां देता हूं, वह सिर्फ सलाह ही है। अगर तुम्हें न जंचे तो मुझे कह दो। जो कुछ तुम्हारी समझमें आये अुसे सही मानकर बिना किसी हिचकिचाहटके अुस पर अमल करते जाओ। हां अगर मैं तुम्हारे साथ रहता और तुम जैसा शिक्षक बनकर काम करता तो तुम्हें अपनी रायका बनानेके लिअे पूरी कोशिश करता। लेकिन क्योंकि मैं शिक्षकका काम नहीं कर रहा हूं मुझे अपने खयाल तुम पर लादनेका कोओी अधिकार नहीं। तुम लोगों पर मेरा विश्वास है। तुम जो कुछ भी करोगे अुसमें खराबी नहीं होगी।

४४

पुलिस कमिश्नरकी हैरानी

सरकार जब बापूको चम्पारनसे नहीं हटा सकी तो अुसने अेक दूसरी चाल चली। लेफ्टिनेंट गवर्नर आदि बड़े-बड़े अफसरोंने बापूको बुलाकर कहा — आप तो बड़े अच्छे आदमी हैं लेकिन जो लोग आपको सहयोग दे रहे हैं वे कुटिल हैं। अुन्हें हम जानते हैं।

ये अफसर नहीं जानते थे कि बापूके साथ पेश आनेका यह सबसे बुरा तरीका है। बापूने तुरन्त कहा — आप तो अुन्हें दूरसे जानते हैं। मैं अुनके साथ दिन-रात रहता हूं। निजी अनुभवसे मैं कहता हूं कि वे लोग मुझसे कहीं ज्यादा अच्छे हैं। बुरा मैंने किसीको भी नहीं पाया।

शायद पुलिस कमिश्नर वहीं था। वह बोला — आपके साथ जो प्रोफेसर कृपालानी हैं अुनका रिकार्ड बड़ा खराब है हमारे पास। वह अेक mischief-monger (शरारती) है। Agitator (भड़कानेवाला) तो है ही।

बापूने हंसकर कहा — आप जानते हैं प्रो. कृपालानी मेरे यहां क्या काम करते हैं? वे तो मिसेज गांधीके साथ सारे समय हम सबके लिअे रसोअी बनानेमें व्यस्त रहते हैं। यहां वे कौनसी शरारत कर सकते हैं भला?

बेचारा पुलिस कमिश्नर बापूका मुंह ताकता रह गया। अुसकी समझमें नहीं आया कि बिहारके विद्यार्थियोंको भड़कानेवाला वह बड़ा प्रोफेसर गांधीजीके यहां बावर्ची बनकर कैसे रह रहा है![1]

बापूने कहा — किसी दिन आकर देखिये तो सही। बेचारेको सिर अूंचा करने तकका समय नहीं मिलता।

[1] बिहारमें रसोअियेको बावर्ची कहते हैं।

अिसके बाद जब बापूकी यह प्रख्यात जाँच शुरू हो गयी और हजारों किसान अपना दुखड़ा रोनेके लिअे अुनके पास आने लगे तब अुन्हें अनेक बार कलेक्टरको किसी न किसी कामसे खत लिखने पड़ते थे। और हर वक्त अपना खत कलेक्टरके बंगले पर बापू कृपालानीके हाथ ही भेजते थे। बेचारा गोरा हैरान रहता कि यह arch sedition-monger (बड़ा राजद्रोही) गांधीके यहां चपरासीका भी काम करता है!

४५

यह जागरूकता

जिन दिनों बापू हिन्दुस्तानमें आकर काम करने लगे अुस वक्त सरकारके दिलमें अुनकी बड़ी अिज्जत थी। अुसने अुन्हें कैसरे-हिन्द मेडल भी दिया। जब मेडल आश्रममें आया मैंने अुसे हाथमें लेकर देखा। सोनेका काफी मोटा और भारी था। अुसकी शकल दोनों ओरसे रखे हुअे बड़े जैसी थी। मैंने कहा — बापू आपने साम्राज्य की बहुत मदद की है। अुस साम्राज्य-निष्ठाके बदले आपको यह मिला है। सरकार आपको अपने जालमें फंसाना चाहती है। बापू हंस पड़े। बोले — क्या तुम भी अैसा ही मानते हो?

मैं नहीं जानता था कि कैसरे-हिन्द मेडल सिर्फ Humanitarian Service (मानव-दयाके काम)के लिअे दिया जाता है। बापूने मुझे बतलाया। मैंने फिर कहा — है तो बड़ा कीमती। आप शायद अिसे बेचकर अिसके पैसे देशसेवाके कार्यमें लगायेंगे। आप तो अैसी कभी चीजें बेच चुके हैं। जवाब अितना ही मिला — नहीं अिसे बेचनेका विचार नहीं है। पड़ा रहेगा।

हम तो अिस मेडलकी बात भूल ही गये और बापू जल्दी आश्रमसे चम्पारन चले गये। वहांके किसानोंके दुःखकी कहानी सुनकर अुन्हें जांच करनी थी। लेकिन वहांकी सरकारने बापूको बिहार प्रांत

छोड़कर चले जानेकी आज्ञा दी। बापूने जवाब दिया — अपने देश-भाअियोंकी सेवा करनेके लिअे यहाँ आया हूँ। यहाँसे हटनेकी जिम्मेदारी मैं अपने सिर पर नहीं लेता। अुस जवाबके साथ ही साथ बापूने आश्रममें भी खत लिखा कि सरकारका दिया हुआ तमगा आश्रममें पड़ा हुआ है अुसे तुरन्त वाअिसरॉयके पास भेज दो। अगर सरकारकी निगाहमें मेरी मानव-सेवाकी कदर नहीं है तो मैं अुसे कैसे रख सकता हूँ।

बापूकी यह जागरूकता जिसे गीता परिभाषामें स्मृति कहते हैं देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ।

४६

बूढ़ेका जादू

शंकरलाल बैंकर और वल्लभभाई पटेल दोनोंके मुँहसे भिन्न-भिन्न समय पर मैंने सुना कि गांधीजीके साथ अुनका प्रथम परिचय कैसे हुआ।

शंकरलालजीका बयान है — हम लोग विल्सन कॉलेजमें पढ़ते थे। बम्बअीमें तभीसे कुछ राजनीतिक कार्य भी करते थे। तभीसे हर आन्दोलनमें कुछ न कुछ हिस्सा लेते ही थे। (शंकरलाल बैंकर और जीवतराम कृपालानी विल्सन कॉलेजमें समकालीन थे और कॉलेजके झगड़ोंमें अेक-दूसरेसे परिचित थे।) आगे चलकर मैं और अुमर सोबानी दोनोंने मिलकर होमरूल लीगका काम जोरसे चलाया। अेक दिन सुना कि गांधी नामका कोअी आदमी देशमें आया है। वह कुछ करना चाहता है। अुसे हम कहाँ तक exploit कर सकते हैं अपने काममें ला सकते हैं यह देखनेके लिअे हम अुसके पास गये।

गांधीजी जमीन पर बैठे थे। हम जाकर कुर्सी पर बैठ गये। बड़े patronizing ढंगसे हमने बात की। लेकिन जब लौटे तो हम ही अुनसे प्रभावित हो गये थे। अुन दिनों बम्बअीकी राजनीति

अन्ध अनुयायी

अेक बार श्री वल्लभभाओको मैंने विद्यापीठमें विद्यार्थियोंके सामने भाषणके लिअे बुलाया था। बातचीत करते करते वे आत्मकथाके सूरमें — वृत्तिमें — आ गये। अुन्होंने यही विषय ले लिया। कहने लगे — विलायतसे लौटनेके बाद मैं अपनी प्रैक्टिस और पैसे कमानेमें मशगूल रहा। देशकी राजनीतिका निरीक्षण तो करता था लेकिन कोअी भी नेता आदर्श तक पहुंचनेवाला नहीं दिखाअी दिया। जितने थे वे सब बकवास करनेवाले थे। अिसलिअे मैं तो रोज शामको वकीलोंके क्लबमें जाता और ताश खेलता था। सिगार-बीड़ी फूंकना ही मेरा अेकमात्र आनन्द था। अिस बीच यदि कोअी वक्ता आ ही निकलता तो अुसकी दिल्लगी करनेमें मुझे बड़ा लुत्फ आता।

अेक दिन हमारे क्लबमें गांधीजी आये। अिनके बारेमें कुछ पढ़ा तो था ही। अिनका जो व्याख्यान हुआ वह मैंने दिल्लगीकी वृत्तिसे ही सुना। वे बातें करते थे मैं सिगरेटका धुआं निकालता था। लेकिन आखिरमें देखा कि यह आदमी बातें करके बैठनेवाला नहीं है कुछ काम करना चाहता है। तब विचार आया कि देखें तो सही आदमी कैसा है। मैंने अुनसे संपर्क बढ़ाया। अुनके सिद्धांतों पर तो मैंने ध्यान नहीं दिया। हिंसा-अहिंसासे मेरा कुछ मतलब नहीं था। आदमी सच्चा है, देशके लिअे अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है, देशकी आजादीकी अिसे सच्ची लगन है और अपना काम जानता है अितना मेरे लिअे काफी था।

खेड़ा जिलेमें महसूल-तहकूबीका झगड़ा हमने चलाया। गुजरात-सभा यह काम अपने सिर लेनेको तैयार नहीं थी। गांधीजीने सत्याग्रह-सभा स्थापित की और काम शुरू किया। अुस वक्तसे मैंने अपनी सेवा गांधीजीको अर्पण की। तभीसे अुनका होकर रहा हूं। लोग मुझे अुनका अन्ध अनुयायी कहते हैं, अुसकी मुझे शरम नहीं। जब मैंने अुनका नेतृत्व स्वीकारा तब यह भी सोच लिया था कि

नहीं तोड़ेंगे — अैसी वृत्ति मजदूरोंमें अगर पैदा करनी है, तो स्वयं ही अुन्हें भूखका पाठ भी सिखाना पड़ेगा।

मजदूरोंकी सभा बुलाओ गयी। अुसमें लोगोंको समझाते हुओ बापूने कहा — जब तक आप लोगोंको ३५ की सदी वृद्धि न मिले, आपको अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना चाहिये। आप लोग हार जायें, यह मुझे सहन नहीं होगा। मुझे साक्षी रखकर आपने प्रतिज्ञा की है। अिसलिये अब मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक आपकी टेक पूरी नहीं होगी मैं भूखा ही रहूँगा। अिसका असर बिजली-जैसा हुआ। मजदूरोंमें दैवी शक्ति आ गयी। रोज शामको बापू आपसमें चार-छह मील चलकर मजदूरोंके मुहल्लोंमें जाते और वहाँ प्रतिज्ञा-पालन और अहिंसा-पालनका महत्त्व समझाते। अुनके बीच पढ़नेके लिअ रोज अेक नयी पत्रिका भी छपवाते।

बापूके अुपवासकी बात सुनते ही महादेवभाओीने और मैंने बापूके साथ अुपवास करनेका सोचा। बापू नहीं खाते तो हम कैसे खा सकते हैं? महादेवभाओीने बापूके सामने अपना अिरादा जाहिर किया। अुन्होंने मना किया। पर महादेवभाओी नहीं माने। चर्चा और दलीलके लिअ समय नहीं था। बापू गुस्सेसे बोले — देखो महादेव, मैं जानता हूँ कि तुम्हारा धर्म क्या है। जाओ खाना खाओ। नहीं खाओगे तो मैं तुम्हारा मुँह नहीं देखूँगा।

भगवान ही सच्चा गुरु

रौलेट ऐक्टके विरुद्ध बापूने जो आन्दोलन उठाया उसके पहलेकी बापूकी गंभीर बीमारीका जिक्र मैं कर चुका हूं। उसकी परेशानीके बाद सुबह बापू हम लोगोंसे मिले और हिन्दुस्तानको अहिंसाका संदेश देनेको कहा यह भी लिख चुका हूं। उसके बाद शामकी प्रार्थनामें हमारे संगीतशास्त्री नारायणराव खरेने भजन शुरू किया

"गुरु बिन कौन बतावे बाट।
बड़ा विकट यमघाट। गुरु बिन ।"

मुझे लगा कि ऐसे मौके पर यह भजन पसन्द नहीं करना चाहिये था। बापू अपनेको मृत्युके समीप पहुंचा हुआ मानते हैं। अगर ऐसे वक्त हम कहें कि आपको गुरु नहीं मिले हैं, यमघाट आप कैसे पार करेंगे तो ऐसे भजनसे बापूके मनकी शान्ति बढ़ेगी ही।

अनसूयाबहनको भी यह भजन ठीक न लगा। लेकिन उनका कारण कुछ और ही था।

कुछ भी हो बापू हमेशा गुरुकी खोजमें रहते हैं, जिस बातकी चर्चा हम [illegible] करते। गोखलेजी बापूके गुरु थे किन्तु केवल राजनीतिक [illegible] थे। फिर भी हम निःसंकोच मानते हैं कि बापूने स्वयं ऐसा अनेक बार कहा है।

आज हम विश्लेषण करते हैं तो गोखलेजीकी और बापूकी राज[illegible] काफी साम्य नहीं दीख पड़ता। मैं तो मानता हूं कि जब बापू [illegible] मिले उस वक्त उनकी विभूति-पूजाकी [illegible] थी [illegible] (Hero) चाहिये थी। [illegible] असाधारण [illegible] और उनकी [illegible] [illegible] आदर्श देख मिले। [illegible] नहीं थे।

श्रीमद् राजचन्द्र (जो बम्बअीके अेक प्रतापशाली जौहरी थे) की धर्मनिष्ठा और आत्म-प्राप्तिकी बेचैनी देखकर बापूने अुनसे बहुतसे प्रश्न पूछे थे और समाधान भी पाया था। अुससे श्रीमद् के शिष्य तो यह कहते थकते ही नहीं थे कि श्रीमद् राजचन्द्र गांधीजीके गुरु थे।

बापूने कुछ हद तक अिस बातको स्वीकार भी किया। लेकिन जब यह बात बहुत आगे बढ़ी तब अुन्हें जाहिर करना पड़ा कि मैं राजचन्द्रको मुमुक्षु जरूर मानता हूँ किन्तु साक्षात्कारी पुरुष नहीं।

* * *

किसी समय बापूने अपने अेक लेखमें लिखा था कि मैं गुरुकी खोजमें हूँ क्योंकि गुरु मिलने पर मनुष्यका अुद्धार हो ही जाता है। बस जितना लिखना था कि अुनके पास सैकड़ों चिट्ठियाँ आने लगीं। कोअी लिखता था अमुक जगह अेक बड़े महात्मा रहते हैं, वे बड़े योगी हैं, अुन्हें सब सिद्धियाँ प्राप्त हैं आप अुनके पास जाकर अुपदेश लीजिये। कोअी किसी दूसरे सत्पुरुषकी सिफारिश करता था।

यदि किसीने अपनी ही सिफारिश करते हुअे बापूके गुरु बननेकी तैयारी दिखायी हो तो मैं नहीं जानता। लेकिन बापूके अुद्धारकी जिज्ञासासे लोगोंने अुन्हें अनेक मार्ग दिखाये। अन्तमें बापूको जाहिर करना पड़ा कि जिस गुरुकी खोजमें मैं हूँ वह स्वयं भगवान ही है। भगवान ही मेरे गुरु बन सकते हैं, जिन्हें पानेके बाद कोअी साधना बाकी नहीं रहती। मेरी यह सारी जिन्दगी सारी प्रवृत्ति अुस गुरुकी खोजके लिये ही है।

जिस तरह हम आश्रमवासी गांधीजीको बापू कहते हैं अुसी तरह शान्तिनिकेतनमें लोग रविबाबूको गुरुदेव कहते थे। अब गांधीजीका यह स्वभाव था रिवाज था कि जो व्यक्ति जिस नामसे मशहूर हो जाय वही नाम वे भी स्वीकार कर लेते थे। रविबाबूका जिक्र वे गुरुदेव के नामसे करने लगे। तिलकजीको ही लीजिये। पहले बापू

अुन्हें तिलक महाराज कहते थे। बादमें जब अुन्होंने देखा कि महाराष्ट्रमें लोग अुन्हें लोकमान्य कहते हैं, तो अुन्होंने भी लोकमान्य कहना शुरू कर दिया। यही बात है मि० जिनाके बारेमें। मि० जिनाके अनुयायी अुन्हें कायदे आजम कहते थे अिसलिअे बापू भी अुनका जिक्र अुसी नामसे करने लगे। श्री वल्लभभाजी पटेलको गुजरातके कार्यकर्ता श्री मणिलाल कोठारीने सरदार कहना शुरू किया और लोग भी अुन्हें सरदार कहने लगे। बापूने यह बात सुनी तो अुन्होंने भी वही नाम चलाया।

अिन बड़े लोगोंकी बात तो छोड़ दीजिये। मैं अपने परिवारमें विद्यार्थियोंमें और मित्र-मण्डलीमें काकाके नामसे मशहूर हूँ। यहाँ तक कि जब मेरा पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर कहीं लिखा जाता है तो लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या ये दत्तात्रेय बालकृष्ण आपके कोअी रिश्तेदार हैं? बस अिस परसे बापू भी मुझे काका ही कहने लगे। अपनी चिट्ठियोंमें भी वे चिरंजीव काका से ही प्रारम्भ करते और समाप्त करते बापूके आशीर्वाद से। नामके लिअे काका शब्द केवल विशेष नाम रहा है अुसका कोअी विशेष अर्थ नहीं है। अिसी तरह रथीबाबू (रविबाबूके लड़के) को अथवा श्री विधुशेखर शास्त्रीको लिखते समय बापू रविबाबूका जिक्र गुरुदेवके नामसे ही करते क्योंकि वही नाम अुन लोगोंको प्रिय था। अिससे न जाननेवाले लोगोंने अिससे अनुमान लगाया कि गांधीजी रविबाबूको अपना गुरुदेव मानते हैं

अुन्हें तिलक महाराज कहते थे। बादमें जब अुन्होंने देखा कि महा-राष्ट्रमें लोग अुन्हें लोकमान्य कहते हैं, तो अुनने भी लोकमान्य कहना शुरू कर दिया। यही बात है मि० जिन्नाके बारेमें। मि० जिन्नाके अनुयायी अुन्हें कायदे आजम कहते थे अिसलिअे बापू भी अुनका जिक्र अुसी नामसे करने लगे। श्री वल्लभभाअी पटेलको गुजरातके धर्मकर्ता श्री मणिलाल कोठारीने सरदार कहना शुरू किया और लोग भी अुन्हें सरदार कहने लगे। बापूने यह बात सुनी तो अुन्होंने भी यही नाम चलाया।

अिन बड़े लोगोंकी बात तो छोड़ दीजिये। मैं अपने परिवारमें विद्यार्थियोंमें और मित्र-मण्डलीमें काकाके नामसे मशहूर हूँ। यहाँ तक कि जब मेरा पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर कहीं लिखा जाता है तो लोग मुझसे पूछते हैं कि क्या ये दत्तात्रेय बालकृष्ण आपके कोअी रिश्तेदार हैं? बस अिस परसे बापू भी मुझे काका ही कहने लगे। अपनी चिट्ठियोंमें भी वे चिरंजीव काका से ही प्रारंभ करते और समाप्त करते बापूके आशीर्वाद से। नामके लिअ काका शब्द केवल विशेष नाम रहा है, अुसका कोअी विशेष अर्थ नहीं है। अिसी तरह रथीबाबू (रविबाबूके लड़के) को अथवा श्री विधुशेखर शास्त्रीको लिखते समय बापू रविबाबूका जिक्र गुरुदेवके नामसे ही करते क्योंकि यही नाम अुन लोगोंको प्रिय था। अिसलिअे न जाननेवाले लोगोंने अिसका अनुमान लगाया कि गांधीजी रविबाबूको अपना गुरुदेव मानते हैं।

अिसी सिलसिलेमें अेक छोटासा प्रसंग भी यहाँ लिख देता हूँ। मैं शान्तिनिकेतन गया (सन्) तो जब पहले गुरुदेवसे मिला [illegible] तब कहा कि मैंने आपके गीतांजलि आदि अंग्रेजी ग्रंथ पढ़े हैं अब मैं आपसे कुछ आध्यात्मिक अनुभव जानना चाहता हूँ। मैं [illegible] कुछ समय बाद वे कहने लगे — लोग मुझे गुरुदेव [illegible] कहते हैं लेकिन मैं गुरुमें विश्वास नहीं करता। मैं नहीं जानता [illegible] कभी [illegible] बता सकता हूँ [illegible] किसीको मार्ग बता

हूँ। आशा करता हूँ कि तुम्हारा काम अच्छी तरहसे चल रहा होगा। स्वामी असमंजसमें पड़ गये। अैसा कार्ड क्यों आया? न मैंने किसी कठिनाअीकी शिकायत की न मेरे बारेमें किसीने शिकायत की होगी। खूब सोचमें पड़े। फिर याद आया कि नवजीवन छह महीने तक चलानेका जो वायदा किया था अुसकी मुद्दत आज ही पूरी होती है। स्वामीने कहा — बूढ़ा बनिया बड़ा चतुर है। यह मेरे वायदेका पुनरारंभ (renewal) है। मैं तो भूल ही गया था कि छह महीनेके लिअे ही यहाँ आया हूँ। लेकिन बूढ़ा भूलनेवाला नहीं। देखो किस तरह मुझे फिरसे बांधे ले रहा है! जीवतराम (कृपालानी) सही कहता है कि यह बूढ़ा बड़ा चोर है।

५२

कैसी लगन !

१९१९ की बात है। अमृतसरके अत्याचारके बाद सरकारने अत्याचारकी जांच करनेके लिअे हंटर-कमेटी नियुक्त की। कांग्रेसको अुससे संतोष नहीं हुआ। अिसलिअे कांग्रेसने अुसका बहिष्कार किया।

बहिष्कारके अलावा हम और भी कुछ कर सकते हैं, यह दूसरे लोगोंके खयालसे बाहर था। लेकिन बापूने तो कांग्रेसके द्वारा अेक स्वतंत्र जांच-कमेटी नियुक्त करवाअी और जांच शुरू की। अुस कमेटीमें चित्तरंजन दास, मोतीलाल नेहरू, श्री जयकर, अब्बास तैयबजी, बापू वगैरा कअी लोग थे। जांचका काम तीन महीने तक चला। १७ आदमियोंकी गवाही ली गअी। अुनमें से ६५ के बयान प्रकाशित किये गये। अब रिपोर्ट पेश करनी थी।

यह सारा मसाला लेकर बापू आश्रममें आये और रिपोर्ट लिखने लगे। अत्याचारके बयानोंसे वे अुबल रहे थे। रिपोर्ट लिखनेका काम दिन-रात चलने लगा। लगातार दिन और रात चौबीसों घण्टे लिखते रहते थे। रातको कोअी दो या ढाअी घण्टे सोते होंगे। दो पहरको कभी तो लिखते-लिखते अितने थक जाते कि शरीर काम करनेसे

बापूका यह कड़ा फैसला सुनकर मैं तो घबरा गया। मुझे फिक्र हुअी। यदि स्वामीने आलस्य किया हो तो बापूके सामने अुनकी प्रतिष्ठा क्या रहेगी? दूसरे दिन स्वामी आये। मैंने अुन्हें देखते ही पूछा — कल क्यों नहीं आये? बोले — मैं बम्बअीसे ठीक समय पर निकला तो था लेकिन ट्रेनमें मुझे बुखार आ गया। अिस लिअे सूरतमें अुतरना पड़ा। बहनके यहाँ गया कुछ दवा ली थोड़ा आराम किया और आज आया हूँ। मैंने अुन्हें पिछले दिनके बापूके शब्द कहे। बापूको भी स्वामीकी देरीका कारण बतलाया। वे बोले — मैंने तो मान ही लिया था कि अैसा कुछ हुआ होगा। नहीं तो आते कैसे नहीं?

५१
चतुर बनिया

अुसी दिन स्वामीने नवजीवन प्रेसका चार्ज ले लिया और अैसी लगनसे कार्यमें जुट गये मानो वे भी अुस प्रेसके अेक पुर्जे ही हों। फिर तो बड़े-बड़े आन्दोलन शुरू हुअे। हम सब लोग बापूके काममें लीन हो गये। हमें न दिन सूझता था न रात।

अेक दिन मैं प्रेसमें गया। देखता हूँ कि स्वामी दस्तूरके मुताबिक अपना काम कर रहे हैं। अुनका अेक गिलास पास रखा है। अच्छे पक्के केले सामने पड़े हैं। और प्रेसके प्रूफ अेकके बाद अेक हाथमें आ रहे हैं। वे बायें हाथसे केलेका अेक कौर तोड़ते हैं और दाहिने हाथसे प्रूफ सुधारते हैं। अेक प्रूफ हाथसे गया कि झट अुनका गिलास मुँहसे लगा लिया। अेक घूँट पिया और फिर लगे प्रूफ देखने। तीन-तीन चार-चार दिन तक न वे नहाते थे न कहीं जाते थे। यहाँ काम नहीं मानके लिअे अेक घड़ी।

अैसी हालतमें सुदूर भारतके किसी स्थानसे बापूका अेक कार्ड स्वामीके नाम आया। अुसमें सिर्फ अिस मतलबकी कुछ बातें थीं कि तुमने नवजीवनका काम सम्भाल लिया है अिसलिअे मैं निश्चिन्त

बापूके अिसी सिद्धान्तको मैंने जो अेक वैज्ञानिक रूप दिया है, यहाँ थोड़ेमें देता हूं।

लिपियां दो प्रकारकी होती हैं। चित्र-लिपि और अक्षर-लिपि। चित्र-लिपि सीधी होती है। जो आकृति जैसी देखी वैसी ही अुसकी प्रतिकृति अुतार देना चित्र लिपिका काम है। कोअी कुर्सी या घड़ा या आम देखकर अुसकी हूबहू आकृति अुतार देना चित्र-लिपिका काम हुआ।

अक्षर लिपिका काम कठिन और भारी है। किसी चीजका हम नाम रखते हैं। मुँहसे ध्वनि निकालकर नामको व्यक्त करते हैं। कान अुस ध्वनिको ग्रहण करते हैं और मन अुस चीजकी आकृति समझ लेता है। जिस तरह किसी ध्वनिको किसी आकृतिके द्वारा व्यक्त करना ही अक्षर-लिपि है। अिसे तो सर्पविद्या ही कहना चाहिये।

छोटे बच्चोंके लिये आकृति देखकर आकृति खींचना आसान है। अिसलिये अुन्हें चित्र-लिपि पहले सिखानी चाहिये बादमें अक्षर लिपि।

शिक्षाका प्रारंभ अक्षरोंके द्वारा न करते हुअे निरीक्षण परीक्षण प्रयोग रचना आदिके द्वारा करना चाहिये। और प्राथमिक चीजोंको व्यक्त करनेके लिये चित्र लिपि सिखानी चाहिये। अैसी अेक दो सालकी शिक्षाके बाद अक्षरोंका ज्ञान कराया जाय तो शिक्षण यथायोग्य होगा।

चित्र-लिपि सीखनेसे हाथकी अुंगलियों पर और कलम पर पूरा काबू आ जाता है, और मनमें जैसी आकृति हो वैसी ही अुंगलियोंसे अुतरती है। अुसके बाद लिखनेका प्रारंभ करनेसे अक्षर मोतीके दानों जैसे सुन्दर आते हैं।

कहा जाता है कि सांपके कान नहीं होते। वह आंखोंसे ही सुनता है। अेक अिन्द्रियके द्वारा दो दो काम हम भी करते हैं, जैसे जीभ द्वारा चखना और बोलना। तब सर्प भी आंखोंसे सुनता हो तो आश्चर्य नहीं। अिसलिये हमने अक्षर द्वारा आंखोंसे ध्वनिका बोध करानेकी तरकीबको सर्पविद्या कहा है। चक्षुश्रवा = आंखोंसे सुनना।

अिन्तजार कर रहा था। अेक दिन मैंने देखा बायें हाथमें कागज है, दाहिने हाथमें कलम तकिये पर टिके सोये हैं, मुँह खुला हुआ है। कुछ ही क्षण गये होंगे कि चौंक कर अुठ बैठे, मानो कोअी गुनाह करते पकड़े गये हों। अुठे और फिर लिखने लगे।

रिपोर्ट पूरी हुअी। कमेटीके सामने पेश हुअी। सब लोगोंके हस्ताक्षर हो जाने पर बापूने सब सदस्योंसे कहा — हमने हस्ताक्षर तो किये हैं लेकिन साथ ही साथ हम यह भी प्रण करें कि जब तक अपने देशमें अैसे अत्याचारोंका होना हम असम्भव न कर दें तब तक चैन नहीं लेंगे। सब सदस्योंने प्रण किया।

अिसके बादका अितिहास सबको मालूम ही है।

५३
चित्र लिपिके बाद अक्षर लिपि

अेक दिन सुलेखनकी चर्चा निकली। बापूको अपने टेढ़े-मेढ़े अक्षरोंके लिये बड़ा रंज था। अिसलिये वे सुलेखन पर विशेष जोर देते थे।

बापूके अंग्रेजी अक्षर वैसे तो खराब नहीं हैं। और जब वे ध्यानपूर्वक कोअी खास पत्र या मजमून लिखते तब तो अुनके अक्षरोंका व्यक्तित्व अपना असर किये बिना नहीं रहता। अुमरभर वे दोनों हाथोंसे लिखते। दाहिना हाथ थक जाने पर बायेंसे काम लेते। 'हिन्द-स्वराज्य' अुन्होंने विलायतसे दक्षिण अफ्रीका लौटते समय जहाजमें और जहाजके ही नाम-छापवाले कागज पर लिखी थी। यह पुस्तक ब्लाक बनाकर भी छापी गयी है। अुसमें दोनों हाथोंकी लिखावट पायी जाती है। दोनोंमें काफी भेद है। बायें हाथकी लिखावट विशेष साफ है।

बापू हमें कहा करते थे कि बच्चोंको अक्षर सिखानेके पहले आलेखन यानी ड्राअिंग सिखाना चाहिये। ड्राअिंग पर हाथ बैठ जाने पर अक्षर खराब होनेका कोअी डर ही नहीं रहता।

बापूके अिसी सिद्धान्तको मैंने जो अेक वैज्ञानिक रूप दिया है, अुसे यहां थोड़ेमें देता हूं।

लिपियां दो प्रकारकी होती हैं। चित्र-लिपि और अक्षर-लिपि। चित्र-लिपि सीधी होती है। जो आकृति जैसी देखी वैसी ही अुसकी प्रतिकृति अुतार देना चित्र-लिपिका काम है। कोअी कुर्सी या घड़ा या आम देखकर अुसकी हूबहू आकृति अुतार देना चित्र-लिपिका काम हुआ।

अक्षर लिपिका काम जटिल और भारी है। किसी चीजका हम नाम रखते हैं। मुंहसे ध्वनि निकालकर नामको व्यक्त करते हैं। कान अुन ध्वनिको ग्रहण करते हैं और मन अुस चीजकी आकृति समझ लेता है। अिस तरह किसी ध्वनिको किसी आकृतिके द्वारा व्यक्त करना ही अक्षर-लिपि है। अिसे तो सर्पविद्या* ही कहना चाहिये।

छोटे बच्चोंके लिये आकृति देखकर आकृति खींचना आसान है। अिसलिये अुन्हें चित्र लिपि पहले सिखानी चाहिये बादमें अक्षर-लिपि।

शिक्षाका प्रारंभ अक्षरोंके द्वारा न करते हुये निरीक्षण परीक्षण प्रयोग रचना आदिके द्वारा करना चाहिये। और पार्थिव चीजोंको व्यक्त करनेके लिये चित्र लिपि सिखानी चाहिये। अैसी अेक दो सालकी शिक्षाके बाद अक्षरोंका ज्ञान कराया जाय तो शिक्षण यथायोग्य होगा।

चित्र-लिपि सीखनेसे हाथकी अुंगलियों पर और कलम पर पूरा काबू आ जाता है और मनमें जैसी आकृति हो वैसी ही अुंगलियोंमें अुतरती है। अुसके बाद लिखनेका प्रारंभ करनेसे अक्षर मोतीके दानों जैसे सुन्दर आते हैं।

---

* कहा जाता है कि सांपके कान नहीं होते। वह आंखोंसे ही सुनता है। अेक अिन्द्रियके द्वारा दो दो काम हम भी करते हैं जैसे जीभ द्वारा चखना और बोलना। तब सर्प भी आंखोंसे सुनता हो तो आश्चर्य नहीं। अिसलिये हमने अक्षर द्वारा आंखोंसे ध्वनिका बोध करानेकी तरकीबको सर्पविद्या कहा है। चक्षुःश्रवा = आंखोंसे सुनना।

खिलवाड़ कर देता था। अेक दिन मैंने देखा आँखें हाथमें कागज है, दाहिने हाथमें कलम तकिये पर टिके सोये हैं मुँह खुला हुआ है। कुछ ही क्षण गये होंगे कि चौंक कर शुरू बैठे, मानो कोअी गुनाह करते पकड़े गये हों! शुरू और फिर लिखने लगे।

रिपोर्ट पूरी हुअी। कमेटीके सामने पेश हुअी। सब लोगोंके हस्ताक्षर हो जाने पर बापूने सब सदस्योंसे कहा — हमने हस्ताक्षर तो किये हैं लेकिन साथ ही साथ हम यह भी प्रण करें कि जब तक अपने देशमें अैसे अत्याचारोंका होना हम असम्भव न कर दें, तब तक चैन नहीं लेंगे। सब सदस्योंने प्रण किया।

जिसके बादका अितिहास सबको मालूम ही है।

५१

चित्र लिपिके बाद अक्षर लिपि

अेक दिन सुलेखनकी चर्चा निकली। बापूको अपने टेढ़े-मेढ़े अक्षरोंके लिये बड़ा रंज था। जिसलिये वे सुलेखन पर विशेष ज़ोर देते थे।

बापूके अक्षर अैसे तो खराब नहीं हैं। और जब वे ध्यानपूर्वक कोअी खास पत्र या मजमून लिखते तब तो अुनके अक्षरोंका व्यक्तित्व अपना असर किये बिना नहीं रहता। गुजराती वे दोनों हाथोंसे लिखते। दाहिना हाथ थक जाने पर बायेंसे काम लेते। हिन्द-स्वराज्य अुन्होंने विलायतसे दक्षिण अफ्रीका लौटते समय जहाजमें और जहाजके ही नाम-छापवाले कागज पर लिखी थी। यह पुस्तक ब्लॉक बनाकर भी छापी गयी है। अुसमें दोनों हाथोंकी लिखावट पायी जाती है। दोनोंमें काफी भेद है। बायें हाथकी लिखावट विशेष साफ है।

बापू हमें कहा करते थे कि बच्चोंको अक्षर सिखानेके पहले मालेकन यानी ड्रॉअिंग सिखाना चाहिये। ड्रॉअिंग पर हाथ बैठ जाने पर अक्षर खराब होनेका कोअी डर ही नहीं रहता।

साथ छोड़ दें तो यह दगाबाजी होगी। जिस तरह दगाबाजी करके जो भी मिले वह बापूकी नजरमें मलिन ही था। अिसीलिअे अपना शुद्ध निर्णय कमिश्नरोंसे कह सुनानेमें अुन्हें तनिक भी संकोच न हुआ।

५५
स्वराज्यके अखंड जापका व्रत

११ जुलाअी १९२० का दिन था। लोकमान्यका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है, यह सुनकर मैं बम्बअी गया था। सरदार-गृहमें जाकर मैंने लोकमान्यके दर्शन किये। दर्शनकी अिजाजत पाना आसान नहीं था। क्योंकि अुनके जीवनके वे करीब-करीब अन्तिम क्षण थे। अिजाजत पाकर मैं अन्दर गया। सांस बहुत तेजीसे चल रही थी। बम्बअीके सब बड़े-बड़े डॉक्टर अिर्द-गिर्द खड़े थे। मुझसे अुस कमरेमें ज्यादा ठहरा न गया। हृदय भर आया। मैं वहांसे लौटकर अुस कमरेमें गया जहां महाराष्ट्रके सब नेता गमगीन होकर बैठे थे। मुझे कुछ अस्वस्थ देखकर भी बापूजीने अपने पास बुलाया और असहयोगकी नीतिके बारेमें थोड़ी चर्चा की।

शामकी ही गाड़ीसे मैं अहमदाबादके लिअे रवाना हो गया। मैंने बापूसे अितना ही कहा — दर्शन हो चुका अब मैं आश्रम लौटता हूं।

अुसी रातको लोकमान्यका देहान्त हो गया। फोन पर समाचार सुनते ही बापूके मुंहसे पहला वाक्य यह निकला — अरे रे, मैंने बाबाको रोक लिया होता तो अच्छा होता।

अिसके बाद वे बहुत ही गंभीर विचारमें पड़ गये। सारी रात बिस्तर पर बैठे रहे। नजदीक दिया जल रहा था अुसे भी वैसा ही रहने दिया। दियेकी ओर ताकते हुअे सोचते ही रहे।

पिछली रातको महादेवभाअीकी आंख खुली। अुन्होंने देखा बापू तो वैसे ही बैठे हैं। अुनके पास गये। बापूके मुंहसे निकला — अब अगर मैं किसी मुश्किलमें पड़ूंगा तो श्रद्धापूर्वक किसके साथ परामर्श करूंगा? और जब कभी सारे महाराष्ट्रकी मददकी

राजनीतिक चारित्र्यका प्रश्न

पंजाबके अत्याचार, खिलाफतका मामला और स्वराज्य-प्राप्ति इन तीनों बातोंको लेकर बापूने अेक देशव्यापी आन्दोलन शुरू किया। भारतके इतिहासमें शायद यह अपूर्व आन्दोलन था जिसमें हिन्दू और मुसलमान अेक हो गये थे। यह अद्भुत दृश्य देखकर अंग्रेज भी घबरा गये। सरकारको लगा कि गांधीजीके साथ कुछ न कुछ समझौता करना ही चाहिये। वाअिसरॉयने बापूको मिलनेके लिअे बुलाया।

पंजाबका अत्याचार तो हो ही चुका था। अुसके बारेमें जनरल डायरको या अन्य किसीको सजा दिलानेकी शर्त भी बापूने पेश नहीं रखने दी थी। सरकार अपनी भूल स्वीकार कर लेती तो मामला तय हो जाता।

बाकी रही थी दो बातें। खिलाफतके बारेमें वाअिसरॉयकी दलील थी कि यह सवाल हिन्दुस्तानका नहीं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिका है। अिसमें कभी नाजुक बातें भरी हुअी हैं। अुसे छोड़ दें और केवल स्वराज्यकी बात करें तो आपसमें समझौता हो जायगा। बापूने कहा — यह नहीं हो सकता। हिन्दुस्तानके मुसलमान हिन्दुस्तानका महत्त्वपूर्ण अंग हैं। अुनके दिल पर अन्यायकी जो चोट लगी है, अुसके प्रति मैं अुदासीन नहीं रह सकता।

अभी तक समझौतेकी बात न बनी। देशके बड़े-बड़े नेताओंने [illegible] दोष दिया। अनका कहना था कि खिलाफतका [illegible] हिन्दुस्तानका है ही नहीं। अुसे छोड़ देते तो क्या हर्ज था? [illegible] स्वराज्यकी हमारी कल्पना [illegible] नहीं थी। जो कुछ मिलता अुसे ही [illegible] और बादमें राजनीतिक प्रगति [illegible] स्वराज्यसे भी बढ़कर हमारे [illegible] मुसलमानोंका साथ दिया अुनके [illegible] अब आगे चीज मिले ही अुसका

साथ छोड़ दें तो यह दगाबाजी होगी। जिस तरह दगाबाजी करके जो भी मिले वह बापूकी नजरमें मलिन ही था। मिसीजिये अपना पूज्य निर्णय साबिसरोंमसे कह सुनानेमें मुन्हें तनिक भी संकोच न हुआ।

५५
स्वराज्यके अखंड जापका व्रत

३१ जुलाभी १९२ का दिन था। लोकमान्यका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया है, यह सुनकर मैं बम्बजी गया था। सरदार-गृहमें जाकर मैंने लोकमान्यके दर्शन किये। दर्शनकी जिजाजत पाना आसान नहीं था। क्योंकि अुनके जीवनके वे करीब-करीब अन्तिम क्षण थे। जिजाजत पाकर मैं अन्दर गया। साम बहुत तेजीसे चल रही थी। बम्बजीके सब बड़े-बड़े डॉक्टर गिर्द-गिर्द खड़े थे। मुझसे अुस कमरेमें ज्यादा ठहरा न गया। हृदय भर आया। मैं वहांसे लौटकर अुस कमरेमें गया जहां महाराष्ट्रके सब नेता गमगीन होकर बैठे थे। मुझे कुछ अस्वस्थ देखकर भी बापूजी अपने अपने पास बुलाया और असहयोगकी नीतिके बारेमें थोड़ी चर्चा की।

शामकी ही गाड़ीसे मैं अहमदाबादके लिये रवाना हो गया। मैंने बापूसे जितना ही कहा — दर्शन हो चुका अब मैं आश्रम लौटता हूं।

अुसी रातको लोकमान्यका देहान्त हो गया। फोन पर समाचार सुनते ही बापूके मुंहसे सहसा वाक्य यह निकला — अरे रे, मैंने काकाको रोक लिया होता तो अच्छा होता।

जिसके बाद वे बहुत ही गंभीर विचारमें पड़ गये। सारी रात बिस्तर पर बैठे रहे। मगनदीप दिया जल रहा था अुस भी वैसा ही रहने दिया। किसीकी ओर ताकते हुअे सोचते ही रहे।

पिछली रातको महादेवभाजीकी आंख खुली। अुन्होंने देखा बापू तो बैठे ही बैठे हैं। अुनके पास गये। बापूके मुंहसे निकला — अब अपर मैं किसी मुश्किलमें पड़ूंगा तो सलाहपूर्वक किसके साथ परामर्श करूंगा? और जब कभी सारे महाराष्ट्रकी मददकी

फिर विचार किया रंगका। कौनसा रंग सिर पर शोभेगा? अेक भी पसन्द नहीं आया। आखिर यही निर्णय किया कि सफेद ही सबसे अच्छा रंग है। पसीना अुस पर जल्दी दिखायी पड़ता है, और अिसलिअे अुसे धोना ही पड़ता है। फिर धोनेमें भी तकलीफ नहीं। टोपी कलीदार होनेके कारण और सफेद होनेके कारण आदमी साफ-सुथरा आकर्षक दीख पड़ता है। यह सारा विचार करके मैंने यह टोपी बनायी। असलमें तो हमारे देशकी आबोहवाकी दृष्टिसे मुझे सोला हैट ही पसन्द है। वह अुससे सिरका आंखोंका और गरदनका रक्षण करती है। लकड़ीके भूसेकी होनेके कारण हलकी और ठंडी रहती है। सिरको कुछ हवा भी लग सकती है। आज मैं अुसका प्रचार नहीं करता अिसका कारण यही है कि अुसका आकार हमारी सारी पोशाकके साथ मेल नहीं खाता। और यूरोपियन ढंगकी होनेसे लोग अुसे अपनायेंगे भी नहीं। अगर हमारे कारीगर अुस विलायती टोपीके गुण कायम रख और आकारमें अपनी पोशाकके साथ अुसका मेल बैठा सकें तो बड़ा अुपकार होगा। हमारे कारीगर अगर सोचें तो यह काम अुनके लिअे कठिन नहीं है।

५८

अस्पृश्यताकी शर्त पर स्वराज्य भी नहीं

सन् १९२१ की बात है। अहमदाबादमें गुजरात विद्यापीठकी स्थापना हुअी। अिसमें मेरा काफी हाथ था। अुन दिनों मैं [illegible] सूत्र-जैसा काम करता था। अेक दिन विद्यापीठके नियामक-मण्डलकी बैठक थी। अुसमें मि. अेण्ड्रूज भी आये थे। अुन्होंने सवाल छेड़ा — विद्यापीठमें हरिजनोंको तो प्रवेश मिलेगा न? मैंने तुरन्त जवाब दिया — हां मिलेगा।

किन्तु हमारे नियामक-मण्डलमें अैसे लोग थे जिनकी अस्पृश्यता दूर करनेकी तैयारी नहीं थी। हमारी सम्बद्ध संस्थाओंमें अेक था मॉडल स्कूल। अुसके संचालक अिस सुधारके लिअे तैयार नहीं थे। और भी

इतना ही कह पाये कि आप मुझे यहाँ देखने नहीं आये हैं। स्वागताध्यक्षकी आवाज़ सुनने आये हैं। लेकिन अुस हो-हल्लेमें कुछ भी सुनाओ नहीं देता था। बापू कुर्सी पर खड़े हो गये। यह देखकर पागल लोग और भी पागल हो गये और टेबलकी ओर बढ़े। वहाँ ऐसा अिन्तजाम नहीं था जिससे लोगोंको काबूमें रखा जा सके। मुझे तो बापूकी जानकी भी चिन्ता होने लगी। दुश्मनोंसे तो बचा जा सकता है, लेकिन अन्ध-भक्तोंसे कैसे बचा जाय। बढ़नेवाले लोग टेबलके पासके मण्डपके खम्भे पकड़कर अूपर चढ़नेकी कोशिश करने लगे। यह तो साफ था कि अेक भी खम्भा खिसकता तो सारा मंडप नेताओंके सिर पर आ गिरता।

बापू परिस्थिति समझ गये। क्षणभरमें अुन्होंने चारों ओर देखा और दो-तीन कुर्सियोंको फाँदकर जिस तरफ सभाका विस्तार कम था अुस तरफ भीड़में कूद पड़े और तीरके समान भीड़को चीरते हुओ बाहर निकल गये। किसीको पता तक न चला।

मैंने कुर्सी पर खड़े होकर चारों ओर ध्यानसे देखा कि बापू कहीं नहीं हैं तो मैंने भी सभास्थान छोड़नेकी तैयारी की। लोगोंने जब देखा कि गांधीजी सभामें नहीं हैं तो भीड़को छटनेमें देर न लगी। मैं बड़ी कठिनाओीसे घर पहुँचा। देखता हूँ तो बापू अपने कमरेमें बैठकर आरामसे पत्र लिख रहे हैं, मानो वे सभामें गये ही न हों। जब मैंने बापूसे पूछा कि आप कैसे आये? तो वे कहने लगे — भीड़से बाहर आते ही देखा कि किसीकी गाड़ी जा रही है। मैंने अुसे रोक लिया। अुसीमें बैठकर अिस मुकाम पर आ पहुँचा।

९०

अटल नियम

१९२१ में बेजवाड़ाकी अखिल भारत कांग्रेस महासमिति (A. I. C. C.) ने तय किया था कि लोकमान्य तिलकके स्मारकमें अेक करोड़ रुपया अिकट्ठा किया जाय। अुसी सिलसिलेमें धन अिकट्ठा करनेकी कोशिश चल रही थी। अेक दिन श्री शंकरलाल बैंकरने आकर कहा — हमारे प्रान्त (बम्बअी) में जितनी मुख्य मुख्य नाटक कम्पनियाँ हैं, वे सब मिलकर अपने सबसे अच्छे नटों द्वारा किसी अच्छे नाटकका अभिनय करेंगी। अुस दिन अगर बापू थियेटरमें अुपस्थित हो जायं तो ये लोग अुस खेलकी सारी आमदनी तिलक स्वराज्य फण्डमें देनेके लिअे तैयार हैं। अुन्होंने आगे कहा — हजारोंकी नहीं लाखोंकी बात है क्योंकि टिकटोंकी मनमानी कीमत रखेंगे। बापू अेक क्षणका भी विलम्ब किये बगैर बोले — यह नहीं हो सकता। मैं कभी पेशेवर नटोंके नाटक देखने नहीं जाता। कोअी मुझे करोड़ रुपये दे, तो भी मैं अपना नियम नहीं तोड़ सकता।

शंकरलालजीका प्रस्ताव जैसाका वैसा रह गया।

९१

सायकलकी सवारी

गुजरात विद्यापीठके नियामक-मण्डलकी बैठक थी। बापूको अुसमें अुपस्थित होना था। अुनके लिअे सवारी ठीक समय पर नहीं पहुँच सकी थी। बापू ठहरे समय-पालनके अत्यन्त आग्रही। सवारी न पाकर साबरमती आश्रमसे पैदल चल पड़े। लेकिन समय पर कैसे पहुँच सकते थे? समय करीब-करीब होने आया था और आश्रमसे विद्यापीठ काफी दूर था। बीचका रास्ता निर्जन होनेसे कोअी सवारी मिलना भी सम्भव न था। कुछ दूर चलनेके बाद बापूने रास्तेमें देखा कि अेक [illegible] सायकल पर जा रहा है। बापूने अुसे रोक लिया।

कहा — सायकल दे दो मुझे विद्यापीठ जाना है। अुसने चुपचाप सायकल दे दी।

बापू किसी वक्त दक्षिण अफ्रीकामें सायकल पर चढ़े होंगे परन्तु हिन्दुस्तानमें कभी मौका ही नहीं आया था। बस सायकल पर सवार हुअे और विद्यापीठ जा पहुँचे। बापूको समय पर पहुँचते देखकर आश्चर्य तो हुआ ही। किन्तु अेक छोटी-सी धोती पहने नंगे बदन सायकल पर सवार बापूका जो दृश्य देखा वह फिर कब देखनेको मिलता?

६२
स्वदेशी धर्म — पड़ोसी धर्म

बापू जिससे बातचीत करते थे अुसके रहन-सहन अुसके धर्म अुसकी रुचि-अरुचि सबका बड़ी सावधानीसे खयाल रखते थे।

अेक दिन अेक अीसाअी भाअीका पत्र आया। अुसमें अुन्होंने स्वदेशीके बारेमें सवाल पूछा था।

बापूने जवाबमें लिखा — स्वदेशी धर्म बाअिबलके अेक अुपदेशका ही अमली स्वरूप है। अीसा मसीहने कहा है न कि जैसा प्यार तुम्हारा अपने पर रहता है, वैसा ही प्यार अपने पड़ोसी पर रखो? जब कोअी आदमी अपने पड़ोसके दुकानदारको छोड़कर किसी दूरके दुकानदारसे चीज खरीदता है तो वह अपना पड़ोसी-धर्म भूलकर स्वार्थके वश हो कितनी दूर जाता है। अुसके पड़ोसी दुकानदारने जो दुकान खोली सो अपने गिर्द-गिर्दके ग्राहकोंके आधार पर ही खोली है न? स्वदेशी धर्म कहता है कि पड़ोसीका तुम पर जो अधिकार है अुसका तुम द्रोह मत करो।

बापूका यह पत्र पढ़नेके बाद ही अपने पड़ोसीसे प्यार करो का पूरा अर्थ मैं समझ पाया।

६३

वात्सल्यमयी मांके रूपमें

नीचेकी बात महादेवभाईके मुंहसे सुनी हुई है।

अुत्तर हिन्दुस्तानमें महादेवभाई बापूके साथ मुसाफिरी कर रहे थे। चलती ट्रेनमें लिखनेका अभ्यास बापूको भी था और महादेवभाईका तो पूछना ही क्या! अेक दिन महादेवभाई शामसे जो लिखने बैठे तो पिछली रात तक लिखते ही रहे। काम खतम करके ही सोये। अब सुबह जल्दी अुठना असंभव था।

जब जागे तो देखा कि बापूने स्वयं स्टेशनके वेटिंग रूमसे जाकर अपने महादेवके लिये चाय दूध लेकर, पावरोटी मक्खन सब सजाकर ट्रे तैयार रखा है। वे स्वयं तो चाय पीते नहीं थे। लेकिन अुन्हें मालूम था कि महादेवका चायके बिना नहीं चलता। अिसलिये यह सब तैयारी करके महादेवके जागनेकी राह देखने लगे। महादेवभाई जागे तो यह सब तैयारी देखकर बड़े झेंपे। विषाद तो अिसलिये कि अुनकी चायकी तलब बापूके सामने खुल गयी। किन्तु बापूने अिधर-अुधरकी मीठी-मीठी बातें करके अुनका सारा संकोच दूर कर दिया। मतलब था कि रातकी थकान भी तो दूर होनी चाहिये।

बापू और अब्बास साहब

सन १९२२की बात है। सरकारने बापूको गिरफ्तार करके साबरमती जेलमें भेज दिया। अुन पर मुकदमा चलनेवाला था। अिस बीचके दिनोंमें कभी लोग बापूसे मिलने जाते थे।

साबरमती जेलमें अच्छे अच्छे कमरे जेलके दाहिने कोनेमें हैं। अन्हें फांसी-खोली कहते हैं क्योंकि अक्सर फांसीके कैदियोंको वहीं रखा जाता है। सुविधाके खयालसे बापूको वहीं रखा गया था।

अेक दिन मैं बापूसे वहां मिलने गया। जेलके गेट पर मुझे श्री अब्बास तैयबजी मिले। वे भी बापूसे मिलने जा रहे थे। गेट पार करके अन्दर गये और दायीं ओर मुड़ कर हम बापूके कमरेके पास पहुंचे। अब्बास साहबको देखते ही अुन्हें मिलनेके लिये बापू बरामदेमें से अुठे और सीढ़ियां अुतरने लगे। अधरसे अब्बास साहब भी तेजीसे आगे बढ़े और दोनोंका मिलन सीढ़ियों पर ही हो गया। बापूने अपना बायां हाथ अब्बास साहबकी कमरमें डाला और दाहिने हाथसे अुनकी दाढ़ी पकड़ी और गाल फुलाकर बोले बुर्रर्रर्र। अब्बास साहबने भी जवाबमें बुर्रर्रर किया। दोनों हंस पड़े। मैं अुस बुर्रर्ररका कुछ भी मतलब नहीं समझ पाया।

दांडी-कूचके दिनोंमें (सन् १ १) जब मैं अब्बास साहबके साथ साबरमती जेलमें था, तब मैंने अब्बास साहबसे पूछा कि अुस दिन बापूसे मिलते समय आप दोनोंने बुर्रर्रर किया, अुसका क्या मतलब था? अन्होंने हंसते-हंसते कहा — हम दोनों जब विलायतमें थे तब मैंने बापूको अेक किस्सा सुनाया था। अुसमें बुर्रर्रर आता था। अुन्हें मिलते समय बापूको वह याद आ गया।

अिस पर अब्बास साहबने मुझे वह सारा किस्सा सुनाया। लेकिन मैं अुसे फिर भूल गया। तब मैंने अुस बुर्रर्ररका अपना

गर्व बैठाया। वह यह था कि सन् १९२१ में तुमने जो प्रतिज्ञा की थी अुसका पालन करते-करते मैं यहां आ पहुंचा हूं अैसा बापूने सूचित किया और अब्बास साहबने जवाब दिया कि मैं भी यहां जरूर आ जाअूंगा।

जब मैंने अपना बैठाया हुआ यह अर्थ अब्बास साहबको सुनाया तो वे कहने लगे — अुस वक्त तो मेरे मनमें अैसा कुछ नहीं था लेकिन तुम्हारी बात सही है। हम दोनोंका संबंध ही अैसा है। मुझे ताज्जुब होता है कि मैं जेलमें कैसे आ गया। विशेष तो यह कि अिससे ज्यादा मैं कुछ कर सकता हूं अैसा मुझे नहीं लगता। सचमुच बापू अेक अद्भुत व्यक्ति हैं!

९५

विष चूस लिया!

१९२२में बापू पहली बार जेल गये थे। अुन्हें यरवडा जेलमें रखा गया। हिन्दू और मुसलमान दोनोंकी गांधीजीके प्रति असाधारण भक्ति है यह जानकर यरवडाके जेल सुपरिन्टेन्डेन्टने अुनका काम करनेके लिये अफ्रीकाके अेक निग्रो कैदीको नियुक्त किया। वह बेचारा हिन्दुस्तानकी कोअी भाषा ठीकसे नहीं जानता था। बहुतसा काम अिशारेसे और जो दस-बीस शब्द वह जानता था अुनसे चलाता था। गोरे अमलदारकी अपेक्षा थी कि अैसा आदमी गांधीजीकी भक्ति नहीं करेगा अुनके प्रति पक्षपात नहीं करेगा। बेचारा अमलदार! वह नहीं जानता था कि मानवहृदय सर्वत्र अेकसा ही है।

अेक दिन अुस कैदीको बिच्छूने काटा। वह रोता-चिल्लाता बापूके पास आया। कहने लगा कि साहब बिच्छूने काटा है।

किसीका दुःख देखकर बापूका हृदय तुरन्त पिघल जाता है। अेक क्षणकी भी देर किये बिना अुन्होंने अुस आदमीके हाथका वह भाग पानीसे अच्छी तरह धो लिया। चोटपर मुंह लगाया और अुसका जहर चूसने लगे। अितने जोरोंसे चूसा कि जहर

काम हो गया। अुसकी वेदना कम हो गयी। अुसके बाद बापूने और भी अिलाज किये और वह अच्छा हो गया।

अुस गरीबने जिन्दगी भरमें जितना प्रेम कभी नहीं पाया था। प्रसन्न मन अुनका दास ही बन गया। अुनके विचारों पर नाचने लगा। अुनके सब काम भक्तिसे करने लगा। अुसने देखा कि गांधीजीको सूत कातना प्रिय है। अुसने तकली अुठायी और देख देखकर स्वयं भी सूत कातने लगा। फिर तो अुसने चरखा भी चलाना शुरू किया। आगे जाकर अुनकनेकी कला भी सीख गया और बापूके लिअे पूनी बनाकर देने लगा।

सुपरिन्टेन्डेन्टने देखा कि यह तो अच्छी ही बात हो गयी। लेकिन करता क्या

६६

गुजरातीके लिअे शुद्ध कोश

मैं आश्रममें गया तब मुझे न गुजराती आती थी न हिन्दी। दोनों भाषायें मैंने सुनी तो थीं लेकिन बोलने-लिखनेका तनिक भी अभ्यास नहीं था। पढ़ाते समय अलबत्ता मैं हिन्दीमें पढ़ाता था क्योंकि वहां कोअी मेरे जितनी भी हिन्दी नहीं जानता था। मैं जानता था कि मैं सुरक्षित भूमि पर नहीं हूं अिसलिअे कोअी हिम्मत आने पर गुजरातीमें बोलने लगा। फिर जब नवजीवन में कभी कॉलम दो कॉलमकी कमी पड़ती तो स्वामी आनन्द मुझसे कुछ लिखवाकर और ठीक करके छाप देते थे। लेकिन सन् १९२२ में जब बापू जेलमें गये तब तो मुझे भागाभाग सारा नवजीवन भरना पड़ता था।

जेलमें बापूने सुना होगा कि मैं नवजीवन को ठीकसे संभाल रहा हूं अिसलिअे अेक दिन अुनका पत्र आया। अुसमें लिखा था — जिस तरह अंग्रेजीमें शब्दोंका spelling (हिज्जे) निश्चित है वैसे गुजरातीमें नहीं है। मराठी बंगला तामिल अुर्दू आदि भाषाओंमें

भी शुद्ध हिज्जोंका आग्रह मैं देखता हूँ। अेक गुजराती ही अैसी भाषा है, जिसमें हर आदमी जैसे मनमें आये वैसे हिज्जे कर लेता है। अिससे गुजराती भाषा भूत-जैसी हो गयी है। (कोशकारके अभावमें भूत हवामें भटकता रहता है।) अुसकी यह दुर्दशा दूर करनेका काम अगर तुम्हारा नहीं तो किसका है? मुझे अेक अैसा कोश बना दो जिसमें गुजरातीके सब शब्द हों और हरअेक शब्दके हिज्जे नियमके अनुसार शुद्ध हों। हिज्जेके बारेमें किसीको भी शंका हुअी तो वह तुम्हारे कोशमें देखकर शुद्ध हिज्जे लिख सकेगा। अंग्रेजीमें तो हम अैसा ही करते हैं न?

बापूकी यह बात सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गया। बादमें तो मैं भी जेलमें ले जाया गया। मेरे छूटनेके थोड़े ही दिनों बाद बापू भी छूटे। मिलने पर मैंने अुनसे कहा — बापूजी आपने मुझसे यह कैसी अपेक्षा की? न गुजराती मेरी जन्मभाषा है, न अुसके साहित्यका मैंने अध्ययन किया है। अुसका व्याकरण तो मैं जानता ही नहीं।

बापू बोले — यह सब तो ठीक है। मैंने कब कहा कि यह सब तुम्हें अकेले ही करना चाहिये। जिसकी मदद तुम्हें चाहिये लो। जिससे यह काम करा सकते हो कराओ। मैंने तो यह काम तुम्हें सौंप दिया है, तुमसे मांगूंगा। अिस चीजका महत्त्व तुम समझो और अेक भी भूल न रहे अैसा निर्दोष कोश देकर गुजरातीके हिज्जोंको व्यवस्थित बना दो। यह काम तुम्हारा है।

मैंने सिर झुकाया। कहावत है न कि संन्यासीको अगर दाढ़ी करनी हो तो सिर पर चोटी रखनेसे आरम्भ करना चाहिये? मैं गुजरातीका व्याकरण लेकर बैठा। पिछले चालीस बरसमें हिज्जोंके बारेमें जो चर्चा हुअी थी वह सब अिकट्ठी की। महादेवभाअी नरहरिभाअी और मैं — तीन आदमियोंकी कमेटी मैंने मुकर्रर की और आखिरकार अनेक मित्रोंकी मददसे पांच बरसकी मेहनतके बाद बापूको अेक शुद्ध 'जोडणी कोश'* अर्पण किया।

* हिज्जोंका कोश।

स्थितिमें बापूने शायद बेकाम ही वाक्य कहा होगा। लेकिन अुस वक्त पासके आदमीसे कहने लगे — ये कपड़े उतार दो और मेरे अपने कपड़े ला दो। अब तो अेक तपके लिये भी ये कपड़े बरदाश्त नहीं हो सकेंगे।

मैं नहीं समझता कि कार्टीका कुरता होता तो भी बापू जितने व्यग्र हो अुठते। खादीके कपड़े पहने तब कहीं अुन्हें चैन पड़ा और शान्तिसे बातें करने लगे।

६८

करोड़ों गरीबोंकी दृष्टिसे

सन् १९३४ के प्रारंभमें बापू यरवडा जेलमें बीमारीके कारण अवधिसे पहले छूट गये थे। मैं भी अपनी अेक सालकी सजा पूरी करके अुनसे मिलनेके लिये पूना गया था।

हमने छोटे बच्चोंके लिये गुजरातीकी अेक बालपोथी तैयार की थी। अुसका नाम रखा था 'बालनमाळा'। अुसकी यह खूबी थी कि वर्णमालाके दो-चार अक्षर सीखते ही बच्चे शब्द भी पढ़ने लगते। हर पृष्ठ पर बेलबूटे थे। सारी किताब चिकने आर्ट पेपर पर अनेक रंगोंमें छापी गयी थी। सजावटमें हमने कुछ कसर नहीं रखी थी। अुद्देश्य यह था कि बच्चोंको अक्षरोंके परिचयके साथ सुरुचिकी भी दीक्षा मिले। अेक प्रति पाच आनेमें बिकती थी। अुसका गुजरातने खूब स्वागत किया था। चूंकि अुसकी सारी कल्पना और अुसके हर पृष्ठकी निगरानी मेरी थी, जिसलिये मुझे अुस पर कुछ अभिमान भी था।

अेक दिन मैंने बापूसे पूछा — 'आपने बालनपाठी देखी ही होगी?' अुन्होंने कहा — 'हां देखी तो है। बहुत सुन्दर है, लेकिन किसके लिये बनायी है? तुम दरिद्र नारायणके आचार्य हो न? मुझे हिन्दुस्तानके करोड़ों गरीब बच्चोंका विचार करके देखना आप

तुम पर है। आजकी बालपोथियां अगर अेक आनेमें मिलती हों तो तुम्हारी बालपोथी दो पैसेमें मिलनी चाहिये। मैं तो कहूंगा कि अेक पैसेमें ही क्यों न मिले। तुम्हारी पोथी पांच आनेमें सस्ती है यह तो मैं देख रहा हूं। लेकिन पांच आने भी गरीब लायें कहांसे?

मैं अपने अन्धेपन पर लज्जित हो गया, हालांकि अुस चीजका मोह तो था ही। अहमदाबाद जाकर रंगबिरंगे कागज और रंगबिरंगी स्याहीका नखरा छोड़कर अुसी 'बालपोथी' का अेक नया संस्करण निकाला और अुसे पांच पैसेमें बेचना शुरू किया। फिर भी अुसे लेकर बापूके पास जानेकी मेरी हिम्मत नहीं हुअी।

बापूके अुस अुलाहनेका मुझ पर कितना असर हुआ कि बुद्ध भगवानके जीवनचरित्रका जो विद्यापीठकी ओरसे ढाअी रुपयेमें बिकता था जब नया संस्करण निकाला गया तो कागज और छपाअीका जरा भी फर्क किये बगैर हमने आठ आनेमें अुसे बेचा। बल्कि यह चरित्र गुजरातमें जितना बिका कि नवजीवन प्रकाशन मन्दिरको जरा भी घाटा नहीं आया।

५९

मैं ही अुसका गिरसप्पा हूं[1]

सन् १ ६ की बात है। बापू राजाजीके प्रबन्धके अनुसार दक्षिणमें खादी-यात्रा कर रहे थे। यात्रा करते करते हम सागर जिलेके पास पहुंचे। वहांसे गिरसप्पाका प्रपात नजदीक था। राजाजीने वहां जानेके लिअे मोटर आदिका पूरा प्रबन्ध किया था। रास्ता करीब दस बारह मीलका था। राजाजी अुनके बालबच्चे देवदास भाअी गंगाबहन वैद्य मैं मणिबहन पटेल (सरदार वल्लभभाअीकी पुत्री) वगैरा बहुतसे लोग तैयार हो गये। मैंने बापूसे प्रार्थना की कि आप भी चलिये। अुनकी अरुचि देखी तो मैंने कहा — [illegible] जब हिन्दुस्तानमें आया तो मौका मिलते ही पहले

वह गिरसप्पा देखने आया था। दुनियामें वह प्रपात सबसे अूँचा है। बापूजीने पूछा — नायगेरासे भी? अपने ज्ञानका प्रदर्शन करते हुअे मैंने कहा — नायगेरामें गिरनेवाले पानीका जत्था अथवा कार (volume) सबसे अधिक है, लेकिन अूंचाअीमें तो अुससे बड़े-बड़े सैकड़ों प्रपात हमारे यहां और दूसरे देशोंमें हैं। गिरसप्पाका पानी ९६ फुटकी अूंचाअीसे अेकदम सीधा गिरता है। दुनियामें कहीं भी जितना अूंचा प्रपात नहीं है।

मैं चाहता था कि बापू पर भी पानी चढ़ जाय। लेकिन अुन्होंने तो मुझ पर ही पानी डाल दिया। धीरेसे पूछने लगे — और आसमानसे बारिश गिरती है, वह कितनी अूंचाअीसे गिरती है? मैं मनमें झेंप गया। फिर भान हुआ कि मैं अेक स्थितप्रज्ञसे बातें कर रहा हूं। मैंने अब अुन्हें फुसलानेकी कोशिश नहीं की लेकिन दूसरा प्रस्ताव रखा — अच्छा आप नहीं आते तो न आअिये। महादेवभाअीको ही भेज दीजिये। आपके कहे बिना वे नहीं आयेंगे। बापूने बिना झिझकके कहा — महादेव नहीं आयेगा। मैं ही अुसका गिरसप्पा हूं। मुझे खयाल नहीं था कि वह अुसका 'यंग अिंडिया' का दिन है। अपने अुस तूफानी दौरेमें भी 'यंग अिंडिया' और 'नवजीवन' दो अखबार चलानेका भार वे दोनों अपने सिर लिये हुअे थे। अुस दिन वे अगर नहीं लिखते तो अखबार नहीं निकल पाते। मैं चिढ़ गया और बोला — न आप आते हैं न महादेवको भेजते हैं तो मैं भी किस लिअे जाअूं? मुझे भी नहीं जाना है। बापूने बड़ी नरमीसे समझाया — गिरसप्पा देखने जाना तुम्हारा स्वधर्म है। तुम अध्यापक हो न? वहां हो आओगे तो अपने विद्यार्थियोंको भूगोलका अेक अच्छा पाठ पढ़ा सकोगे। तुम्हें तो जाना ही चाहिये।

बचपनसे जिस गिरसप्पाकी बातें सुनता आ रहा था और जिसे देखनेके संकल्प करते करते ही मैं प्रौढ़ावस्था बड़ा हुआ था अुसे देखने जानेके लिअे किसीके अधिक आग्रह मेरे लिअे आवश्यक नहीं था। मैं तरस तो रहा ही था लेकिन बापका आशीर्वाद पाकर अब

जाना सर्वमान्य हो गया। मैं खुशी-खुशी तैयार हो गया। गिरसप्पा* देखा और कृतार्थ हुआ।

* * *

मैंने बापू पर आजी अपनी चिढ़का सारा किस्सा गुजरातीमें कहीं प्रकाशित किया है। बापूने भी अुसे पढ़ा तो होगा ही।

यद्यपि अिसके बाद कोअी १५ बरस बाद किसी कारणसे बापूने महादेवभाओको मैसूरके दीवान सर मिर्जाके पास भेजा। कोअी भी नाजुक चर्चा (negotiations) होती तो बापू महादेवभाओको ही भेजते थे। महादेवभाओ रवाना हो रहे थे अुस वक्त बापूने कहा — 'देखो मैसूर जा ही रहे हो। वहांके कामके लिये कुछ तो ठहरना ही पड़ेगा। वहां भी जल्दी लौटनेकी जरूरत नहीं है। अबकी बार गिरसप्पा जरूर देख आना। मैंने सर मिर्जाको भी लिखा है। वे तुम्हारा सब प्रबन्ध कर देंगे।'

महादेवभाओ गिरसप्पा देख आये। मैं समझता हूं कि जोग दर्शनसे अुन्हें जितना सन्तोष हुआ अुससे ज्यादा सन्तोष मुझे हुआ। और बापूको शायद यह सन्तोष हुआ होगा कि वे अेक कामसे दोनोंको सन्तुष्ट कर रहे हैं।

---

*जहां प्रपात गिरता है वहां नीचे अेक गांव है। अुसका नाम है गिरसप्पा। अुस परसे अंग्रेजोंने अुसका नाम रखा गिरसप्पा फॉल्स। असका असली नाम है जोग। पुरानी कन्नड भाषामें प्रपातको ही जोग कहते हैं। यह शरावती नदीका जोग है। शरावतीको भारंगी भी कहते हैं।

जिन सत् दियो ताहि बिसरायो!

सन् १९२९ की बात होगी। बापूजी दक्षिणकी तरफ खादीके लिये दौरा कर रहे थे। तामिलनाडका दौरा तो पूरा हो चुका था। आन्ध्रमें मोटरसे मुसाफिरी चल रही थी। हम चिकाकोल पहुंचे। रातके दस बजे होंगे। वहां पहुंचे तो देखा कि अच्छी-अच्छी कतिनोंके स्वामी-संगमका कार्यक्रम रखा गया है। चिकाकोलकी महीन खादी सारे हिन्दुस्तानमें मशहूर है। हम दिन और रातके मोटरके सफरसे थके हुए थे। हमने सोचा बापूके लिये तो कोई चारा ही नहीं। उन्हें इसमें बैठना ही पड़ेगा। हम नाहक क्यों परेशान हों? सीधे जाकर सोना ही अच्छा है। महादेवभाई और मैं अपने-अपने स्थान पर जाकर सो गये। बापूका बिस्तर लगा हुआ था। वे कब आकर सोये हमें मालूम नहीं।

सुबह ४ बजे हम प्रार्थनाके लिये उठे। हाथ-मुंह धोकर प्रार्थना शुरू करें उससे पहले बापूने पूछा — रातको सोनेके पहले क्या तुम लोगोंने प्रार्थना की थी? मैंने कहा — जब आया तो इतना थक गया था कि आते ही सो गया। प्रार्थनाका स्मरण ही न रहा। अब अभी आपने पूछा तो खयाल हुआ कि रातकी प्रार्थना रह गयी।

महादेवभाईने कहा — मैं भी सोया तो वैसे ही था। लेकिन आंख लगनेके पहले स्मरण हो आया। इसलिये बिस्तर पर बैठकर ही प्रार्थना कर ली। आपको नहीं जगाया।

फिर बापूने अपनी बात सुनायी। कहने लगे — मैं तो बारह बजे बिस्तरमें बैठा। वहांसे आकर लिखना शुरू किया था कि मैं भी प्रार्थना करना भूल गया और वहीं सो गया। फिर जब दो-ढाई बजे मेरी नींद खुली तो ख्याल हुआ कि रातकी प्रार्थना नहीं हुई। मन ऐसा अनुताप हुआ कि सारा शरीर कांपने लगा। मैं पसीनेमें

तरबतर हो गया। मुझपर बैठा खूब पश्चात्ताप किया। जिसकी कृपासे मैं जीता हूं, अपने जीवनकी साधना करता हूं, अुस भगवानको ही भूल गया! कितनी बड़ी गलती हो गयी यह! मैंने भगवानसे क्षमा मांगी। लेकिन तबसे नींद आयी ही नहीं। वैसा ही बैठा हूं।

जिसके बाद हमने सुबहकी प्रार्थना की। महादेवभाईने भजन गाया। फिर बापू बोले — मुसाफिरीमें भी हमें शामकी प्रार्थना निश्चित समय पर ही करनी चाहिये। हम सारे दिनका कार्यक्रम पूरा करके सोनेके पहले जब मौका मिले प्रार्थना करते हैं। यह गलत है। आजसे शामके ७ बजे प्रार्थना होगी फिर हम कहीं भी हों।

हमारी मोटरकी मुसाफिरी चालू तो थी ही। शामके ७ बजे हम कहीं भी हों जंगलमें या किसी बस्तीमें वहीं मोटर रोककर हम प्रार्थना करने लगे।

७१

संयमका पाठ

अुसी दौरेकी बात है। हम सुदूर दक्षिणमें नागर-कोविल पहुंचे थे। वहांसे कन्याकुमारी दूर नहीं है। जिसके पहले किसी समय बापू कन्याकुमारी हो आये थे। वहांके दृश्यसे प्रभावित भी हुअे थे। आश्रममें लौटकर कन्याकुमारीके बारेमें अुत्साहके साथ बात भी की थी।

हम नागर कोविल पहुंचे तो बापूने तुरन्त ही गृहस्वामीको बुला कर कहा — काकाको मैं कन्याकुमारी भेजना चाहता हूं। अुनके लिअे मोटरका प्रबन्ध कीजिये। अुन्होंने स्वीकार किया।

कुछ समय बाद मेरे जानेका कोअी लक्षण न देखकर अुन्होंने गृहस्वामीको फिरसे बुलाया और पूछा कि काकाके जानेका प्रबन्ध हुआ या नहीं? किसीका काम सौंपनेके बाद अुसके बारेमें फिरसे दर्याफ्त करते बापूको मैंने कभी नहीं देखा था। मैं समझ पाया कि बापू अुस स्थानका स्मरण कर कितने प्रभावित हुअे हैं। मैंने कहीं पढ़ा भी

था कि स्वामी विवेकानन्द भी यहां आकर भावावेशमें आ गये थे और समुद्रमें कूदकर कुछ दूरके अेक बड़े पत्थर तक तैरते गये थे। मैंने बापूसे पूछा — आप भी आयेंगे न? बापूने कहा — बार-बार आना मेरे नसीबमें नहीं है। अेक दफा हो आया जितना काफी है। मुझे कुछ नाराज हुआ देखकर अुन्होंने गंभीरतासे कहा — देखो कितना बड़ा आन्दोलन किये बैठा हूं। हजारों स्वयंसेवक देशके कार्यमें लगे हुये हैं। अगर मैं रमणीय दृश्य देखनेका लोभ संवरण न कर सकूं तो सबके सब स्वयंसेवक मेरा ही अनुकरण करने लगेंगे। अब हिसाब लगाओ कि किस तरह कितने लोगोंकी सेवासे देश वंचित होगा? मेरे लिये संयम रखना ही अच्छा है।

गिरमण्याका अनुभव तो मुझे था ही और बापूकी बात भी जंच गयी। मैंने कहा — ठीक है। मैं बाको साथ ले जाअूंगा। चन्द्रशंकर (मेरा सेक्रेटरी) तो आयगा ही।

हम गये। रास्तेमें शुचीन्द्रका सुन्दर मंदिर था। कन्याकुमारीके अन्तरीपके स्थान पर कुमारी पार्वतीका मन्दिर है। अुसके अन्दर हम नहीं गये क्योंकि हरिजनोंका वहां प्रवेश नहीं था। लेकिन मेरे मनमें तो यह सारा विशाल और भव्य अंतरीप ही भारत माताका बड़ा मन्दिर था। पूर्व सागर, पश्चिम सागर और दक्षिण सागर, तीनों महासागरोंका यहां सनातन मिलन था। यहां सूर्य अेक सागरसे अुगता है और दूसरे सागरमें डूबता है। भारतके पूर्व और पश्चिम दोनों किनारे यहां अेक हो जाते हैं। भारतीय यात्राकी यहां परिसमाप्ति है। समुद्रमें नहाकर मैं अेक बड़ी चट्टान पर जा बैठा और सूर्यनिरपेक्ष जो मन पर आये अुन्हें महासागरके शब्दके साथ गाने लगा। अिस प्राकृतिक और सांस्कृतिक भव्यताकी कसौटी पर मैंने बापूका जीवनपथ परखकर देखा तो सिद्ध हुआ कि अुस जीवनकी रम्यता अिससे कम नहीं है।

७२

कितनी भी कीमत देनी पड़े

श्री चित्तरंजन दास दार्जिलिंगमें बीमार थे। गांधीजी अुन्हें देखने गये। पहाड़ परसे अुतरकर अुनका दौरा फिर शुरू हुआ। जलपाअीगुड़ीसे गांधीजी और अुनके साथी दार्जिलिंग-कलकत्ता मेल पकड़कर पोड़ाजीह जानेवाले थे और वहांसे गोआलंदो जानेवाली डाक मेलमें बैठनेवाले थे। पहाड़के अेक बड़े टुकड़ेके अूपरसे टूटकर गिर जानेके कारण दार्जिलिंग-कलकत्ता मेल डेढ़ घंटा देरसे पहुंचने वाली थी। जिसलिअे अुससे समय पर पोड़ाजीह पहुंचकर डाक मेल पकड़ पानेकी कोअी संभावना नहीं थी। जिसका मतलब था ढाका जिलेके नयाबगंज गांवका कार्यक्रम चूक जाना। लेकिन क्या गांधीजी अपना वादा तोड़ सकते थे? यह अुनके स्वभावके विरुद्ध था। वहां समय पर पहुंचनेके लिअे कुछ न कुछ तो किया ही जाना चाहिये। जिसलिअे श्री सतीशबाबूकी स्पेशल ट्रेनकी सूचना अुन्होंने तुरन्त मान ली और कहा, जितनी सख्तीसे मैं वाअिसरॉयको दिये हुअे समयकी पाबन्दी रखता हूं अुतनी ही सख्तीसे मुझे हमारी जनताको दिये हुअे समयकी भी पाबन्दी रखनी चाहिये। मुझे समय पर नयाबगंज पहुंचना ही चाहिये। पार्वतीपुरसे गोआलंदो तक अेक स्पेशल ट्रेनका अिन्तजाम किया गया जिसका भाड़ा रु ११४ चुकाना पड़ा। गांधीजी और अुनके साथी समय पर गोआलंदो पहुंच गये और वहांसे नयाबगंज जानेवाली मोटरबोट पकड़ सके।

जो गांधीजी नाममें लिखे हुअे लिफाफेकी दूसरी कोरी बाजूका भी अुपयोग किये बिना अुसे नहीं फेंकते थे वही गांधीजी मौका आने पर सौकी जगह हजार रुपये खर्च करनेमें भी कभी हिचकिचाते नहीं।

७३

मनोमंथन क्यों नहीं?

हाल तो ठीक याद नहीं। मैं शिमलासे लौटा था। बापूकी आत्मकथा प्रकरणशः नवजीवन में प्रकाशित हो रही थी। अुसके बारेमें चर्चा चली। मैंने कहा — "आपकी आत्मकथा तो विश्व साहित्यमें अेक अद्वितीय वस्तु गिनी जायगी। लोग अभीसे अुसे यह स्थान देने लगे हैं। लेकिन मुझे अुससे पूरा सन्तोष नहीं हुआ। युवावस्थामें जब मनुष्यको अपने जीवनके आदर्श तय करने पड़ते हैं, अपने लिअे कौनसा क्षेत्र अनुकूल होगा अिस चिन्तामें जब वह पड़ता है तब अुसके मनका मन्थन महासंग्रामसे कम नहीं होता। अुस वक्त कभी परस्पर विरोधी आदर्श भी अेकसे आकर्षक दिखाअी देते हैं। मैं आपकी आत्मकथा में अैसा मनोमंथन देखना चाहता था। लेकिन वैसा कुछ दिखाअी नहीं दिया। अंग्रेजोंको देशसे भगानेके लिअे आप मास तक खानेको तैयार हो गये अिस अेक सिरेकी भूमिका पर आप कैसे आये यह सारा मनोमंथन आपने नहीं नहीं बताया।

अिस पर बापूने जवाब दिया — मैं तो अेकमार्गी आदमी हूँ। तुम कहते हो अैसा मन्थन मेरे मनमें नहीं चलता। कैसी भी परिस्थिति क्यों न सामने आये अुस वक्त मैं अितना ही सोचता हूँ कि अुसमें मेरा कर्तव्य क्या है। कर्तव्य तय हो जाने पर मैं अुसमें लग जाता हूँ। मेरा तरीका यही है।

तब फिर मैंने दूसरा प्रश्न पूछा — सामान्य लोगोंसे मैं कुछ भिन्न हूँ मेरे सामने जीवनका अेक मिशन है — अैसा भान आपको कबसे हुआ? क्या हाअीस्कूलमें पढ़ते थे तब कभी आपको अैसा लगा था कि मैं सब जैसा नहीं हूँ?

मेरे प्रश्नकी ओर शायद बापूने ध्यान नहीं दिया। अुन्होंने अितना ही कहा — जब हाअीस्कूलमें मैं अपने जमानेके लड़कोंका अगुआ बनता था।

जितनेमें कोअी आ गया और यह महत्त्वका प्रश्न वैसा ही रह गया।

७४
स्वराज्यके लिअे भी नहीं

मद्रासमें सन् १९२६ का कांग्रेस अधिवेशन था। हम भी श्रीनिवास अय्यंगारजीके मकान पर ठहरे थे। वे हिन्दू-मुस्लिम अेकताके निमित्त अेक मसविदा तैयार करके बापूकी सम्मतिके लिअे आये। अुन दिनों बापू देशकी राजनीतिसे निवृत्त-से हो गये थे। वे अपनी सारी शक्ति खादी-कार्यमें ही लगा रहे थे। वह मसविदा अुनके हाथमें आया तो कहने लगे — किसीके भी प्रयत्नसे और कैसी भी शर्त पर हिन्दू-मुस्लिम समझौता हो जाय तो मुझे मंजूर है। मुझे अिसमें क्या दिखाना है? फिर भी वह मसविदा बापूको दिखाया गया। अुन्होंने सरसरी निगाहसे देखकर कहा ठीक है।

शामकी प्रार्थना करके बापू जल्दी सो गये। सुबह बहुत जल्दी महादेवभाअीको जगाया। मैं भी जग गया। कहने लगे — बड़ी गलती हो गयी। कल शामका मसविदा मैंने ध्यानसे नहीं पढ़ा। यों ही कह दिया ठीक है। रातको याद आया कि अुसमें मुसलमानोंको गोवध करनेकी खास अिजाजत दी गयी है और हमारा गोरक्षाका सवाल यों ही छोड़ दिया गया है। यह मुझसे कैसे बरदाश्त होगा? वे गायका वध करें तो हम अुन्हें जबरदस्ती नहीं रोक सकते। लेकिन मुसलमानोंकी सेवा करके तो अुन्हें समझा सकते हैं न? मैं तो स्वराज्यके लिअे भी गोरक्षाका आदर्श नहीं छोड़ सकता। अुन लोगोंसे अभी जाकर कह आओ कि वह समझौता मुझे मान्य नहीं है। नतीजा चाहे जो हो किन्तु मैं बेचारी गायोंको अिस तरह छोड़ नहीं सकता।

७५

गरीबोंकी अिज्जत

हॉरेस अेलेक्जेण्डरने अेक जगह लिखा है कि शिष्टाचारके नाम पर समाजमें जो असत्य चलता है अुसका विरोध करनेमें हम क्वेकर* बहुत ही मशहूर हैं। किन्तु गांधीजी तो हमसे भी बहुत आगे बढ़े हुअे हैं। हॉरेस अेलेक्जेण्डरने जो अुदाहरण दिये थे वे मुझे नहीं देने हैं। मैं तो स्वयं देखे हुअे अुदाहरण देता हूं।

बापूके मनमें छोटे-बड़ेका भेद है ही नहीं। जहां तक अुनका बस चलता है, वे समाजके नियमोंका पालन करते हैं। लेकिन सत्यकी बात आते ही अुनका स्वभाव प्रकट होता है।

पुरानी बात है। अुन दिनों बापू जब बम्बअी आते तब अपने मित्र डॉ॰ प्राणजीवन मेहताके भाअी रेवाशंकर जगजीवनदासके मकान पर ही ठहरते थे। महात्मा बननेके बाद बम्बअीके बड़े-बड़े लोग अुन्हें अपने यहां ठहरानेमें बड़ा सौभाग्य मानने लगे। लेकिन बापू तो जब तक रेवाशंकरभाअी जीवित रहे तब तक अुन्हींके यहां ठहरे।

जहां बापू ठहरें वहां अुनके मेहमानोंकी कमी होती ही नहीं। गृहपतिको सबका प्रबंध करना पड़ता। अेक दिन हमारे स्वामी आनन्द वहां जा पहुंचे। स्वामी आनन्द संन्यासीके वस्त्र नहीं पहनते। धोती कुरता और गांधी टोपी जैसी मामूली पोशाकमें हमेशा रहते हैं।

रेवाशंकरभाअीके रसोअियेके साथ स्वामी आनन्दकी कुछ बोलचाल हो गयी। ये रसोअिये कभी कभी बहुत अुद्दंड होते हैं। बड़े छोटेका भेद अुनके मनमें बहुत रहता है। अुसने स्वामी आनन्दका कुछ अपमान किया होगा। स्वामीको गुस्सा आ गया। अुन्होंने अुसे

---

* क्वेकर पंथ अीसाअी धर्मकी अेक शाखा है, जिसमें अहिंसाका विशेष पालन होता है। ये लोग युद्धमें शरीक नहीं होते और जिनके धर्ममें कोअी धर्मोपदेशक पादरी भी नहीं होते। ध्यानके लिअे सब अेक जगह अिकट्ठा होते हैं और जिस किसीके मनमें आता वह अुपदेश-वचन बोलने लगता है।

असी थप्पड़ लगायी कि वह बैठ ही गया। शिकायत बापू तक पहुँची। बापूने स्वामीसे कहा — अगर भाई लोगोंमें से किसीसे तुम्हारा झगड़ा हुआ होता तो तुम अुसे थप्पड़ लगाते? वह नौकर ठहरा, अिसलिओ तुमने अुस पर हाथ अुठाया। अभी जाकर अुससे माफी मांगो। स्वामी जैसे मान-धनीसे यह कैसे हो सकता था? जब बापूने देखा कि स्वामी माफी मांगनेके लिओ राजी नहीं हैं तो बोले — यदि अन्यायका परिमार्जन नहीं कर सकते तो मेरा संग तुम्हें छोड़ना होगा। बेचारे स्वामी क्या करते? सीधे जाकर रसोअियेसे माफी मांग आये।

स्वामीने रसोअियेको जो थप्पड़ लगायी वह अितने जोरकी थी कि स्वामीकी कलाअीमें मोच आ गयी। पहले जब वे मेरे साथ रहते तब प्रेमसे मेरे कपड़े धो देते थे। लेकिन अब मोचके कारण वह काम बन्द हो गया। आज भी अुनकी कलाअीमें पहलेकी शक्ति नहीं है।

७६

आधुनिक पिता

बापूके दूसरे लड़के मणिलालका विवाह कुछ देरीसे हुआ। वे दक्षिण अफ्रीकामें रहते थे। हिन्दुस्तानमें विवाह करना था। कन्या पसन्द करनेका काम मणिलालने पिता पर ही छोड़ दिया था। बापूके कामोंमें सब बातोंमें श्री जमनालालजीको बड़ी दिलचस्पी रहती थी। अुन्होंने मशरूवाला कुटुम्बमें से अेक लड़की पसन्द की। वह थी अकोलाके नानाभाओ मशरूवालाकी लड़की सुशीला। जमनालालजीकी सूचना बापूने तुरन्त स्वीकार कर ली। विधिके अनुसार विवाह हो गया और गांधी-कुटुम्बके सब लोग अकोलासे रवाना हुओ।

स्टेशन पर जाते ही हमने सुना बापूने कहा — मणिलाल तुम्हें हमारे डिब्बेमें नहीं बैठना चाहिये, तुम अपनी जगह ढूंढ लो। सुशीला भी वहीं बैठेगी। अेक दूसरेसे परिचय करनेका यही तो मौका है।

बापूजी आश्रममें आये तब प्रार्थनाके समय अुन्होंने स्वयं जिस विवाहका वर्णन करते हुअे यह किस्सा सुनाया।

७७

मौनव्रतका अपवाद

बिहार और अुड़ीसाके लोगोंके प्रति बापूके मनमें विशेष करुणा थी। अुड़ीसाकी जनता बिलकुल असहाय बनी और पिसी हुअी है। बिहारके निलहे गोरोंने वहांकी जनताको कम नहीं पीसा था। बिहारकी जनता भोली और निष्ठावान है। वहां परदेकी प्रथा है। अुसे दूर करनेके लिअे वहांके लोगोंने बापूसे अेक प्रचारिका मांगी। आश्रमवासियोंकी शक्ति पर बापूका विशेष विश्वास रहता था। अुन्होंने अपने भतीजे आश्रम व्यवस्थापक श्री मगनलाल गांधीकी लड़की राधाको बिहार भेजा। चि राधा भी आत्मविश्वासके साथ वहां गयी। अुसने वहां अच्छा काम किया। अेक समय अपनी लड़कीसे मिलनेके लिअे मगनलालभाअी वहां गये। वहीं पर बीमार होकर अुनका देहान्त हो गया। आश्रमके लिअे तो वह वज्रपातके जैसा था। तार आते ही सबके होश अुड़ गये। वह सोमवारका दिन था। बापूका मौन था। तार सुनते ही बापू अपने स्थानसे अुठकर मगनलालभाअीके घरमें पहुंच गये। पिछवाड़ेमें मैं भी पहुंचा। मुझसे रहा न गया। मैं रो पड़ा। तब बापूने अपना मौन तोड़कर मुझे सान्त्वना दी। मगनलालभाअीके लड़के-लड़कियोंको बुलाकर अपने पास बैठाया। जब मैं वहांसे जानेके लिअे तैयार हुआ तो बापूने कहा — जब मैंने सोमवारके मौनका व्रत लिया था तभी मनमें दो अपवाद रख थे। अगर मेरे शरीरको कोअी असह्य पीड़ा हो या दूसरेको अैसा ही दुःख हो तो आवश्यक बातें करनेके लिअे मौन टूट सकता है। जिसने वरसों बाद आज ही जब अपवादका सहारा लेना पड़ा।

बापू मगनलालभाअीके घरमें अुनकी पत्नी और बच्चोंको सान्त्वना देनेके लिअे गये थे लेकिन वहीं रह गये। अपने स्थान

पर मौन ही नहीं। सारी आवश्यक चीजें वही मंगवा ली। मगनलाल-भाओीके परिवारको यह अनुभव ही नहीं होने दिया कि अब वे अनाथ हो गये हैं।

७८
अनोखी गोरक्षा

हम साबरमती आश्रम में थे। बापू मगनलालभाओीके घरम रहते थे। जिसका अर्थ यह हुआ कि यह घटना मगनलालभाओीके देहान्तके बादकी है।

बापूको जिस तरह देशके सार्वजनिक कार्योंकी समस्यायें हल करनी पड़ती अुसी तरह अपने मित्रोंकी कौटुम्बिक समस्यायें भी अनेक बार हल करनी पड़ती। शायद अैसे नाजुक कामोंमें अुनको अधिक सफलता भी मिलती थी। और अैसे कामोंके द्वारा की हुआी राष्ट्रसेवा अुनकी सार्वजनिक सेवासे कम न थी।

बापूके अेक परिचित परिवारके किसी युवकका विवाह तय हुआ था। कन्यापक्षके लोग सम्बन्ध तय करके अेक विश्वाससे मुक्त हुअे ही थे कि जितनेमें लड़का बिगड़ बैठा। कहने लगा — मुझे यह शादी नहीं करनी है। अुसे बहुत समझाया गया पर वह नहीं माना। अन्तमें कन्यापक्षके लोग हताश होकर बापूके पास आये। अुनको संकोच होता था कि बापू जैसे विश्ववन्द्य पुरुषका समय अैसे काममें हम कैसे लें। लेकिन लाचार आदमी क्या नहीं करता? बापूने अुस लड़केको बुलवाया और अुससे खूब बातें कीं। कन्यापक्षके लोग बैठकर सब सुन रहे थे। दो-तीन दिन तक लगातार बापूने अुस लड़केके साथ सिरपच्ची की। लड़का कितना वाहियात था यह सब देख रहे थे।

तीसरे दिन किसी कार्यक्रम में बापूके पास गया। लड़का जोर-जोरसे अपनी कठिनाओी पेश कर रहा था। कहता था — मेरे पिता तो मुझसे पांच हजारका काम मांगते हैं। कहते हैं कि

७९

सेवामय प्रेम

मुझे जब रोग हुआ तब मैं स्वास्थ्य-लाभके लिये पूनाके पास सिंहगढ़ जाकर रहा था। स्वास्थ्य सुधरने पर आश्रममें आकर रहने लगा। डॉक्टरकी सलाह थी कि कुछ महीने मैं आराम ही करूं।

आश्रममें पहुंचे मुझे कुछ ही देर हुआी थी कि अेक लड़की थालीमें अच्छे-अच्छे फूल लेकर आयी। कहने लगी — ये बापूने आपके लिये भेजे हैं। मेरी आंखोंमें आंसू आ गये। वह आगे बोली — बापूने हमें कहा है कि काकाके पास रोज किसी तरह फूल पहुंचाती रहो। काकाको फूलोंसे बड़ा प्रेम है।

बापू भी रोज कभी न कभी वक्त निकालकर मेरे पास आ ही जाते थे।

किसी तरह अेक समय आश्रमके अेक लड़केने आकर बापूसे कहा — बापूजी प्रोफेसर आया है (आश्रममें श्री जीवतराम कृपालानीको प्रोफेसर कहते थे।) सुनते ही बापूने देवदाससे कहा — देखो जाकर बासे पूछो कि दही है या नहीं? प्रोफेसरको दही तो जरूर चाहिये। न हो तो यहींसे नीबू ले जाओ। और दही न हो तो काकाके घर जरूर मिलेगा।

बापूका प्रेम सेवामय था। हर मनुष्यका सुख-दुख पूरा पूरा समझ लेनेकी अनकी स्वाभाविक वृत्ति थी।

अेक दिन यरवडा जेलमें मैंने बापूको कुम्हड़ेका साग बनाकर दिया और स्वयं नहीं लिया। कुछ खानेके बाद वे कहने लगे — मुझे मालूम है कि तुम्हें कुम्हड़ेसे अरुचि है। लेकिन आजका कुम्हड़ा कुछ और ही है। थोड़ा खाकर तो देखो। अस्वाद-व्रतकी दीक्षा देने

आमें बापूकी ओरसे कोओी चीज खाकर देखनेका आग्रह अेक अजीब बात थी। अुनके ध्यानमें भी यह बात आ गयी। कहने लगे — कुम्हड़ा भी कितना मीठा हो सकता है, जिसका अनुभव करानेके लिअे ही मैंने तुम्हें खाकर देखनेके लिअे कहा है।

यहाँ मुझे अेक पहलेकी बात याद आती है।

किसी कारणसे मैं बापूके पास गया था। वहां अेक सज्जन आये और अुन्होंने बापूके सामने कुछ फल रखे। अुनमें चीकू बड़े अच्छे थे। बापूने तुरन्त दो बड़े-बड़े चीकू निकालकर मुझे देते हुअे कहा — काका ये दो चीकू महादेवको दे दो। अुसे चीकू बहुत पसन्द हैं। महादेवभाओी मेरे पड़ोसमें ही रहते थे। मैं अुनके पास गया और कहा — महादेवभाओी मैं आपके लिअे प्रेमका सन्देश लाया हूं। चीकू देखकर महादेवभाओी खुश हो गये। कहने लगे — सच मुच प्रेमका ही सन्देश है।

८०

बुद्ध भगवानके साथ तादात्म्य

सन् १९२७ की बात है। खादी-कार्यके लिअे धनसंग्रह करनेको राजाजीने दक्षिणमें बापूके दौरेका प्रबंध किया था। अिसी सिलसिलेमें हम सीलोनकी भी यात्रा कर आये। सीलोनमें बापूके बड़े ही प्रभावशाली व्याख्यान हुअे। अेक दिन शायद बाफनाकी बात है बापू बुद्ध भगवानके कार्य पर बोल रहे थे। बुद्ध भगवानकी परि*स्थितियां* कैसी थी किस तरह अुन्हें अुनमें अपना मिशन मिला जिसीका वर्णन चल रहा था। बापू अपने विषयमें जितने तल्लीन हो गये थे कि अेक स्थान पर जहां बुद्धके बारेमें अुन्हें कहना चाहिये था then he saw वहां निकल गया then I saw पता नहीं यह गलती अुनके ध्यानमें आयी या नहीं। व्याख्यान बड़ा ही प्रभावशाली रहा।

रातको बापूके व्याख्यानकी हम चर्चा कर रहे थे। महादेवभाअी राजाजी और मैं। मैंने कहा — आजके व्याख्यानमें Star of the East वाले कृष्णमूर्ति-जैसी बात हुअी। जितना कहना था कि राजाजी बोल अुठे — Did you also mark that Kaka? — क्या आपके भी ध्यानमें यह चीज आयी? हम दोनों हंस पड़े।

मैंने कहा — व्याख्यानमें बापूका बुद्ध भगवानके साथ अैसा तादात्म्य हो गया था कि प्रथम पुरुषका सर्वनाम यों ही निकल गया। जिसका कोअी गूढ़ अर्थ करनेकी जरूरत नहीं। जितना ही अनुमान निकालना बस है कि जो कार्य बुद्ध भगवानने अपने जमानेके लिये किया वही कार्य आजकी परिस्थितियोंके अनुसार बापू नयी भूमिका पर कर रहे हैं।

बापू अगर अपनेको बुद्ध भगवानका अवतार मानने लगें तो मुझे अुसमें खतरा दिखाअी देता है। मैं नहीं मानता कि वे कभी अपनेको बुद्धका अवतार मान सकते हैं। अगर मानेंगे तो अैसा साफ साफ कह देनेकी सत्यनिष्ठा अुनमें है। बापू कभीके हिन्दू गिरोहसे परे हो चुके हैं, किन्तु अुन्होंने अुससे अपना संबंध नहीं तोड़ा है। अुनको आखिर तक सामान्य हिन्दू ही रहना है। हिन्दू रहकर ही वे दुनियाकी सेवा करेंगे और वह हिन्दू-धर्मको अपने आदर्शके अुज्ज्वल हिन्दू-धर्म जैसा बनायेंगे।

८१

नीलेश्वरका कार्यक्रम

अेक समय हम मद्रासकी ओर खादी-यात्रा कर रहे थे। शायद कालीकट पहुंचे थे। वहांसे उत्तरकी ओर नीलेश्वर नामक अेक छोटा सा स्थान है। वहां मेरा अेक विद्यार्थी बड़ी ही प्रतिकूल परिस्थितिमें खादीका कार्य करता था। उसे बापूके आगमनकी आशा थी। उसने स्वागतकी तैयारी भी की थी। पर कार्यक्रममें कुछ अैसी बाधा आ पड़ी कि नीलेश्वरका कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा। बापूसे यह सहा न गया। कहने लगे — बेचारा कितनी श्रद्धासे काम कर रहा है! अेक कोनेमें पड़ा है किसीकी सहानुभूति नहीं। वहां तो मुझे जाना ही चाहिये। बापूका स्वास्थ्य भी अुन दिनों अच्छा नहीं था। राजाजीने बताया कि किसी भी सूरतमें नीलेश्वर जाना संभव नहीं है। बापूने अुत्तेजित होकर कहा — संभव क्यों नहीं? स्पेशल ट्रेनका प्रबंध करो। अुस लड़केकी श्रद्धाकी मेरे लिअे बड़ी कीमत है। राजाजी खर्च करनेके लिअे तैयार थे किन्तु बापूको काफी कष्ट होनेका डर था। अुनके स्वास्थ्यको भी खतरा था। राजाजी बापूको समझानेकी कोशिश करने लगे। महादेवभाअीने भी समझाया। परन्तु बापू नहीं माने। अन्तमें मैंने कहा — राजाजीकी बात मुझे भी ठीक लगती है। मैं अुस लड़केको लम्बा-चौड़ा खत लिखकर समझा दूंगा कि आप तो आनेवाले थे लेकिन हम लोगोंने ही रोक लिया। बापूने जब देखा कि मैं भी राजाजीके पक्षमें हो गया तो हार गये और दुःखके साथ मान गये।

मेरा विद्यार्थी सारी परिस्थिति समझ तो गया। बापू नहीं आये यह अच्छा ही हुआ अैसा अुसने लिखा भी। लेकिन मैं जानता हूं कि वह राजाजीको क्षमा नहीं कर सका।

बेचारे राजाजी अिस तरह अनेकोंकी गलतफहमीके शिकार हुअे हैं।

८२

दक्षिणा दो तब आशीर्वाद मिलेंगे

हम दक्षिणकी मुसाफिरीमें थे। स्थान ठीक याद नहीं है, शायद बंगलोर होगा। बापू अपने कमरेमें कुछ काम कर रहे थे। दर्शनाभिलाषी लोग आते-जाते थे। जितनेमें अेक सज्जन नवपरिणीत दंपतीको ले आये। दोनोंकी पोशाक अमीरी थी। नवपरिणीतोंकी पोशाक कुछ तो कीमती और तड़क-भड़कवाली होती ही है, पर अुनकी कुछ विशेष थी। आगन्तुक सज्जनने कहा — महात्माजी आज ही जिनकी शादी हुई है। आपके आशीर्वादके लिये आये हैं। बापूने अुन दोनोंको अपने सामने बैठाया और कहा — अैसे मुफ्त ही आशीर्वाद नहीं मिल सकते। हरिजनोंके लिये कुछ लाये हो? शादीमें पुरोहितोंको खूब दक्षिणा दी होगी। हरिजनोंको कुछ दिया? हरिजनोंको ठगो यह नहीं चलेगा। लाओ कुछ दक्षिणा दो तब आशीर्वाद मिलेंगे।

नवपरिणीत दंपती बोल कैसे सकते हैं! लानेवाले सज्जनकी ओर दोनों देखने लगे।

तब वे सज्जन बोले — महात्माजी आपकी बात ठीक है, लेकिन यह नवयुवक अेम. सी. राजा* का लड़का है और यह है अुनकी पुत्रवधू।

बापू जोरसे हँस पड़े। कहने लगे — तब तो तुम मेरे जिस टैक्ससे मुक्त हो।

मैंने मनमें सोचा विनोद तो हुआ लेकिन जिस हरिजन नवदम्पतीने देखा होगा कि बापूके मनमें अुनकी जातिके प्रति कितना प्रेम है!

---

* अेम. सी. राजा स्वयं हरिजन हैं और दक्षिणके हरिजनोंके अेक प्रधान नेता हैं।

८६

अिस तरह काम नहीं होता

सन् १९२७ की बात है। मैं बापूके साथ अुड़ीसामें बालासोर गया था। वहांसे भद्रक जानेकी बात थी। भद्रकमें अेक सभाका प्रबंध किया गया था। बापू नहीं जा सकते थे। अुन्होंने मुझसे कहा — तुम जाओ और सभाको मेरा सन्देश सुनाओ। मैं तैयार हो गया। लेकिन मुझे ले जानेके लिअे कोअी आया ही नहीं।

करीब अेक घंटा हो गया होगा। बापूने मुझे वहीं देखा। पूछने लगे — गये क्यों नहीं? मैंने कहा — मैं तो तैयार बैठा हूं। कोअी मुझे ले जाय तब न? बापू बड़े नाराज हुअे। कहने लगे — अिस तरहसे काम नहीं होता है। समय होते ही तुम्हें चले जाना चाहिये था। मोटर न मिली तो क्या हुआ? पैदल निकलते। दो दिन लगते तो लग जाते। हमारा मतलब पहुंचनेसे नहीं है, समय पर निकलनेसे है।

मैं बड़ा ही शरमिन्दा हुआ और अुसी क्षण चल दिया। रास्ते पर जो भी लोग दीख पड़ते अुनसे पूछता था कि भद्रकका रास्ता कौनसा है? करीब अेक मील अिस तरह पैदल गया। वहां मेरे पीछे श्री हरेकृष्ण मेहताब आ गये। अुन्हें पता चला कि मैं पैदल निकल पड़ा हूं। अुनसे रहा न गया। अुन्होंने मोटरके प्रबन्धके लिअे किसीको आज्ञा दे दी और स्वयं पैदल निकले। हम दोनों करीब अेक मील और पैदल चले होंगे कि अितनेमें पीछेसे अुनकी मोटर आ गअी।

जब हम भद्रक पहुंचे तो शाम होने आयी थी। जहां सभा होनेको थी वहां सरकारी कर्मचारियोंके तंबू लगे हुअे थे। वे टैक्स वसूल करनेवाले अमलदार थे। लोग अुनसे अैसे डरते थे कि वहां कोअी आता ही नहीं था। बड़ी मुश्किलसे हम चन्द लोगोंको बुलाकर अिकट्ठा कर सके। वे आसपासके देहातोंसे आये हुअे थे। मैंने अुनको निर्भयताकी बातें समझायीं। सरकारी अमलदार आखिर हैं तो हमारे ही नौकर। अुन्हें हमसे डरना चाहिये हम अुनसे क्यों डरें?

वगैरा वगैरा अैसी बातें मैंने कहीं। लोगोंके अूपर क्या असर हुआ यह तो भगवान जाने। लेकिन वे अखबार मुझसे जरूर चिढ़ गये।

दूसरे दिन बापू भी मद्रास आ पहुँचे। फिर तो पूछना ही क्या था! लोग हजारोंकी संख्यामें अिकट्ठे हुअे और बाढ़में जिस तरह कूड़ा-कचरा बह जाता है अुसी तरह वे अखबार न जाने कहाँ चले गये।

८४

दिव्य कामना

१९२९–३० की बात है। दक्षिणका खादी-दौरा पूरा करके बापू अुड़ीसा पहुँचे। वहाँ हम लोग भीटामाटी नामक अेक गाँवमें पहुँचे। बापूका व्याख्यान हुआ। फिर लोग अपनी-अपनी भेंट और चन्दा लेकर आये। कोअी कुम्हड़ा लाया कोअी बिजौरा (बिजपुर, मातुलिंग) लाया कोअी बैंगन लाया और कोअी जंगलकी भाजी। कुछ गरीबोंने अपने चीथड़ोंमें से छोड़ छोड़कर कुछ पैसे भी दिये। सभामें घूम-घूमकर मैं पैसे अिकट्ठे कर रहा था। पैसोंके जंगसे मेरे हाथ हरे हरे हो गये थे। मैंने बापूको अपने हाथ दिखाये। मुझसे बोला न गया। दूसरे दिन सुबह बापूके साथ घूमने निकला। रास्ता छोड़कर हम खेतोंमें घूमने लगे। तब बापू कहने लगे — कितना दारिद्र्य और दैन्य है यहाँ! क्या किया जाय अिन लोगोंके लिअे? जी चाहता है कि अपनी मरणकी घड़ीमें अुड़ीसामें आकर अिन लोगोंके बीच मरूँ। अुस समय जो लोग मुझे यहाँ मिलने आयेंगे वे अिन लोगोंकी करुण दशा देखेंगे। किसी न किसीका तो हृदय पसीजेगा और वह अिनकी सेवाके लिअे आकर यहाँ बस जायगा।

अिस पर मैं क्या कह सकता था? अुनकी अिस पवित्र भावनाका धन्य साक्षी ही हो सका।

८५

आशाका प्रतीक

अिसी दौरेमें हम चारवटिया पहुँचे। वहाँ भी अैसी अेक सभा हुअी। मेरा खयाल था कि भीटामाटीसे बढ़कर करुण दृश्य कहीं नहीं होगा। लेकिन चारवटियाका तो अुससे भी बढ़ गया। लोग आये तो थे थोड़े लेकिन जितने थे अुनमें से किसीके भी मुँह पर चैतन्य नहीं दिखाअी देता था। प्रेतके जैसी शून्यता थी।

यहाँ पर भी बापूने पैसेके लिअे अपील की। लोगोंने कुछ न कुछ निकालकर दिया ही। मेरे हाथ वैसे ही भरे हो गये।

अिन लोगोंने रुपये तो कभी देखे ही नहीं थे। ताँबेके पैसे ही अुनका बड़ा धन था। कोअी पैसा हाथमें आ गया तो अुसे खर्च करनेकी वे कभी हिम्मत ही नहीं कर पाते थे। बहुत दिन तक बाँधे रखने या जमीनमें गाड़नेके कारण अुस पर जंग चढ़ जाता था।

मैंने बापूसे कहा — अिन लोगोंसे अैसे पैसे लेकर क्या होगा? बापूने कहा — यह तो पवित्र दान है। यह हमारे लिअे दीक्षा है। जिसके द्वारा यहाँकी निराश जनताके हृदयमें भी आशाका अंकुर अुगा है। यह पैसा अुस आशाका प्रतीक है। ये मानने लगे हैं कि हमारा भी अुद्धार होगा।

यह स्थान और दिन दोनों याद रहनेका अेक और भी कारण था। रातको हम वहीं सोये। दूसरे दिन सूर्योदय जितना सुन्दर था कि बापूने मुझे देखनेको बुलाया। फिर मुझसे पूछने लगे — तुम तो (गुजरात) विद्यापीठकी हालत जानते ही हो। अगर मैं अुसका चार्ज तुम्हें दे दूँ तो लोगे? मैंने कहा — बापूजी विद्यापीठकी हालत जितनी आप जानते हैं अुससे अधिक मैं जानता हूँ। सवाल पेचीदा हो गया है। लेकिन कम-से-कम किसी अेक बातमें आपको निश्चिन्त करनेके लिअे मैं अुसका चार्ज लेनेको तैयार हूँ। बापूने कहा — किसी डॉक्टरके पास जब कोअी मरीज आता है, तब वह कैसी भी हालतमें हो डॉक्टर अुसकी चिकित्सा करनेसे अिनकार नहीं कर सकता।

डॉक्टर यह तो कह ही नहीं सकता कि जिसके बचनेकी खातरी हो अुसी रोगीकी मैं चिकित्सा करूँगा।

मैंने कहा — अितनी खराब हालत तो नहीं है। मैं जरूर विद्यापीठको अच्छे पाये पर खड़ा कर दूँगा और धीरे-धीरे अुसे ग्रामोन्मुख भी कर दूँगा।

जब मैंने विद्यापीठका चार्ज लिया तो अुसके अभ्यासक्रममें खादी, खेती-काम आदि तो शुरू किये ही, साथ ही ग्रामसेवा दीक्षित की नयी अुपाधि स्थापित करके अुसके लिअे भी विद्यार्थी तैयार किये। श्री बबलभाअी मेहता और झवेरभाअी पटेल अुसी ग्राम-सेवा मंदिरके आदि-दीक्षित हैं। सब कोअी जानते हैं कि अिन दोनोंने ग्रामसेवाका काम कैसा अच्छा चलाया है। श्री बबलभाअीने अपने जो अनुभव 'मारुं गामडुं' (मेरा गाँव) नामक किताबमें दिये हैं वे किसी अुपन्यास जैसे रोमांचकारी मालूम होते हैं।

८६

अनोखे प्रश्नोत्तर

सन् १ [illegible] की बातकी बात है। मैसूरमें स्टूडेण्ट्स वर्ल्ड फेडरेशनका अधिवेशन था। विद्यार्थियोंके बीच काम करनेवाले अमेरिकाके [illegible] अध्यापक थे। हिन्दुस्तान आने पर वे बापूको मिले बगैर [illegible] अहमदाबाद आकर अुन्होंने बापूसे मुलाकातका समय माँगा। बापू दिनभर व्यस्त ही रहे। अिसलिअे रातको [illegible] मिलनेका समय दिया। मैं भी विद्यापीठसे आश्रम गया। [illegible] मिलनमें क्या क्या बातें हुअीं।

[illegible] पास ही [illegible] पर स्वरोंद मौद [illegible] अिस [illegible] मिलनेका [illegible] हुआ है [illegible]

अनुवादकी अेक झांकी

यरवडा जेलकी बात है। मीराबहन (Miss Slade) के लिये बापू आश्रम-भजनावलि का अंग्रेजी अनुवाद कर रहे थे। प्रार्थनाके बाद रोज थोड़ा थोड़ा समय लेकर अुन्होंने आश्रम-भजनावलि का पूरा अनुवाद कर डाला। अुसमें अेक श्लोक है

जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शंभो।

मैंने संस्कृतके अंग्रेजी अनुवाद देखे भी हैं लिये भी हैं। जय जय का सीधा अनुवाद तो है Victory Victory लेकिन बापूने किया Thy will be done। जब मैंने पूछा तो कहने लगे — "भगवानकी विजय तो विश्वमें है ही। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे हृदयमें काम क्रोध वगैराको जो विजय मिल रही है वह न मिले वे हट जायं। मानी जैसी औश्वरकी जिच्छा है वैसे ही कर्म हम करते जायं। औसाजियोंके लिये Thy kingdom come या Thy will be done यही जिसका अनुवाद हो सकता है। प्रार्थना तो हम अपने हृदयमें भगवानकी विजय हो जिसीलिये करते हैं न?

कैदी रसोजिया वस्तोवा

सन् १९३२ की बात है। तब मैं बापूके साथ यरवडा जेलमें था। हमारी रसोजी बनानेके लिये सुपरिन्टेन्डेन्ट मेजर मार्टिनने वस्तोवा नामके अेक महाराष्ट्री कैदीको नियुक्त किया था। वस्तोवाको काम तो बहुत नहीं था। बापूके कपड़े धोता था बकरीका दूध गरम करके रखता था और अैसे ही अन्य छोटे-मोटे काम कर देता था। बेचारेके पावमें कुछ दर्द था। लंगड़ाता-लंगड़ाता सब काम करता था।

अेक दिन बापूने मेजर मार्टिनसे बात की। अुसने कुछ दवा दी। लेकिन पावका दर्द नहीं गया। जिस तरह करीब अेक

महीना बीत गया। तब बापूने मेजर मार्टिनसे कहा — अगर अिस आदमीकी मैं चिकित्सा करूं तो आपको कोअी अेतराज है? मेजरने कहा — बिलकुल नहीं। बापूने कहा — मेरी चिकित्सामें आहार ही मुख्य चीज है। अपनी ओरसे मैं अुसे खास आहार दूंगा। अिस पर भी मार्टिनने कहा कि ठीक है।

बापूकी चिकित्सा शुरू हुअी। पहले तो अुन्होंने अुसको कुछ दिनके लिअे अुपवास करनेको कहा अेनिमा वगैरासे अुसका पेट साफ करवाया और फिर अुसे कुछ दिन केवल शाक पर रखा। बादमें आहारमें समय-समय पर परिवर्तन करते गये। बत्तोबाको अच्छा फायदा हुआ। अुसने मुझसे कहा — बरसोंसे अिस दर्दसे परेशान था। अब तो मेरा पैर ठीक हो गया। चलनेमें थोड़ी भी तकलीफ नहीं होती। मुझे खुदको आश्चर्य होता है कि अब मैं सबके जैसा कैसे चल लेता हूं।

बापूके छूटनेके बाद वह भी छूट गया। अुसने बम्बअीमें कुलाबाकी ओर चाय-कॉफीकी अेक दुकान खोली। अेक दिन अुसने कहीं सुना होगा कि बापू बम्बअी आये हैं। वह दर्शनके लिअे आया और साष्टांग दण्डवत किया। अुसकी आंखोंसे कृतज्ञता बह रही थी। बापूने मुझे कहा — अिससे कहो कि आज बहुत काममें हूं कल जरूर मिलने आवे। मैंने बत्तोबाको समझाया कि बापू तुमसे मिलना चाहते हैं, कल जरूर आवे। अुसने कहा जरूर आअूंगा। लेकिन कमबख्त आया ही नहीं। बापूका खयाल था कि दुकान चलानेके लिअे अगर अुसे सौ-पचास रुपये दिये जायं तो बेचारा खुश होगा। अुसने अगर अपना पूरा पता दिया होता तो मैं अुसे ढूंढकर ले आता। लेकिन पतेके बिना बम्बअीके मानव सागरमें अुसे कहां ढूंढता?

दूसरे दिन जब वह नहीं आया तो बापूको अफसोस हुआ। कहने लगे — कल ही अुसे कुछ दे देना तो अच्छा होता। परिश्रम करके जीनेवाला आदमी बार-बार आनेके लिअे समय कहांसे निकाले?

८९

जनताकी दौलतकी हिफाजत

सन् १ ३ में मैं बापूके साथ यरवडा जेलमें था। अब मैं जो बात कहनेवाला हूँ वह अुससे कुछ पहलेकी है।

जेलमें पहुंचते ही अिन्स्पेक्टर जनरल ऑफ प्रिजन्सने आकर बापूसे पूछा कि आपको हर सप्ताह कितने खत लिखने हैं। बापूने जवाब दिया — अेक भी नहीं। अुसने फिर पूछा — बाहरसे आपको हर सप्ताह कितने खत मिलें तो आपका काम चलेगा? बापूने कहा — मुझे अेक भी खतकी जरूरत नहीं। अितने संवादके बाद वह भला आदमी सीधा हो गया। फिर अुसके साथ तय हुआ कि बापू हर सोम या मंगलके दिन चाहें जितने खत लिख सकते हैं।

फिर सवाल आया कि कौन कौनसे रिश्तेदारोंको वे खत लिखें। बापूने कहा — सबके सब भारतवासी मेरे कुटुम्बी हैं। अिनमें भी आश्रमवासियोंमें तो मैं भेद कर ही नहीं सकता। तय हुआ कि आश्रमके पते पर बापू चाहे जिस आदमीकी पत्र लिख सकते हैं।

करता हूँ कि मेरे भोजनका खर्च १५ रुपये मासिकसे अधिक नहीं होगा। अगर मेरा स्वास्थ्य अच्छा होता तो मैं सी क्लासके कैदियोंकी खुराक लेकर रहता। लेकिन शरमकी बात है कि मुझे फल लेने पड़ते हैं, बकरीका दूध लेना पड़ता है।

आखिर ये सब चीजें वापिस भेज दी गयीं। अस्पतालसे लोहेकी अेक खटिया अेक गद्दा और सी क्लासके कम्बल मंगवाये गये। खाने-पीनेके बरतन भी सी क्लासके ही मंगवाये थे। तसला चम्मच आदि सब बरतन जस्ता मिश्रित किसी धातु*के थे। अेक दिन भी साफ करनेमें गफलत हुआी कि दूसरे दिन बिलकुल काले पड़ जाते और अुनमें रखे हुअे पानी पर तेल-जैसा कुछ तैरने लगता।

बापूके लिअे सोनेका अलग कमरा था। अुसमें कमोड रखा था। सोते वे बरामदेके बीच खुलेमें। मेरे आनेके बाद मैंने बापूकी खाने-पीनेकी चीजें रखनेके लिअे अेक जालीदार अलमारी बनवायी थी और अुसे रखनेके लिअे अेक टेबल। साथ ही बापूका पेशाबका बरतन रखनेके लिअे अेक अूंचा स्टूल भी बनवाया था। यही था सब हमारा वैभव।

बापू जब लिखने बैठते तो आये हुअे पत्रोंका जितना भाग कोरा रहता अुसे काटकर अुसी पर जवाब लिख भेजते थे। आश्रमसे जिस बड़े लिफाफेमें सबके पत्र आते अुसी पर नये कागजका टुकड़ा लगाकर अुसमें अपने पत्र रखकर वापस भेज देते थे। लिफाफा पुराना हो गया हो तो अुसकी मरम्मत करके अुसे मजबूत करनेका काम मेरा था। अुस पर अेक दिन हमारी बहस भी हुआी। लेकिन हमारा मतभेद कायम रहा और बापूका वक्त व्यर्थ गया जिसका हम दोनोंको अफसोस रहा।

मेरे स्वभावमें भी कंजूसीकी मात्रा काफी है। जब बाहरसे खजूर और मिठाअियोंके पुड़े आते तो अुन परके सब धागे मैं संभाल-कर रख लेता था। बापूको अेक दिन धागेकी जरूरत पड़ी। मैंने

* अिस धातुको अंग्रेजीमें पायर प्यूटर (pewter) कहते हैं।

तुरन्त अपने सन्दूकसे निकालकर दे दिया। जिस पर बापू बड़े खुश हुअे। पूछने लगे — धागा कहाँसे मिला? मैंने सारा हाल कह सुनाया। तब कहने लगे — मालूम होता है, देशकी दौलत तुम्हारे हाथमें सुरक्षित रहेगी। तुम्हें डायरेक्टर ऑफ पब्लिक किन्स्ट्रक्शन बनाना चाहिये।

अुन दिनों बापू सूत खूब कातते थे। साप्ताहिक वत लिखना गीताके श्लोक याद करना और मेरे पास मराठी रीडरें पढ़ना जितना समय बाद करके बाकीके सारे वक्तमें वे सूत ही सूत कातते थे। (आजकल जो परवडा-चक्र प्रचलित है, अुसका आविष्कार बापूने अुन्हीं दिनों किया था।) सूत कातते समय वहाँ तक हो टूटन न निकले जिसका अुन्हें बहुत खयाल रहता था। फिर भी जितनी टूटन निकलती अुसे किकट्ठा करके मैंने अुसकी छोटी-छोटी डोरियाँ बना ली थीं जो अुनके सूतकी लटियाँ बाँधनेके काम आती थीं। जिस पर भी हमारे पास टूटनका ढेर हो गया था। मैंने खादीके टुकड़ेकी छोटीसी थैली बनायी और अुसमें ये सब टुकड़े ठूँस ठूँस कर पिन-कुशन बनाना चाहा। लेकिन खादी रंगीन नहीं थी और सफेद खादी जल्दी मैली दीख पड़ती अतः वह बापूके सामने रखी नहीं जा सकती थी। बहुत सोचकर मैंने अेक तरकीब निकाली। हमारे पास आयोडीन (iodine) था। अुसमें थैलीको भिगोकर रंगा और अुसमें टूटन भर दी। बढ़िया पिन-कुशन बन गया। बापूने खुशीसे अुसे स्वीकार किया और बहुत दिन तक सम्हालकर अुसका अुपयोग किया।

मेरा कैदमें दिन पूरे होते ही मैं छूट गया। लेकिन वह पिन कुशन बापूकी डेस्क पर बहुत दिनों तक रहा। किसी विशेष साधनके बिना या कमसे कम साधनके जरिये बनायी हुअी अैसी हाथकी चीजें बापूको बहुत पसन्द आतीं।

*

जब मैं सन् १९३० में पहले-पहल गया तो वहाँ मैंने बापूके बहुतसे मार्के-मोर्के देखे पर अुन टुकड़ोंसे केवल अेक बापूकी

मददसे मैंने बांसके चम्मच, पेपर-कटर आदि बहुतसी चीजें बनायीं और बापूको भेंट कीं। जब मैंने देखा कि बापूने ये चीजें पंडित जवाहरलाल नेहरू मौलाना आजाद वगैराको भेंट कर दीं और अुनका जिक्र 'हरिजनबंधु' में भी किया तब तो ५ सालकी अुमरमें भी मुझे बच्चेका-सा आनन्द हुआ।

१०

फलोंके प्रेममें

सन् १९१ में बापूके साथ रहनेके लिये मुझे सरकारकी ओरसे साबरमती जेलसे यरवडा भेजा गया। मैंने देखा कि बापू बाजारके ताजे फल नहीं ले रहे हैं। सन्तरे और खजूर अुनके स्वास्थ्यके लिये आवश्यक थे। लेकिन वे दोनों ही नहीं लेते थे। अुनका आहार था — बकरीका दूध, खजूर, कुछ किशमिश और अुबला हुआ साग। मुझे भय था कि अुनका स्वास्थ्य बिगड़ जायगा। जाते ही मैंने संतरोंके लिये आग्रह किया। लेकिन वे क्यों मानने लगे? अुनकी दलील थी मैं यहां स्टेट प्रिज़नर बनकर बैठा हूं और बाहर लोग कितने कष्ट भुगत रहे हैं लाठीचार्ज हो रहा है! अैसी हालतमें बाजारसे मे कीमती फल मंगवानेको जी ही नहीं होता।

मैं चिन्तामें पड़ गया। अपनी जिद तो वे छोड़ेंगे नहीं और फल खाना जरूरी है। तब किया क्या जाय? मैंने जेलवालोंसे तरह-तरहके साग मंगवाना शुरू किया और अुबालकर हम दोनों खाने लगे। फिर जेलके बगीचेसे टमाटर मंगवाये। टमाटर साग भी है और फल भी। मुझे संतोष था कि अिससे जरूरी विटामिन बापूको मिल जायेंगे। अेक दिन मुझे जेलसे कच्चा पपीता मिला वह भी मैंने अुबाल लिया। दूसरे दिन जो पपीता आया वह पका हुआ निकला। मैं बहुत खुश हुआ। आखिर कुछ तो रास्ता मिला।

मैंने बापूसे कहा — आजका साग मुझे पकाना नहीं पड़ा। सूर्य नारायणने ही पकाकर भेजा है। यह बाजारसे भी नहीं आया है। जेलके बगीचेकी सस्तीसे सस्ती चीज है।

मैंने पका हुआ पपीता अुनके सामने रखा। मेरी दलीलसे बापूको लगा कि अिसमें मेरी कुछ चालबाजी है। लेकिन वह अकाट्य भी। अिससे बापूने पपीता खाया। पका हुआ पपीता कभी मिलता और कभी नहीं मिलता। फिर भी मुझे जितना संतोष था कि कुछ न कुछ कच्चा तत्त्व अुनके पेटमें जा रहा है।

मेरी बात तो यहीं पूरी होती है, लेकिन अिसके साथ अेक परिशिष्ट भी जोड़ देना अुचित है।

समझौतेकी बातचीतके लिये पंडित मोतीलालजी जवाहरलालजीको नैनीसे यरवडा जेलमें लाया गया था। अुनके साथ सिन्धके जयराम दासजी भी थे। अुन्होंने मुझसे बापूके जेल-जीवनकी बातें पूछीं। मैंने अूपरका किस्सा भी कहा।

९१

अनशन टल गया

यह बात अुपरके किस्सेसे कुछ पहलेकी होगी। अुन दिनों जे० सी० कुमारप्पा 'यंग अिण्डिया' का सम्पादन करते थे। जेलमें हमें 'यंग अिण्डिया' मिलता था। फिर जब सरकारने अुसे बन्द किया और कुमारप्पा साअिक्लोस्टाअिल पर या टाअिपराअिटर पर पत्र निकालने लगे तो सरकारकी गफलतसे अुसके भी दो-तीन अंक हमारे पास आ गये!! लेकिन बादमें मिलने बन्द हो गये।

अिन्हीं अंकोंमें समाचार था कि जब लोगोंको गिरफ्तार करके जेलमें बन्द करनेके बाद अुनपर लाठीचार्ज हुआ।

पढ़ते ही बापू बेचैन हो गये। शामको आंगनमें टहलते-टहलते कहने लगे — यह तो मुझसे नहीं सहा जाता। मैं वाअिसरॉयको अेक खत लिखकर अनशन करना चाहता हूं। जब मैंने पूछा कि कितने दिनका? तो कहने लगे — दिनका सवाल नहीं है। यह सब मुझसे जरा भी बरदाश्त नहीं हो रहा है।

मैं चिन्तामें पड़ा। मुझे अुनका यह विचार पसन्द नहीं आया। मैं बोला — बापूजी आप कोअी निश्चय करें, अुसके विरुद्ध बोलनेकी न मेरी हिम्मत है न अिच्छा। किन्तु आप कुछ भी निश्चय करें, अुसके पहले मेरी दृष्टि आपके सामने रखनेकी मुझे अिजाजत दीजिये। आप यह तो नहीं मानेंगे कि मैं मोहवश होकर आपको अैसे कामसे निवृत्त करनेका प्रयत्न करूंगा।

मेरा कहना यही है कि रक्तकी दीक्षा मिले बिना देश मजबूत नहीं होगा। सन् १८५७ के गदरके बाद राजनीतिकी बिना पर हमने बहुत कम मार खायी है। आजादीकी लड़ाअीमें सिर फूटते हैं, गोलियां चलती हैं। ये सब बातें करीब-करीब हम भूल-से गये हैं। अिसलिअे चोटें हमारे लिअे हौवा बन गयी हैं। ये लाठियां राष्ट्रको मजबूत

बना रखी है। हम तो किसीको मारते नहीं। हम लोगोंका ही खून बहे, क्या यह ठीक नहीं है? जिससे लाल रंग देखनेकी हमें आदत हो रही है। और भी अेक बात। आज राष्ट्र आपके आधार पर ही सब शमित किया रहा है। आपके बलिदानसे अगर जिस वक्त राष्ट्रमें आजादीका जोश पागलपन तक बढ़ जाये तो अुस बलिदानका भी मैं स्वागत करूंगा। लेकिन राष्ट्र तो आज अेक धागेकी तारका हो रहा है। मुझे डर है कि जिस वक्त आपकी देह छूट जाय ता सारा राष्ट्र स्तंभित होकर बैठ जायगा। जिसलिये आपको सब कुछ सह कर हमें अपना खून बहानेका मौका देना चाहिये।

मेरे कहनेका बापू पर क्या असर हुआ सो तो मैं नहीं जानता। लेकिन वे गम्भीर हो गये, कुछ बोले नहीं। जिसके बाद फिर अुन्होंने अनशनकी बात नहीं छेड़ी।

९३

यह भी अपरिग्रहमें आता है

कुछ दिन बाद बापूने घामके घूमनेका समय बढ़ा दिया। मैंने कहा — क्यों बापूजी पहले तो आप आधा घंटा ही घूमते थे। अब करीब अेक घंटा घूमने लगे। अिधर सुबह भी आप काफी घूम लेते हैं। अिसका स्वास्थ्य पर कहीं बुरा असर तो न हो? बापूने जवाब दिया — मुझे अन्दरसे कुछ ज्यादा शक्ति मालूम होने लगी है। अिसलिअे जान-बूझकर मैंने घूमनेका समय बढ़ाया है। घूमना ब्रह्मचर्य व्रतके पालनका अेक अंग है। जब मैंने पूछा यह कैसे? तो कहने लगे — आदमीको रोज सुबह जो शक्ति दिन भर काम करनेके लिअे दी जाती है, वह मुझे सोनेके समय तक खतम कर डालनी चाहिये। यह है अपरिग्रहका स्वरूप। अगर पूरी शक्ति श्रद्धापूर्वक खर्च न की जाय तो बची हुअी शक्ति विकारका रूप लेगी। जब हमें रोजके लिअे आवश्यक शक्ति मिल ही जाती है, तो आजकी शक्ति क्यों बचायी जाय? शरीरमें जो वीर्य पैदा होता है, अुसका परिश्रम द्वारा पसीनेमें रूपान्तर कर दिया जाय तो रातको नींद अच्छी आती है और विकारकी सम्भावना कम रहती है। अिसलिअे अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य दोनोंकी दृष्टिसे खूब परिश्रम करना ही चाहिये। अितना कहकर जरा ठहरे और फिर बोले — दक्षिण अफ्रीकामें जब मुझमें ४ मील घूमनेकी शक्ति थी तब कभी १९ मील नहीं घूमा। काफी खाता था और खूब परिश्रम करता था।

*   *   *

अेक दिन बापू आश्रममें कहने लगे — अगर केवल अपरिग्रह शब्दका ही ख्याल किया जाय तो अुसका यह अर्थ नहीं कि मनुष्य गरीबीमें रहे। हम लोग बड़े परिग्रही हैं। हमारी तुलनामें गोरे लोग ज्यादा अपरिग्रही हैं। आज सौ भी कमायें तो महीनेके अंत तक वे सारी कमाअी खर्च कर डालते हैं। आगे मेरा क्या होगा मेरे बच्चोंका क्या होगा अैसी चिन्ता वे नहीं करते। अैसी चिन्ता निरी नास्तिकता

दूँ तो क्या करूँ? अिस पर बापूने कहा — मैं तुम्हें सिखाअूँगा। नहीं तो मैं पूनियाँ बना दूँगा। मैंने सीखना ही पसन्द किया, लेकिन मेरे मनमें डर तो था ही।

मेरी सब पूनियाँ पस्तमभाभीको भेज दी गयीं।

अब बापूने पासके कमरेमें सब सरंजाम सजाया। मुझे धुननेकी कला सिखायी। मैं थोड़े ही दिनोंमें तैयार हो गया।

लेकिन अितनेमें बारिश आ गयी। हवाकी नमीके कारण तांत गीली हो जाती थी। हमने अिलाज सोचा — धूप निकले तो पिंजन और रूअीको धूपमें रखा जाय। मैंने अैसा किया भी। लेकिन बारिश खूब होती थी। रोज धूप नहीं निकलती थी। फिर हमें सूझा कि हमारे आश्रममें पावरोटीकी भट्ठी है, जिसे मेंको-विकित (नीम-मोरे) केदी कडक चलाते हैं। मैं शामको अपनी पिंजन और रूअी भट्ठीके पास रख आने लगा। जिससे तांत तो सूखकर खूब तन जाती लेकिन सुबह सूखे हुअे तन्तुओंको कैसे बैठाया जाय? फिर अुपाय सूझा कि अुस पर लसुने नीमके पत्ते घिसे जायें।

अेक दिन बापूने देखा कि मैं चार-पाँच पत्तोंके लिअे पूरी टहनी तोड़ लेता हूँ। कहने लगे — यह तो हिंसा है। और कोअी चाहे न समझे लेकिन तुम तो आश्रमवासी समझ सकते हो। ये चार पत्ते भी हमें पेड़से क्षमा माँगकर ही तोड़ने चाहियें। लेकिन तुम तो पूरी टहनी तोड़ लाते हो!

कर लेनेके बाद बापू कहने लगे — अब जिसका कूचीवाला भाग काट डालो और फिर मुझे दातुनकी नयी कूची बनाओ। मैंने कहा — यहां तो रोज ताजी दातुन मिल सकेगी। बापूने कहा — सो तो मैं जानता हूं। लेकिन हमें अुसका अधिकार नहीं है। जब तक अेक दातुन बिलकुल सूख न जाय अुसे हम फेंक कैसे सकते हैं? दूसरे दिनसे वैसा ही करने लगा। कभी-कभी कूची अच्छी नहीं बनती। बापूके थोड़ेसे दांतों और मसूड़ोंको जरा भी तकलीफ हो यह मैं कैसे सह सकता? लेकिन जब तक दातुन बिलकुल छोटी न हो जाती या सूख न जाती तब तक नयी काटनेकी मुझे अिजाजत नहीं थी।

जिस तरह बापू जेलमें आदर्श कैदीकी तरह ही नहीं रहते थे बल्कि आदर्श अहिंसा-व्रतधारी भी थे।

१६

लियनका किस्सा

यरवडा जेलमें अेक मि० लियन आयरिशमैन था। रोज शामको हमारी खबर पूछने आया करता था। आकर बैठता तो कुछ न कुछ बातें होती ही। अेक दिन बापूसे कहने लगा — मैं गुजराती सीखना चाहता हूं। बापूने कहा — अच्छी बात है। वह रोज शामको बापूसे गुजराती बालपोथी पढ़ने लगा और बापू भी अुसे समय देकर प्रेमसे पढ़ाने लगे।

अेक दिन अुसके जानेके बाद बापू मुझसे कहने लगे — मैं जानता हूं कि मेरी अपेक्षा तुम अुसे अच्छी तरह पढ़ा सकोगे और मेरा समय भी बच जायगा। लेकिन अुसकी दिलचस्पी मुझसे ही पढ़नेमें है।

रोजाना वह सुबह आने लगा। अेक दिन वह नहीं आया। हमें कुछ आश्चर्य हुआ। मैंने तलाश की। कारण मालूम हुआ।

दूँ तो क्या करूँ? अिस पर बापूने कहा — मैं तुम्हें सिखाअूँगा। नहीं तो मैं पूनियाँ बना दूँगा। मैंने सीखना ही पसन्द किया लेकिन मेरे मनमें डर तो था ही।

मेरी सब पूनियाँ बल्लभभाअीको भेज दी गयीं।

अब बापूने पासके कमरेमें सब सरंजाम सजाया। मुझे धुनकनेकी कला सिखायी। मैं थोड़े ही दिनोंमें तैयार हो गया।

लेकिन अितनेमें बारिश आ गयी। हवाकी नमीके कारण तांत गीली हो जाती थी। हमने अिलाज सोचा धूप निकले तो पिंजन और तांतको धूपमें रखा जाय। मैंने अैसा किया भी। लेकिन बारिश खूब होती थी। रोज धूप नहीं निकलती थी। फिर हमें सूझा कि हमारे आश्रम पावरोटीकी भट्ठी है, जिसे अेंग्लो-अिण्डियन (गोम-गोरे) कैसे लड़के चलाते हैं। मैं शामको अपनी पिंजन और तांती भट्ठीके पास रख आने लगा। जिससे तांत तो सूखकर खूब तन जाती लेकिन अुसके मुड़े हुअे तन्तुओंको कैसे बैठाया जाय? फिर अुपाय सूझा कि अुस पर कडुअे नीमके पत्ते घिसे जायँ।

अेक दिन बापूने देखा कि मैं चार-पाँच पत्तोंके लिअे पूरी टहनी तोड़ लेता हूँ। कहने लगे — यह तो हिंसा है। और लोग भले न समझें लेकिन तुम तो आसानीसे समझ सकते हो। ये चार पत्ते भी हमें पेड़से क्षमा माँगकर ही तोड़ने चाहिये। लेकिन तुम तो पूरी टहनी तोड़ लाते हो।

दूसरे दिन मैंने सुधार किया। मैं डरा तो था ही। अब सिर्फ पेड़से चार-पाँच पत्ते ही तोड़ने लगा। मैंने अेक बात और भी की। जिस दिन भट्ठीका लाभ नहीं मिलता अुस दिन तांतको नमीसे बचानेके लिअे अुस पर मोमबत्ती घिसने लगा। अुसका असर अच्छा हुआ और बापू प्रसन्न हो गये।

अितनेमें बाहरसे तांतका मिलना बन्द हो गया। मैंने कहा — बापूजी यहाँ नीमके पेड़ बहुत हैं। मैं आपको रोज अच्छी तांत बनाकर दिया करूँगा। बापूने मंजूर किया। दूसरे दिन बसुन लाया और अुसका अेक छोर बट कर अच्छी सूखी बनायी। मुझे अिसमें माल

चार दिनोंके बाद बापू कहने लगे — अब सिसका कूचीवाला भाग काट डालो और फिर सुसी दातुनकी नयी कूची बनाओ। मैंने कहा — यहां तो रोज ताजी दातुन मिल सकेगी। बापूने कहा — सो तो मैं जानता हूं। लेकिन हमें सुसका अधिकार नहीं है। जब तक सेक दातुन बिलकुल सूख न जाय सुसे हम फेंक कैसे सकते हैं? दूसरे दिनसे वैसा ही करने लगा। कभी-कभी कूची अच्छी नहीं बनती। बापूके थोड़ेसे दांतों और मसूड़ोंको जरा भी तकलीफ हो यह मैं कैसे सह सकता? लेकिन जब तक दातुन बिलकुल छोटी न हो जाती या सूख न जाती तब तक नयी काटनेकी मुझे सिजाजत नहीं थी।

सिस तरह बापू जेलमें आदर्श कैदीकी तरह ही नहीं रहते थे बल्कि आदर्श अहिंसा-व्रतधारी भी थे।

९६

क्विनका किस्सा

यरवदा जेलका जेलर मि. क्विन आयरिशमैन था। रोज शामको हमारी खबर पूछने आया करता था। आकर बैठता तो कुछ न कुछ बातें होती ही। सेक दिन बापूसे कहने लगा — मैं गुजराती सीखना चाहता हूं। बापूने कहा — अच्छी बात है। वह रोज शामको बापूसे गुजराती बालपोथी पढ़ने लगा और बापू भी अपना समय देकर प्रेमसे पढ़ाने लगे।

सेक दिन सुसके जानेके बाद बापू मुझे कहने लगे — मैं जानता हूं कि मेरी अपेक्षा तुम सिसे अच्छी तरह पढ़ा सकोगे और मेरा समय भी बच जायगा। लेकिन सिसकी सिच्छा मुझसे ही पढ़नेकी है।

बादमें वह दूसरे आने लगा। सेक दिन वह नहीं आया। हमें कुछ आश्चर्य हुआ। मैंने तलाश की। कारण मालूम हुआ।

दूसरे दिन भोजनके बाद मैंने बापूसे कहा — मि॰ विल्स कल क्यों नहीं आया, अुसका कारण मैं समझ गया। कल सुबह यहाँ अेक कैदीको फाँसी दी गयी थी। अुसे वहाँ जाना था, अिसलिअे यहाँ नहीं आया।

मेरी बात सुनते ही बापू अस्वस्थ हो गये। अुनका चेहरा बदल गया। कहने लगे — अैसा लगता है कि खाया हुआ अन्न अभी बाहर निकल आयेगा।

बापू जानते थे कि जहाँ हम रहते हैं, वहाँसे फाँसीकी जगह नजदीक ही है। अपने नजदीक ही कल अेक आदमीको फाँसी दी गयी, यह सुनते ही अुनके मनमें अुसका चित्र खड़ा हो गया और वे अैसे अस्वस्थ हुअे कि मैं घबरा गया!

अेक दिन मि॰ विल्सने बापूसे कहा — गुजराती लिखावट मैं बार-बार पढ़ सकूँ, अिसलिअे आप कोअी वाक्य मुझे अेक कागज पर लिख दीजिये। बापूने लिख दिया — कैदियों पर प्रेम करो और अगर किसी कारणसे मनमें गुस्सा आ जाय तो मन मारकर

१७

भक्तोंका प्रसाद

शायद १९३४की बात है। बापूके हरिजन-दौरेके आखिरी दिन थे। बापू सिंध गये थे। मैं अुसी समय हैदराबाद जेलसे छूटा था। अिसलिये मुझे साथ ले लिया।

देखता हूँ तो बापूके पांव पर बहुतसे खरोंच हैं, अुनसे लहू निकल रहा है। जब पूछा कि यह क्या है, तो पता चला कि महात्माके चरणस्पर्शसे पुनीत होनेवाले भक्तोंकी अंगुलियोंके नखचिह्न हैं!! मनुष्यकी अिस भक्तिके सम्बन्धमें मुझे विचार आने लगे। मनुष्य अगर और किसीको परेशान करे तो सजाका अधिकारी होता है। पर महात्मा तो ठहरे जनताके अुपभोगकी चीज! अीसा मसीहको भी किसी तरह सूली पर चढ़ाकर ही तो दुनियाने अपना प्रेम दिखाया था! महात्माके चरणोंका अैसा स्पर्श करनेसे स्वर्गका पास टिकट मिलता होगा!

अुस दिन रातको मैंने गरम पानीसे बापूके पांव धोये, वैसलीन लगाया और दूसरे दिनसे मैं खुद अुनका स्वयं-नियुक्त चरण-सेवक ही नहीं किन्तु चरण-रक्षक भी बना। मैं किसीको बापूके पांवोंका स्पर्श नहीं करने देता था।

अिस सेवाके बदलेमें जनताकी ओरसे मुझे गालियोंका पूरा-पूरा पुरस्कार मिलता था।

नींदका अुपवास

सन् १९३६–३७ की बात होगी। अुन दिनों बापू वर्धामें मगनवाडीमें रहते थे। मैं बोरगांव रहता था। बापू खूब काम करते थे। आये हुअे पत्रोंका जवाब लिखनेका समय ही नहीं मिलता था। अिसलिअे रातको दो-तीन बजे अुठकर लिखते थे। मैंने यह बात सुनी तो मुझसे न रहा गया। युक्तिसे बात छेड़ी — "बापूजी आपने दक्षिण अफ्रीकामें अेक किताब लिखी है आरोग्य विषे सामान्य ज्ञान। अुसमें सब बातें आ गयी हैं — आहार और दवाओंसे लेकर स्त्री-पुरुष-संबंध तक। लेकिन अेक बात रह गयी।" बापूने आश्चर्यसे पूछा — कौनसी? मैंने कहा — नींदके बारेमें अुसमें अेक भी प्रकरण नहीं है। बापू कहने लगे — नींदके बारेमें लिखने जैसा क्या है? मनुष्यको नींद आती है, तब वह सोता है। अिससे अधिक क्या लिख सकते हैं? मैंने कहा — यही तो बात है। आप समय पर खाते हैं नाप-तौल कर खाते हैं। दिनभरका आपका काम बंधा हुआ रहता है। जितने लोगोंके पत्र आप पर आते हैं, सबको आप राजी कर लेते हैं। कोई पत्र लिखता है, तो अुसे जवाब भी मिल जाता है। लेकिन अत्याचार होता है केवल नींद पर। काम बढ़ा ता कमी आती है बेचारी नींद! यह कैसे चलेगा? आहारका अुपवास अुतना नुकसान नहीं करेगी। लेकिन नींदके अुपवासके लिअे तो सजा भुगतनी ही पड़ेगी।

मुझे खयाल था कि मैं अपनी मर्यादा छोड़कर बोल रहा हूं। लेकिन मैं भी क्या करता? रहा न गया अिसलिअे कह डाला।

बापू गंभीर होकर बोले — तुम्हारी बातका अर्थ यह हुआ कि मैं गीताधर्मी नहीं हूं। भगवान् शरीर जितना काम देता है, अुतना ही काम मैं अुसमें लेता हूं। मैं नहीं मानता कि जो काम मैं कर रहा हूं वह मेरा काम है। वह तो भगवानका है। अुसकी

मिला मुझे है। मैं सिर्फ अपने हिस्सेका काम करनेके लिये ही बंधा हुआ हूं। अुससे ज्यादा करूं तो वह अभिमानकी बात होगी।

कुछ दिन गये। अेक दिन मैं गोरगांवसे सेवाग्राम आया। महादेवभाओीने मुझे बतलाया कि आज बापूकी तबीयत अच्छी नहीं है। सोये हैं। सुबह अुठते ही अुन्होंने कहा — आज मेरी तबीयत अच्छी नहीं है, रक्तका दबाव बढ़ा होगा। डॉक्टरको बुला लो तो अच्छा हो। महादेवभाओी आगे कहने लगे — आज तक कभी बापूने अपनी ओरसे डॉक्टरको बुलानेके लिये नहीं कहा था।

मैं जान-बूझकर बापूसे मिलने नहीं गया। शामकी प्रार्थनाके बाद बापूने अपनी तबीयतके बारेमें ही कहना शुरू किया। प्रारम्भ था — मैं पूरा गीताधर्मी नहीं हूं।

मैं तो पुरानी बात भूल गया था। लेकिन अिस वाक्यसे मुझे अुस दिनका सवाल याद आ गया। मैंने मनमें सोचा कि मैं बापूसे कुछ कहूं अुसके पहले ही अुन्होंने मेरा मुंह बन्द कर दिया।

तबसे बापूने गीताका फर्ज बराबर अदा करनेका नियम बना लिया।

१०१

प्रसंग आने पर पसेका सवाल नहीं

चि० चन्दनकी शादी मेरे लड़केके साथ तय हुआी थी। वह लीवरपूलमें पढ़ता था और चन्दन अपनी अमेरिकाकी पढ़ाओी पूरी करके हिन्दुस्तान लौटी थी। यह चर्चा आयी। बापू कहने लगे — यह चन्दन अंग्रेजी सीखकर विदुषी बन आयी है। यह किस काम की? अिसे हिन्दी तो आती ही नहीं। शादी होनेके बाद क्या पढ़ेगी? अभीसे अिसे हिन्दी सिखानेका कुछ प्रबन्ध करना चाहिये।

हम दोनोंने तय किया कि अुसे देहरादून कन्या गुरुकुलमें भेज दें। पूज्य बाको वहां अुत्सवके निमित्तसे जाना ही था। मुझे भी अुन्होंने बुलाया था। हम चन्दनको साथ ले गये। वहांके लोगोंने अुसे हिन्दी पढ़ानेका प्रबन्ध श्री चमेली शास्त्रीजीसे किया और बदलेमें कुछ

पढ़ानेका काम भी किया। अुसने बोस्टन विश्वविद्यालयसे सोशियालोजी (समाजशास्त्र) में अेम० अे० पास किया था।

अितनेमें बापूका राजकोटका सत्याग्रह शुरू हुआ। चन्दन काठियावाड़की लड़की ठहरी। अुससे कैसे रहा जा सकता था? वह सत्याग्रहमें शरीक होनेके लिअे देहरादून छोड़कर राजकोट गयी। अितनेमें समझौता होकर सत्याग्रह स्थगित हो गया और बापू वर्धा आ गये। चन्दन राजकोटमें कुछ बीमार हो गयी।

वर्धामें चन्दनका पत्र आया कि मैं बीमार हूँ। अुस दिन बापू वर्धासे बम्बअी जा रहे थे। मैं बापूको पहुँचाने स्टेशन पर गया था। मैंने चन्दनके बीमार होनेकी बात सुनाअी। बापू तफसील पूछने लगे। मैंने चन्दनका पत्र ही अुनके हाथमें दे दिया। स्टेशन पर भीड़ होनेके कारण वे अुसे पढ़ न सके साथ ही ले गये।

दूसरे दिन सुबह बम्बअी पहुँचनेके पहले ही अुन्होंने चन्दनको अेक तार भेजा जिसमें क्या दवा करनी चाहिये किन बातोंकी सावधानी रखनी चाहिये सब कुछ लिखा था। और तुरन्त अहमदाबाद जाकर अमुक वैद्यकी दवा लेनेकी सूचना भी की थी। तार पाँच –[illegible] रुपयेका था।

अैसे काममें चाहे जितना खर्च हो बापूको संकोच नहीं था। और जरा कंजूसी करने बैठें वहाँ तो पाअी पाअीका हिसाब करते।